दीना-भदरी

जोगियानगरक दू भाइक दुखान्त वीरगाथा

गजेन्द्र ठाकुर

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : माटिक दू बेटा

नेपालक मिथिलांचलमे एकटा गाम अछि — जोगियानगर। ओतुक्का माटि आनो गाम जकाँ माटिये छै, मुदा ओहि माटिमे दूटा नाम एहन गड़ल अछि जे आइयो कोदारिक चोट पड़िते बाजि उठैत अछि — दीना, आ भदरी।

ई खिस्सा राजा-रानीक नहि थिक। ई खिस्सा दू भाइक थिक जे मुसहर छलाह, बोनिहार छलाह, आ जिनकर बाँहिमे एतेक बल छल जे धरती हुनका देखि कऽ अपने नरम भऽ जाइत छलि। मुदा जतय बल होइत अछि, ओतय ओकरा तोड़बाक षड्यन्त्र सेहो होइत अछि। तेँ ई वीरगाथा थिक — आ दुखान्त सेहो।

अध्याय १ : पाँच-पाँच मोनक कोदारि

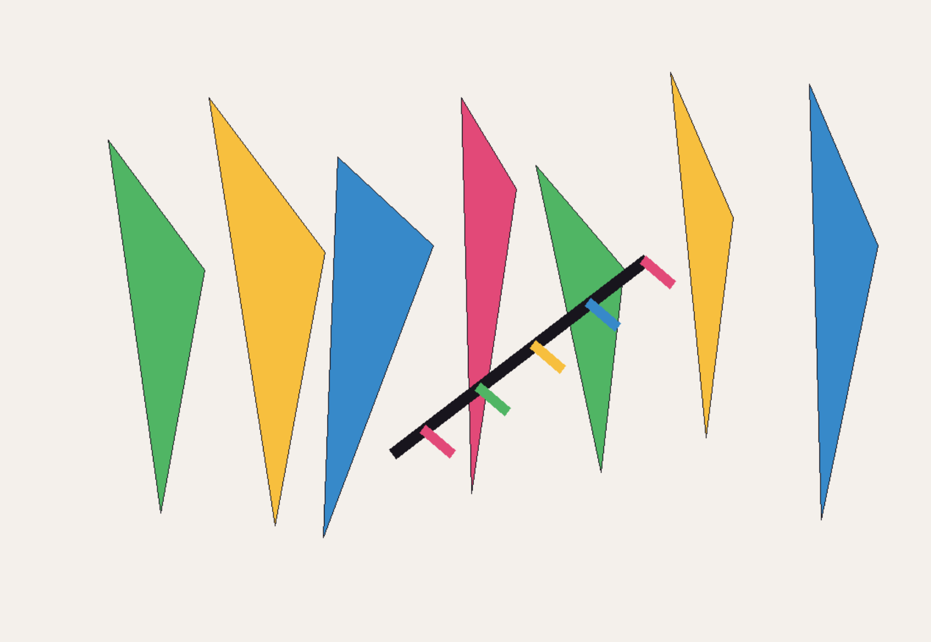

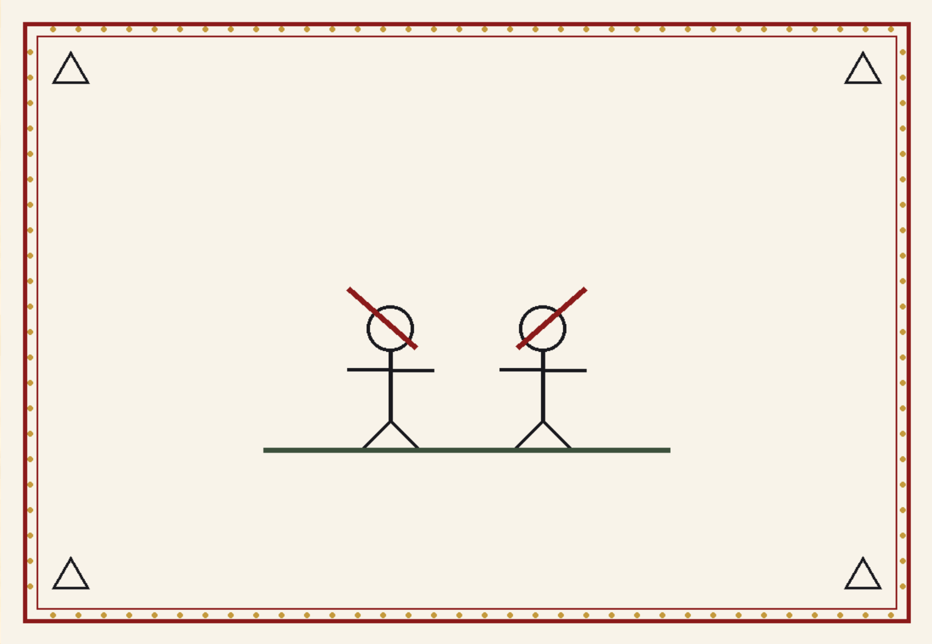

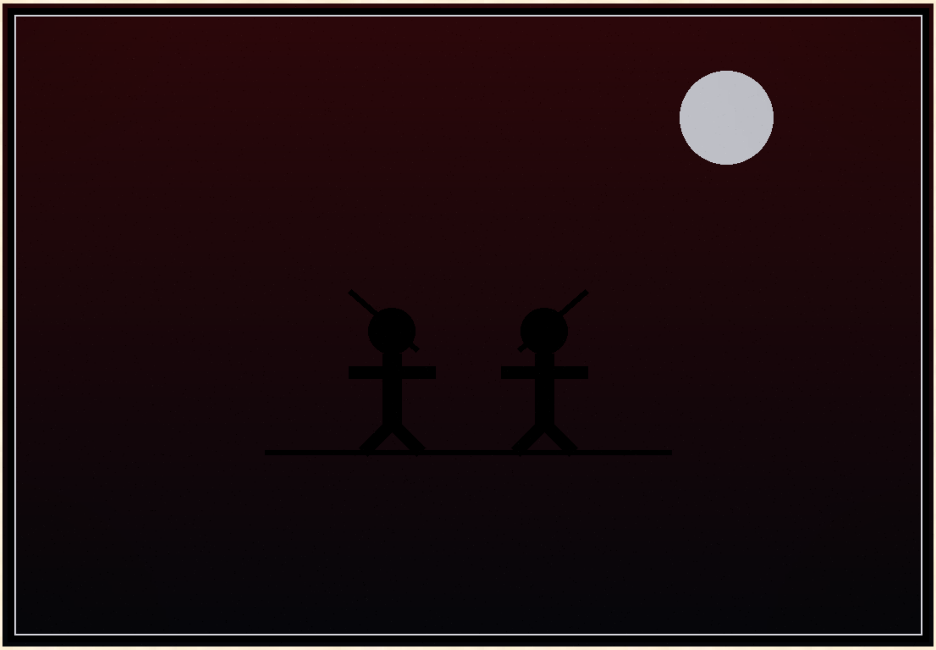

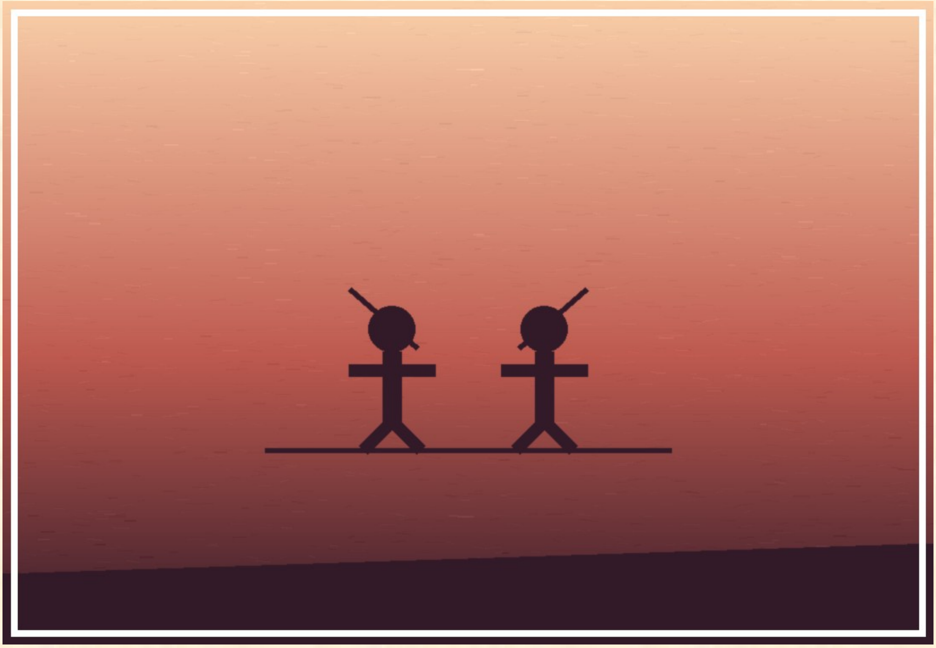

चित्र 1

जोगियानगरमे रहै छलाह दू भाइ — दीना आ भदरी। मुसहर जातिक, खेती करैत। घरमे ने धन, ने धरती — छल त' खाली देह, आ देहमे एहन बल जकर चर्च कोसो-कोस धरि पसरल छल।

दुनू भाइ लग पाँच-पाँच मोनक कोदारि छलनि। पाँच मोन — माने एतेक भारी जे आन लोक ओकरा उठाबय त' कान्ह लचकि जाए। मुदा दीना-भदरीक हाथमे ओ कोदारि खेलौना जकाँ नाचैत छल। भोरे सूर्यक संग खेतमे उतरथि, आ साँझ धरि बिगहा भरि जमीन तामि दैथि — दिन भरिमे बिगहा भरि!

जे देखए से दाँत तर आंगुर दाबए। लोक कहए, 'ऐ दुनू भाइक बाँहिमे बसहा बरदक बल छै।' मुदा दीना-भदरी बलक घमण्ड नहि करथि। बल हुनका लेल रोटी छल, हथियार नहि — जाधरि केओ ओकरा हथियार बनबए पर विवश नहि करए।

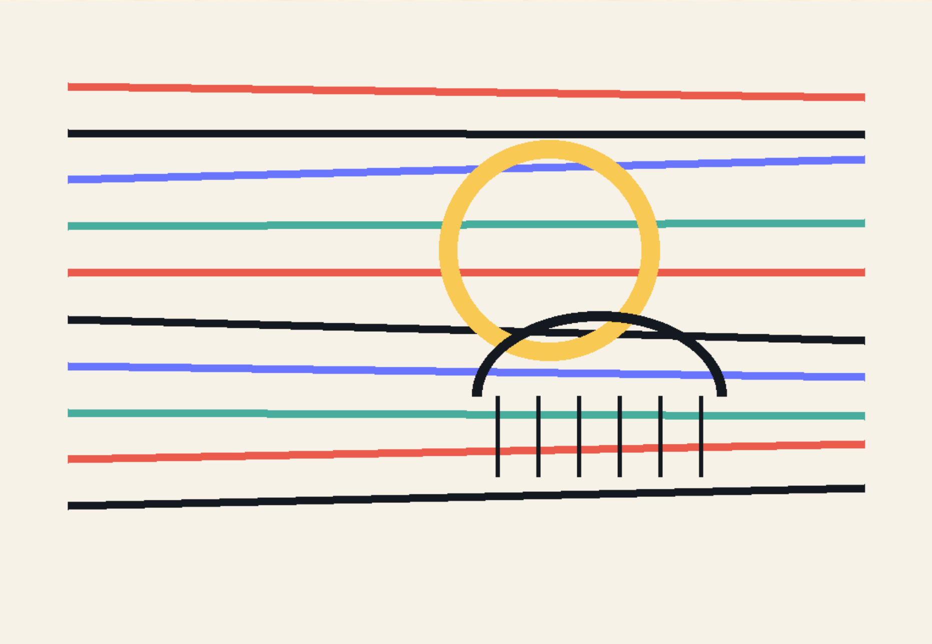

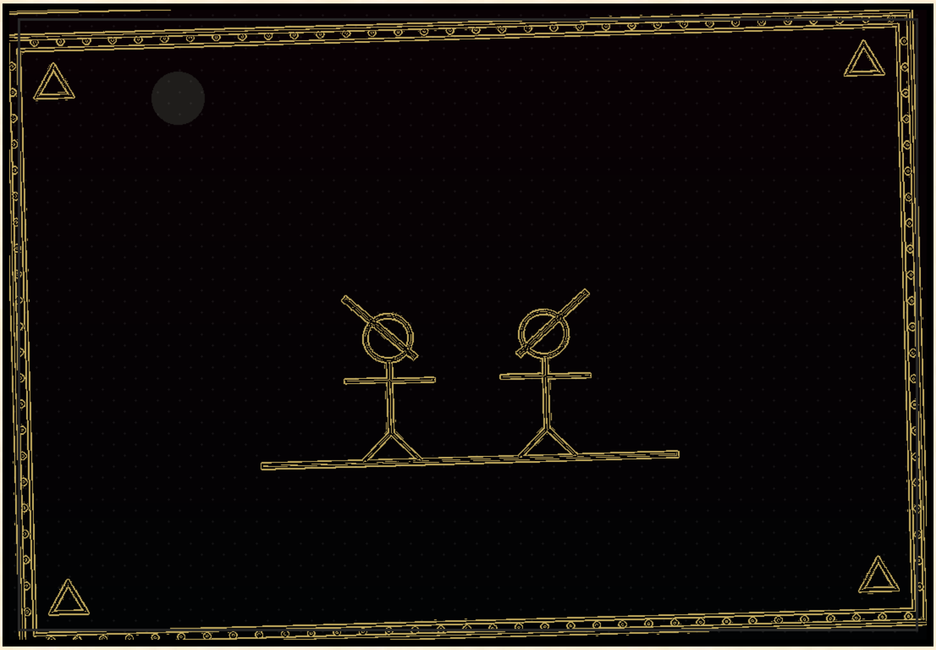

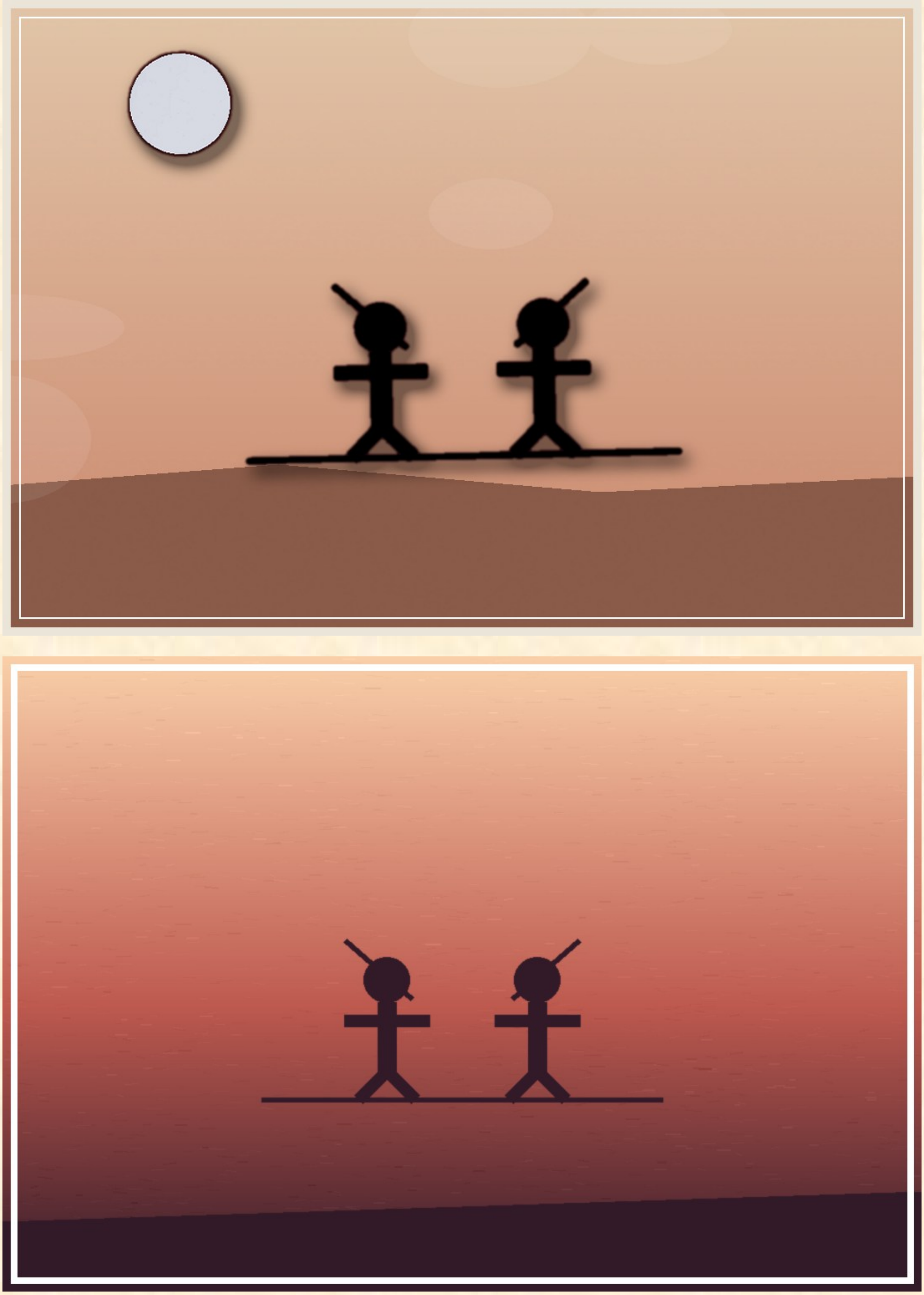

चित्र 2

साँझखन दुनू भाइ माए निरसो लग बैसथि। बूढ़ माए बेटा सभक हाथक ठेला देखि कहथि, 'एतेक खटैत किए छँह रौ?' दीना हँसथि, 'माए, माटि हमरा सभक माए थिक। एकर सेवामे थाकब केहन?' — ओहि घरमे धन नहि छल, मुदा धरम भरल छल।

आ यएह धरम, यएह बल, यएह नाम — एक दिन कालक कान धरि पहुँचि गेल। कारण नामक एकटा दोष होइत छै: ओ जतबा दूर जाइत अछि, ततबे दूरसँ शत्रु सेहो अनैत अछि।

अध्याय २ : जाँजरक जमीन्दार

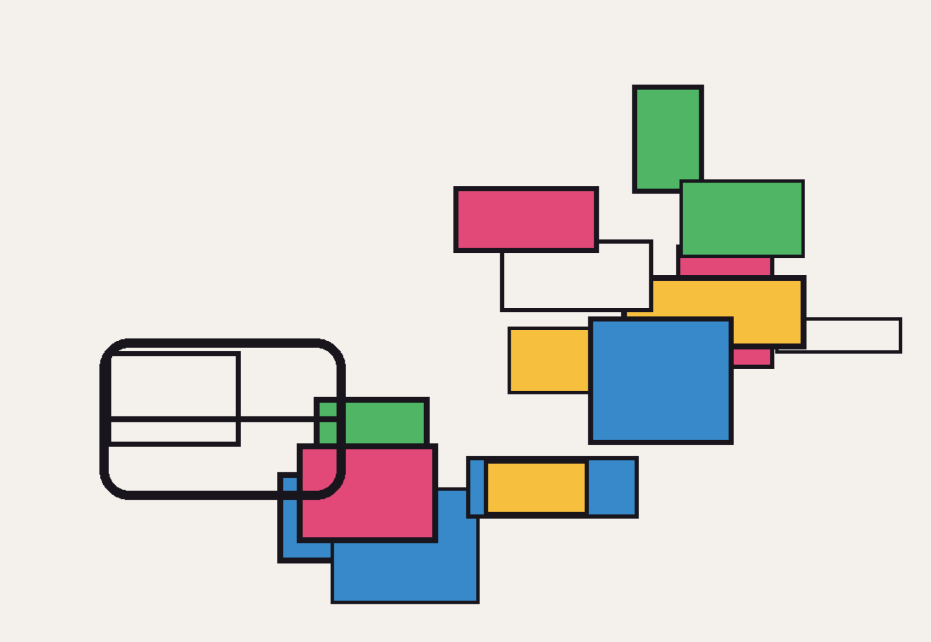

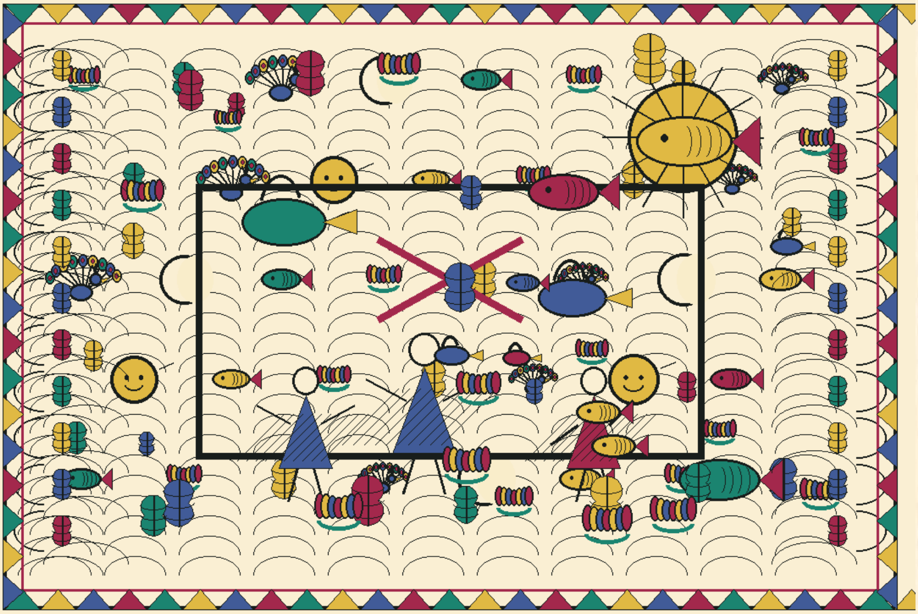

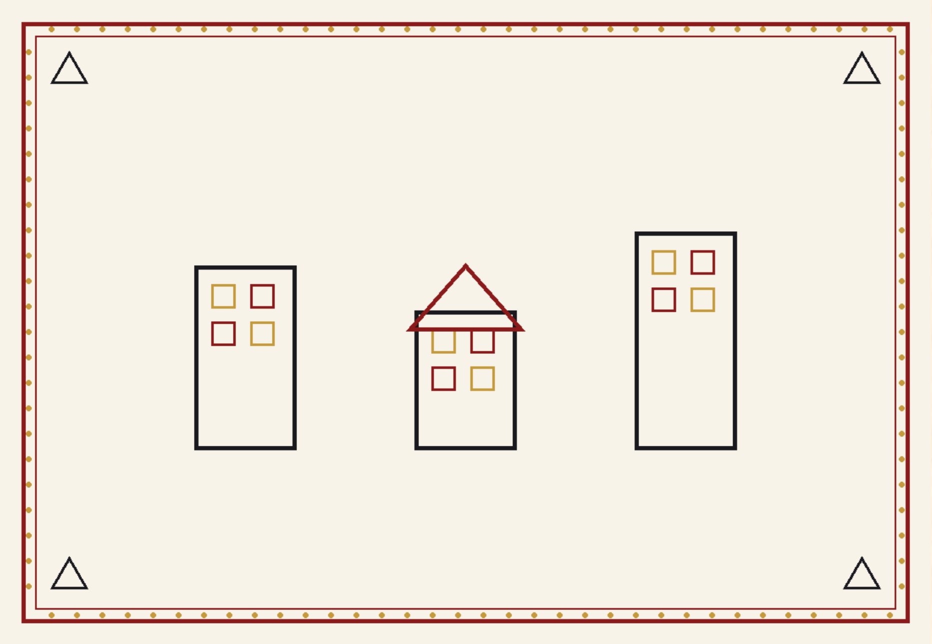

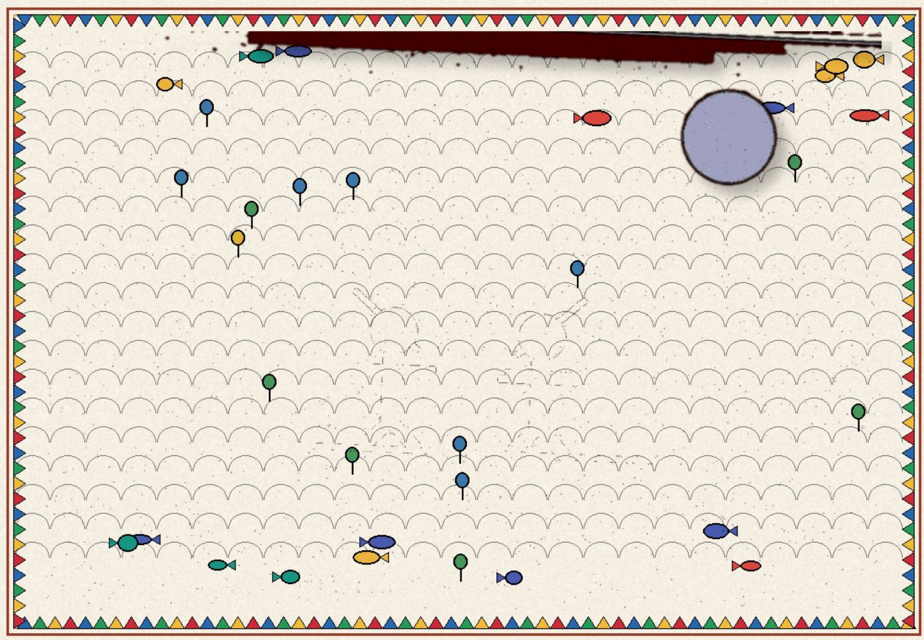

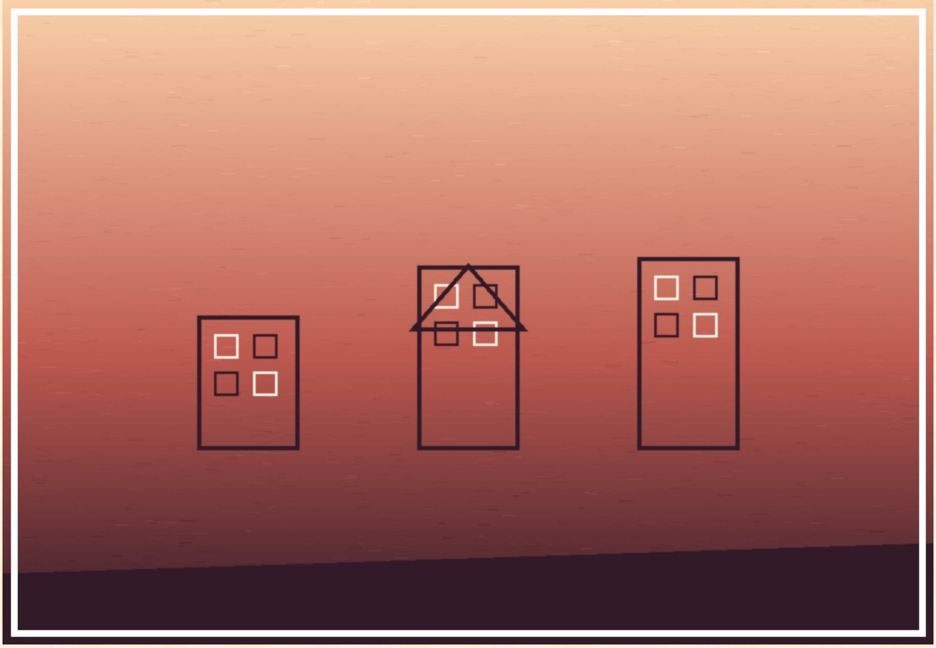

चित्र 3

जोगियानगरक बगलमे छल जाँजर गाम। ओतुक्का जमीन्दार छल कनक सिंह, आ ओकर पत्नी छलि बुधनी। धन दुनू लग अथाह छल, मुदा धनसँ बेसी छल दर्प — आ दर्पसँ बेसी छल क्रूरता।

बड़ बदमाश छल दुनू। बोनिहारकेँ ओ सभ मनुक्खे नहि बुझैत छल। काज पूरा लिअए, बोनि आधो नहि दिअए; कियो बाजए त' कोड़ाक मारि। जाँजरक खेत सभमे अन्न उपजैत छल, मुदा ओहि अन्नक सभ दानामे ककरो ने ककरो नोर मिलल छल।

बोनिहार सभ चुप छल — कारण बाजए के? जकर पेट दोसराक मुट्ठीमे हो, ओकर जीह अपने बन्हा जाइत छै। मुदा चुप्पीक सेहो एकटा सीमा होइत छै, आ ओ सीमा ओहि दिन लग आबि गेल जहिया कनक सिंहक कानमे दू भाइक नाम पड़ल।

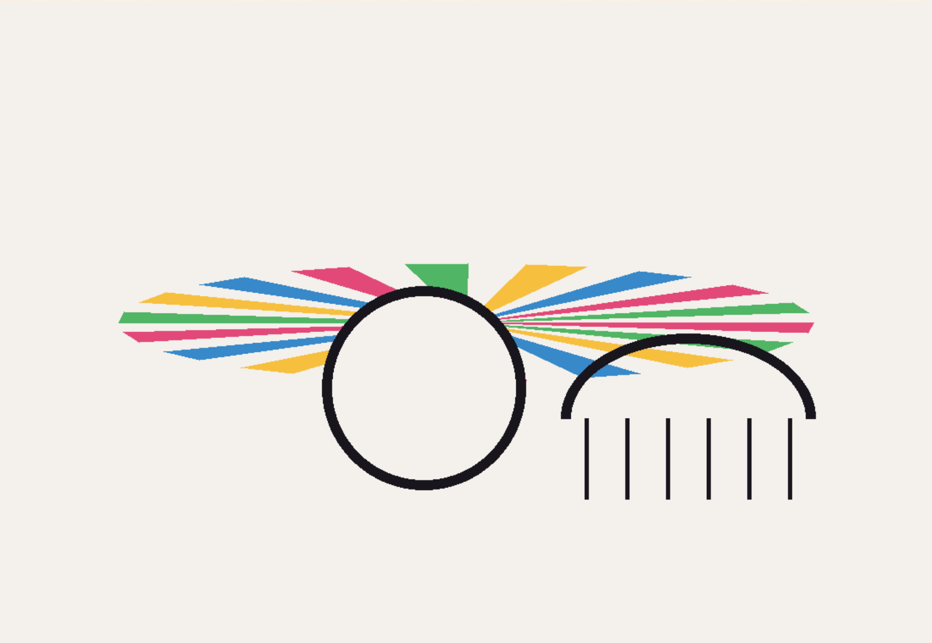

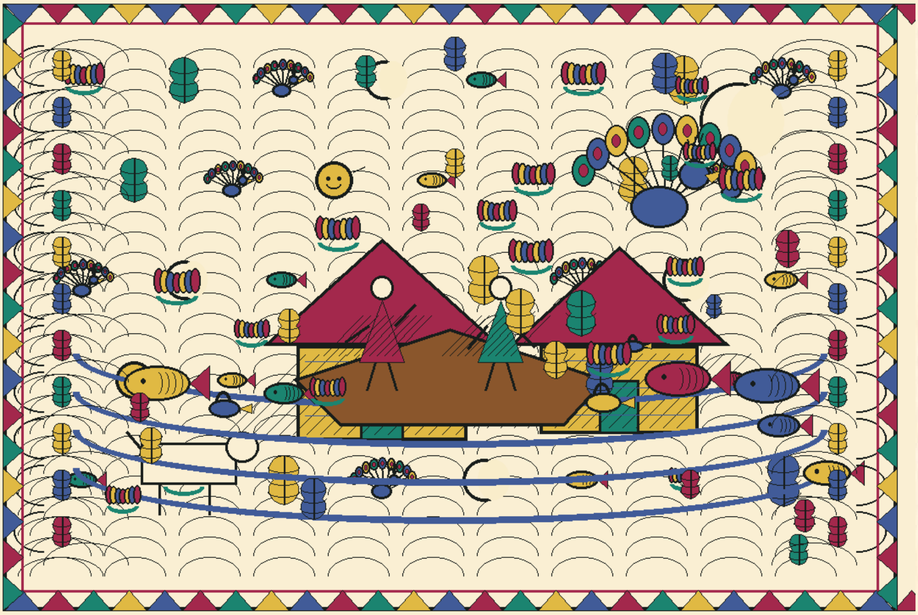

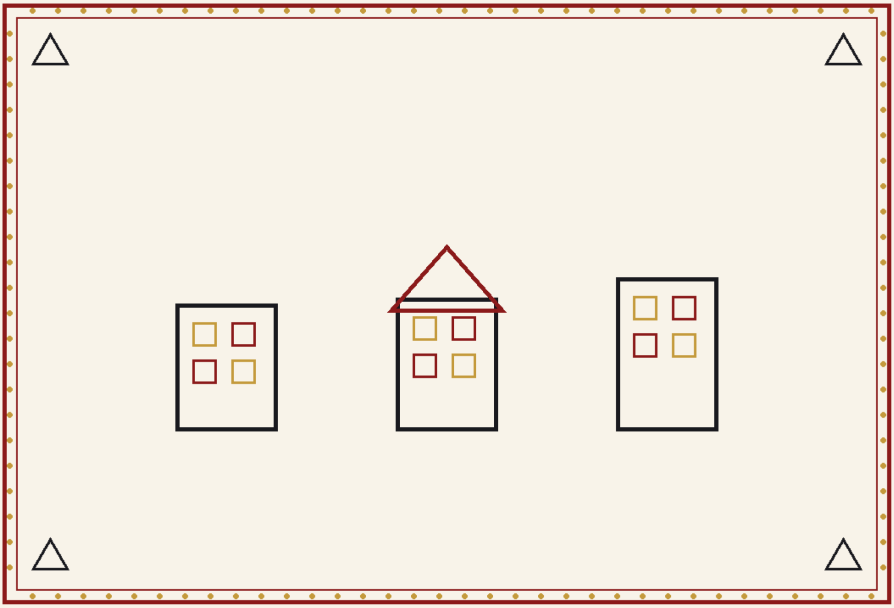

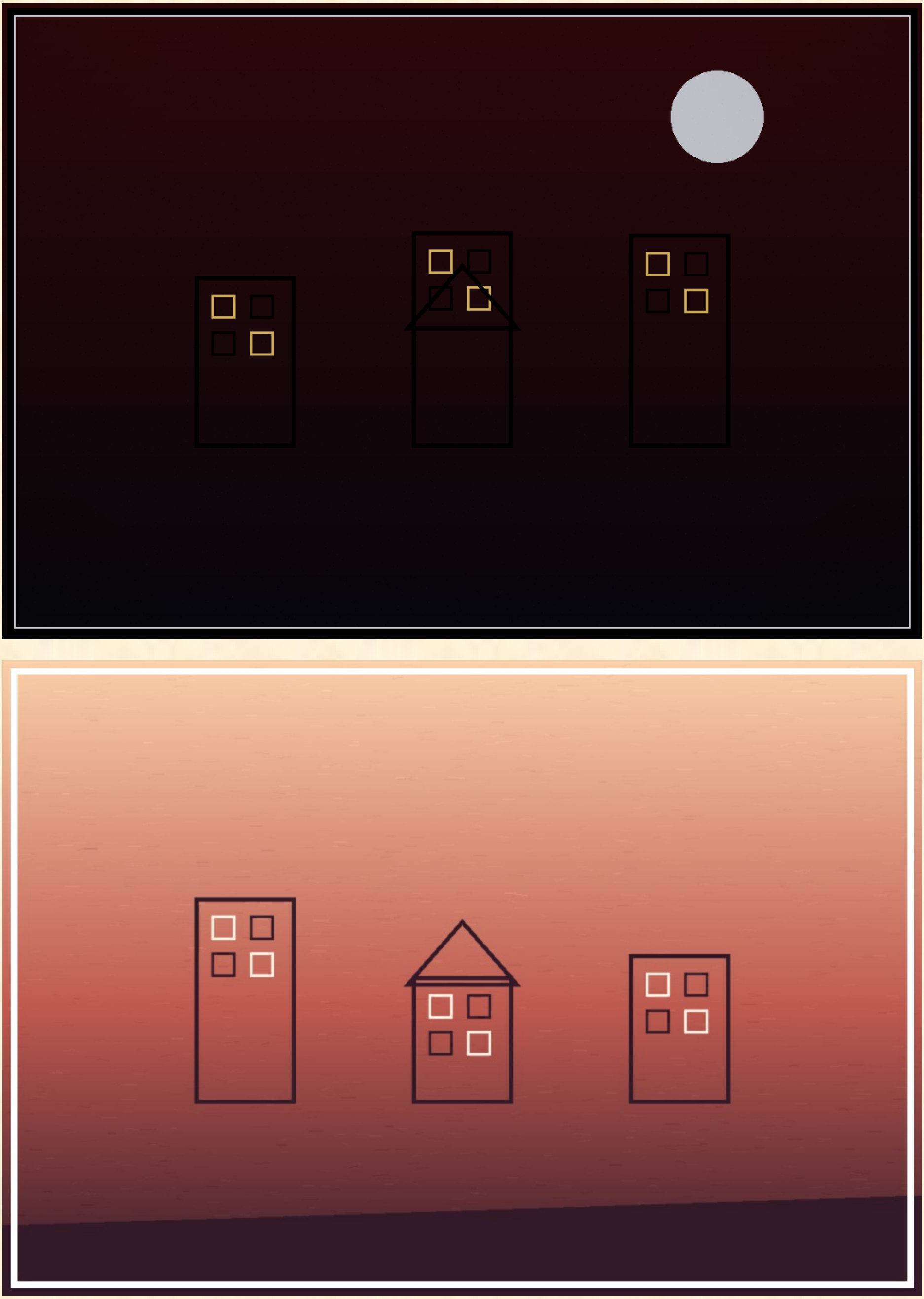

चित्र 4

कनक सिंहकेँ पता चललै जे जोगियानगरमे दीना-भदरी लग पाँच-पाँच मोनक कोदारि छै, आ ओ सभ दिन भरिमे बिगहा-बिगहा भरि जमीन तामि लैत छथि। जमीन्दारक आँखि चमकल — मुदा ओ चमक प्रशंसाक नहि छल। ओ चमक ओहन छल जेहन बहेलियाक आँखिमे सुग्गा देखि कऽ अबैत छै।

'एहन बड़द सन जोड़ी हमर खेतमे जोता जाए,' कनक सोचलक, 'त' जाँजरक उपज दुगुन भऽ जाए।' — मनुक्खकेँ बड़द बुझनिहारक यएह त' पहिल चीन्ह थिक।

अध्याय ३ : मारि कऽ छूटलाह

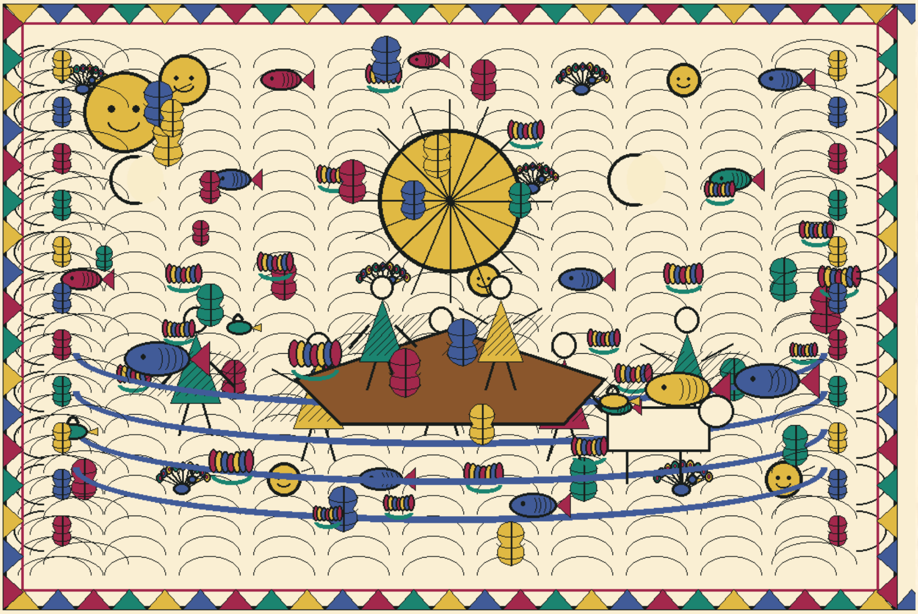

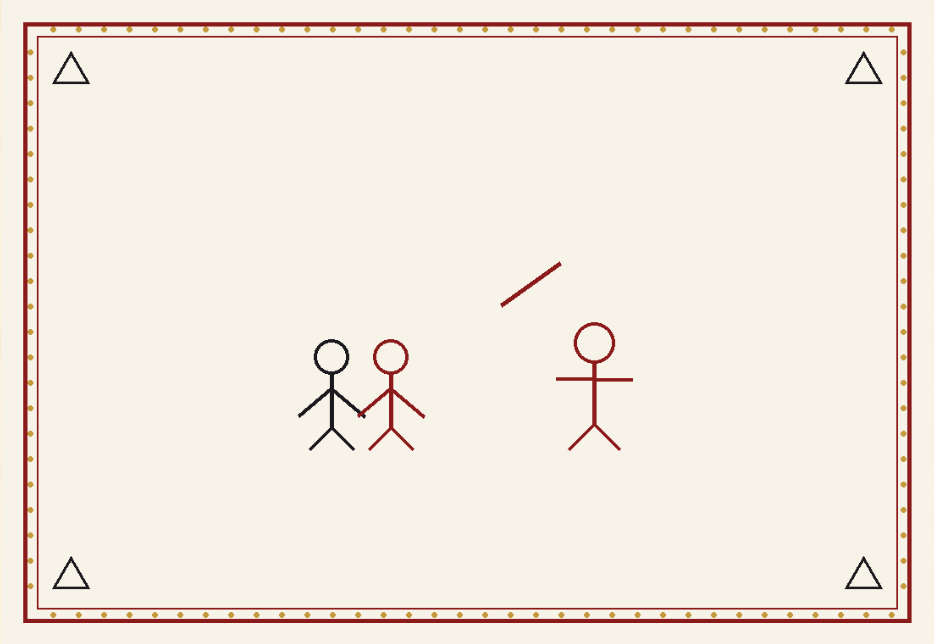

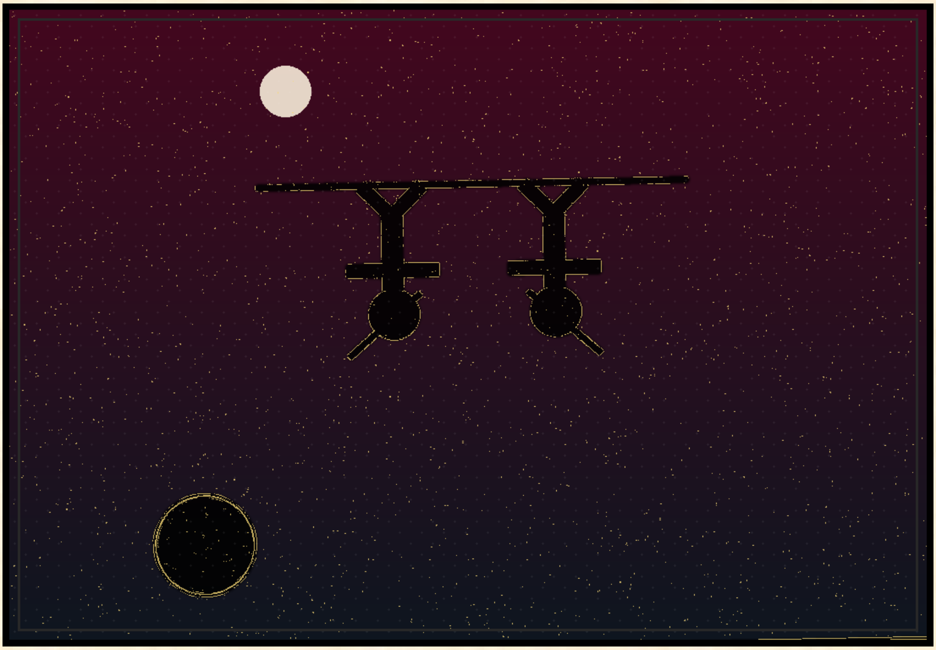

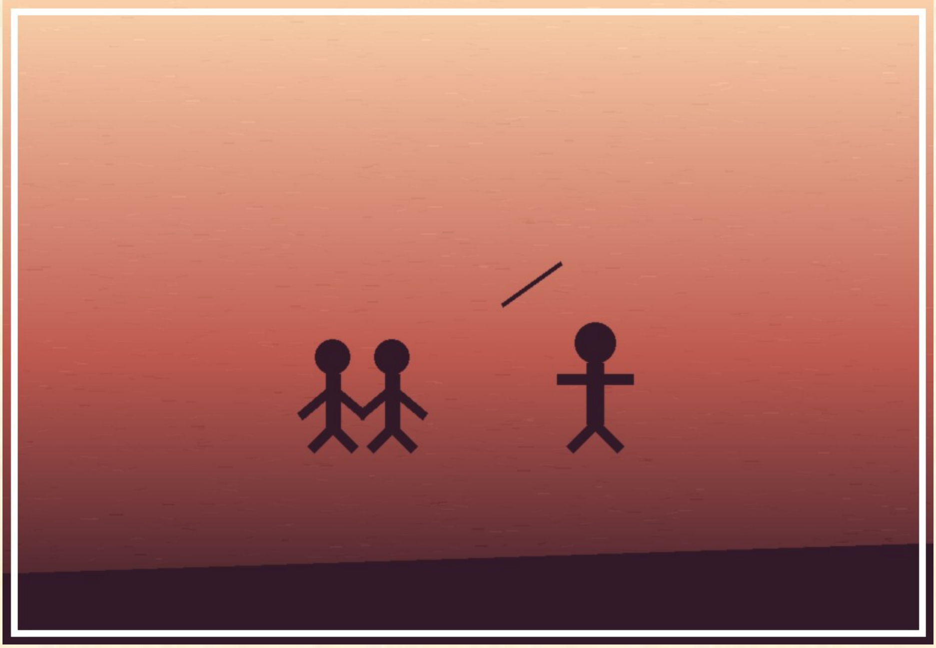

चित्र 5

कनक सिंह अपने जोगियानगर गेल। मुँहपर मीठ बोली, भीतरमे जाल — 'दीना-भदरी! अहाँ सभक बलक चर्च सुनलहुँ। हमर गाम चलू, खेती करू, मालामाल कऽ देब।'

मुदा दीना-भदरी आन्हर नहि छलाह। हुनका बुझल छलनि जे कनक सिंहक 'मालामाल' क अर्थ की होइत अछि — जाँजरक बोनिहारपर होइत अत्याचारक खिस्सा कोदारिक संग-संग हुनको कान धरि पहुँचल छल। भूखल पेटक पीड़ा, पीठपर कोड़ाक दाग, आ आधा बोनिपर टूटैत घर — सभटा।

दीनाक भौंह तनि गेल। 'जे अपन बोनिहारकेँ मनुक्ख नहि बुझए, तकर खेतमे हमर कोदारि नहि उतरत।' कनक सिंह गरजल — गरजब जमीन्दारक पुरान हथियार। मुदा एहि बेर सोझाँमे बोनिहार नहि, दीना-भदरी छलाह।

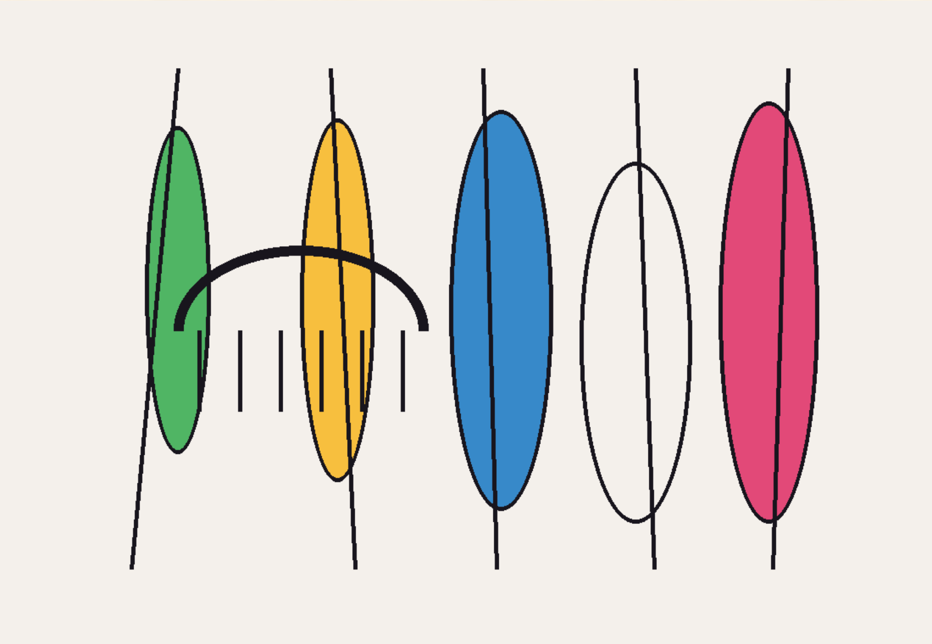

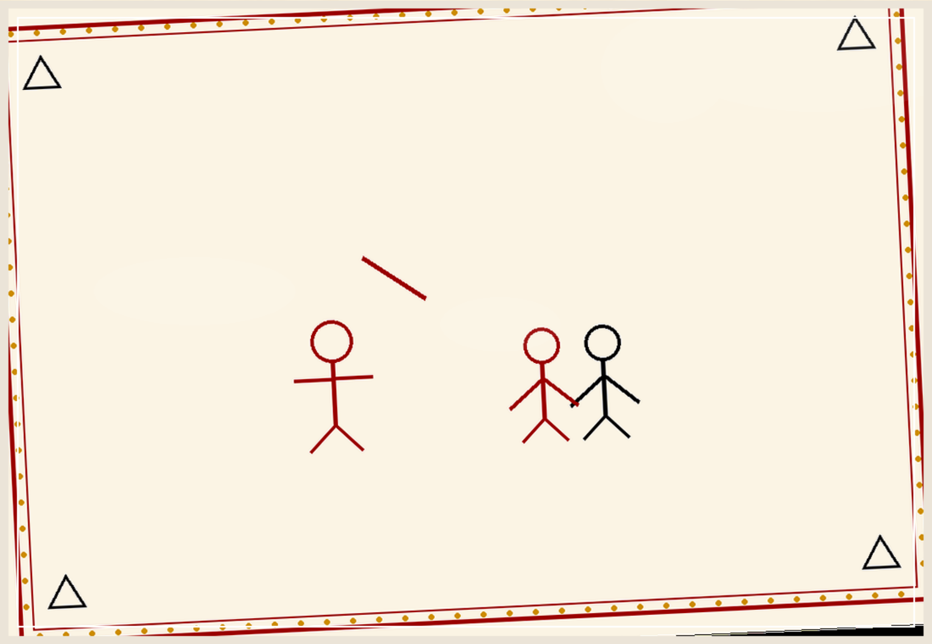

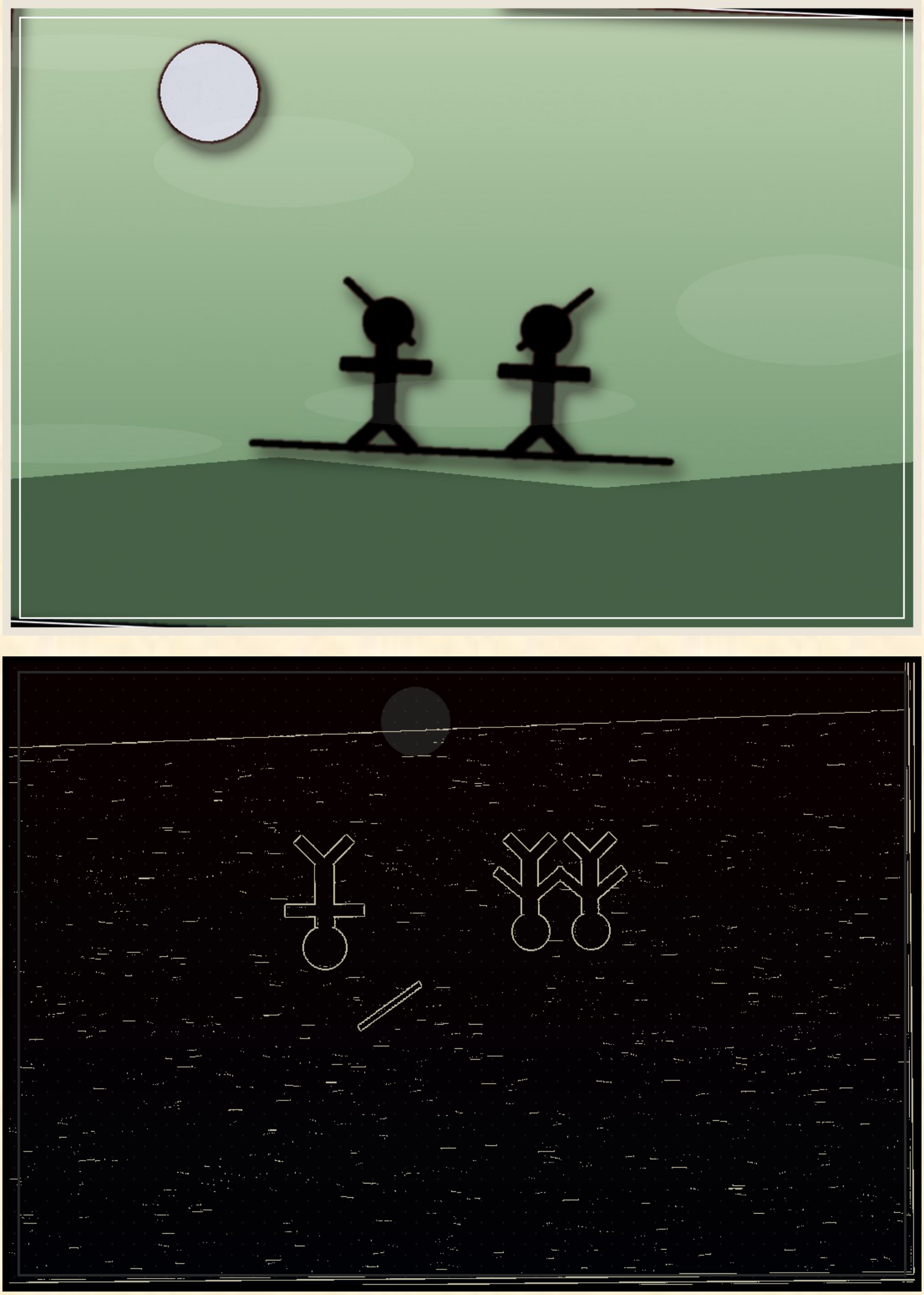

चित्र 6

मारि-मारि कऽ छूटलाह दुनू भाइ कनक सिंहपर। जमीन्दार, जकर एक इशारापर गाम काँपैत छल, ओहि दिन जोगियानगरक माटिपर लोटैत-पड़ाइत अपन गाम भागल। पाछाँ-पाछाँ हँसी दौड़ल — बोनिहार सभक दबल हँसी, जे बरखोसँ बहराइक बाट ताकि रहल छल।

दीना-भदरी घुरि कऽ अपन खेतमे लागि गेलाह, जेना किछु भेले नहि हो। मुदा किछु भेल छल — आ बहुत पैघ भेल छल। कनक सिंह त' पीठ देखा कऽ भागल, मुदा ओकर अपमान जाँजरक हवेलीमे पहुँचि कऽ आगि बनि गेल। आ ओहि आगिकेँ हवा देलक बुधनी।

अध्याय ४ : बुधनीक वर

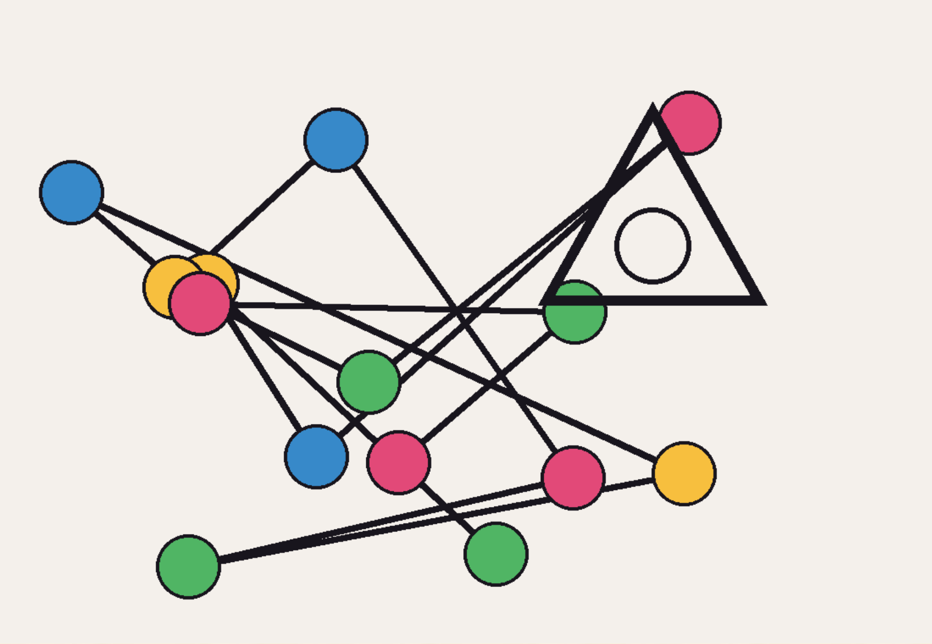

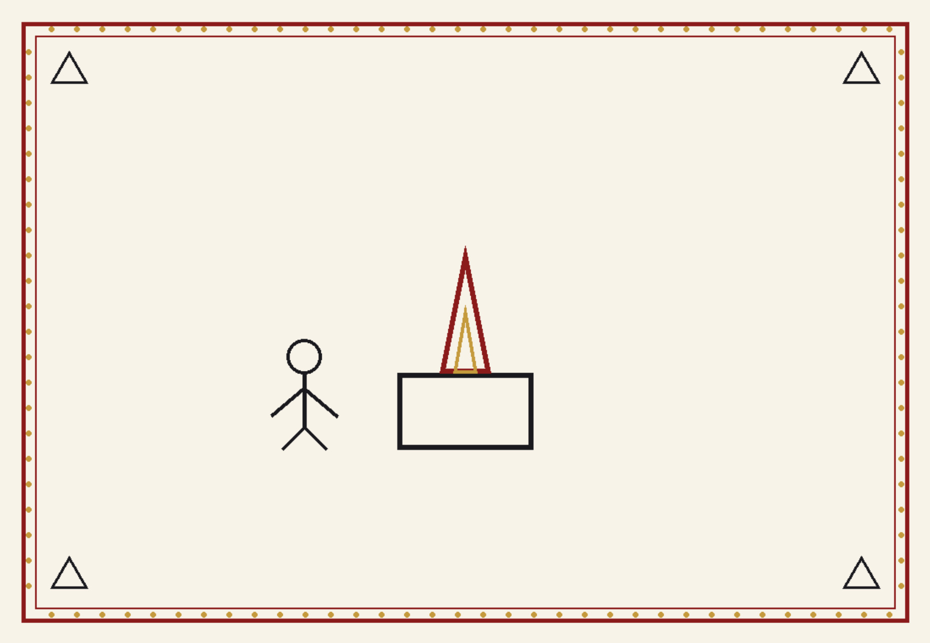

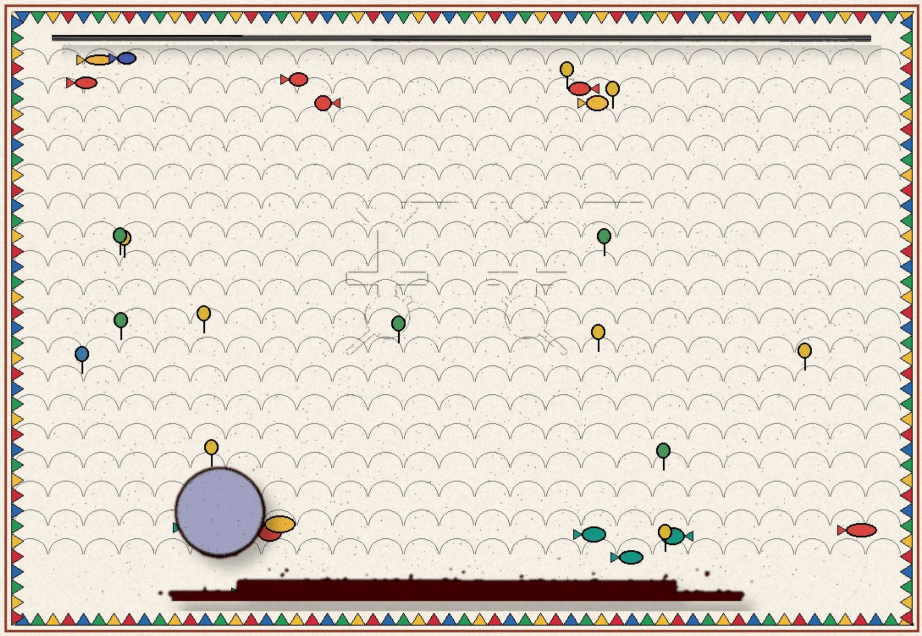

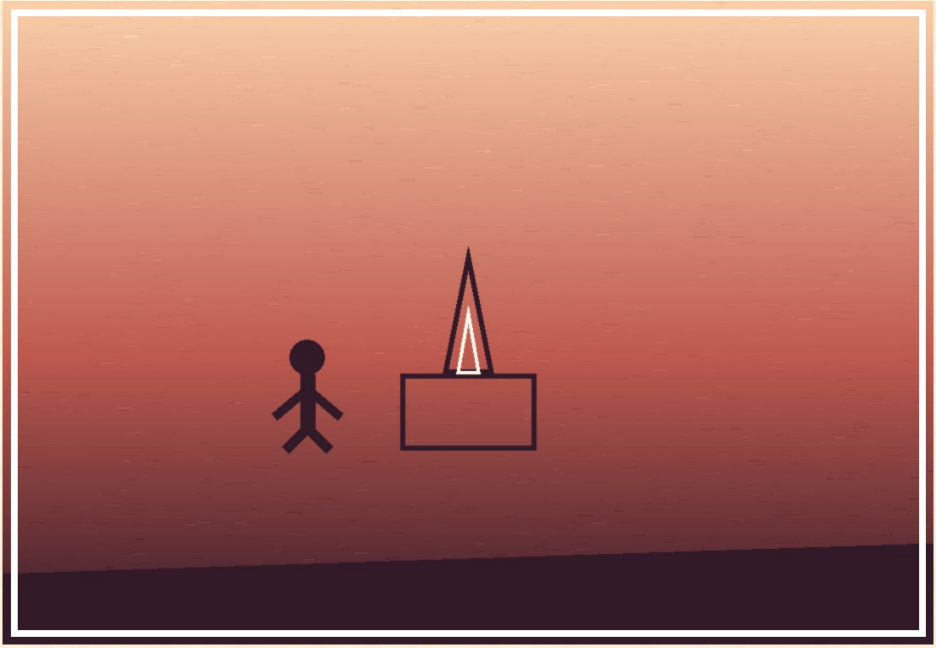

चित्र 7

बुधनीकेँ जखन पता चललै जे ओकर पतिकेँ दू मुसहर भाइ मारि कऽ भगा देलक, त' ओ ने कानलि, ने चिचियेली। ओ चुप भऽ गेलि — आ क्रूर लोकक चुप्पी गरजबसँ बेसी डराओन होइत अछि।

ओ सलहेस थान गेलि। राजा सलहेस — वीरताक देवता, बोनक जानवरक स्वामी, जिनक थानपर मिथिलाक लोक माथ टेकैत अछि। बुधनी ओतय कठोर तपस्या केलक — अन्न त्यागि, निन्न त्यागि, हठ ठानि। तपक अपन नियम छै: ओ तपस्वीक नेत नहि देखैत, खाली तप देखैत अछि।

सलहेस प्रकट भेलाह। 'माँग, की चाही!'

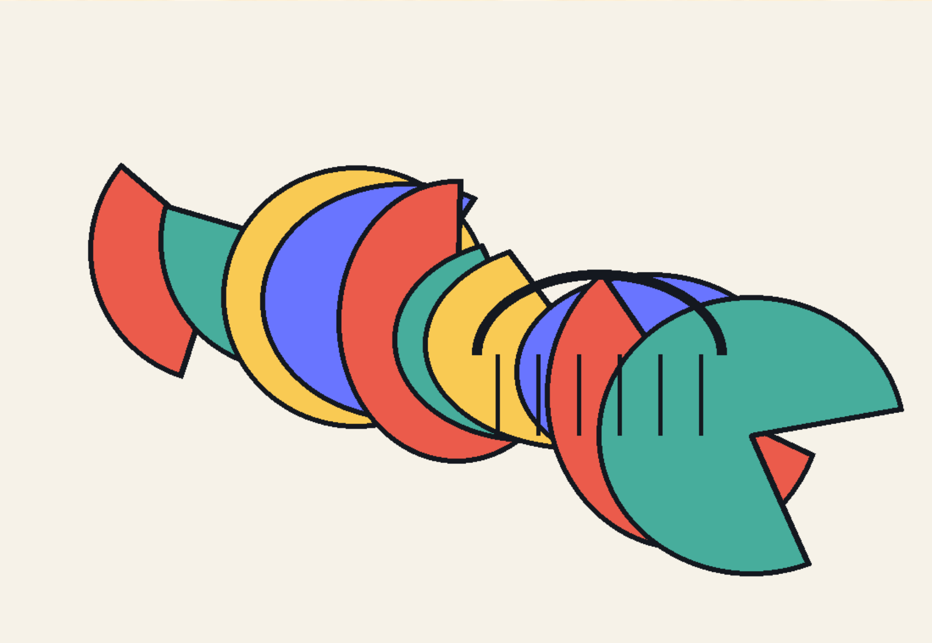

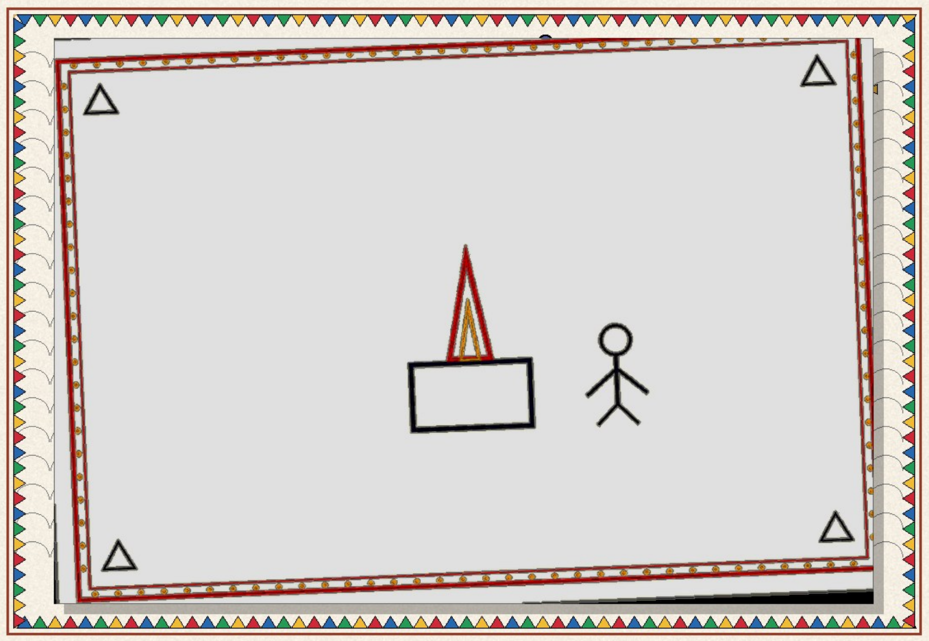

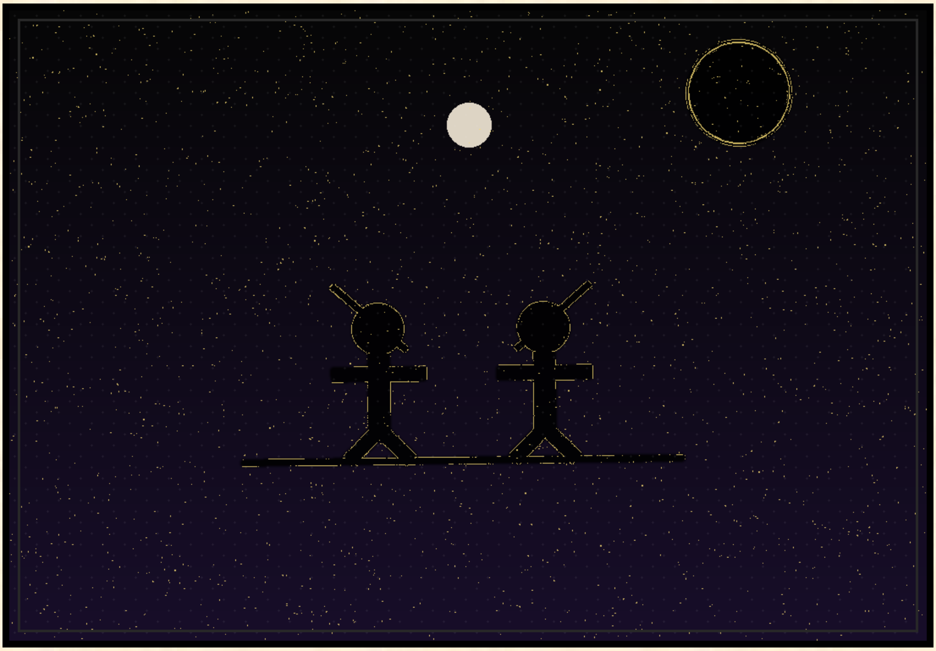

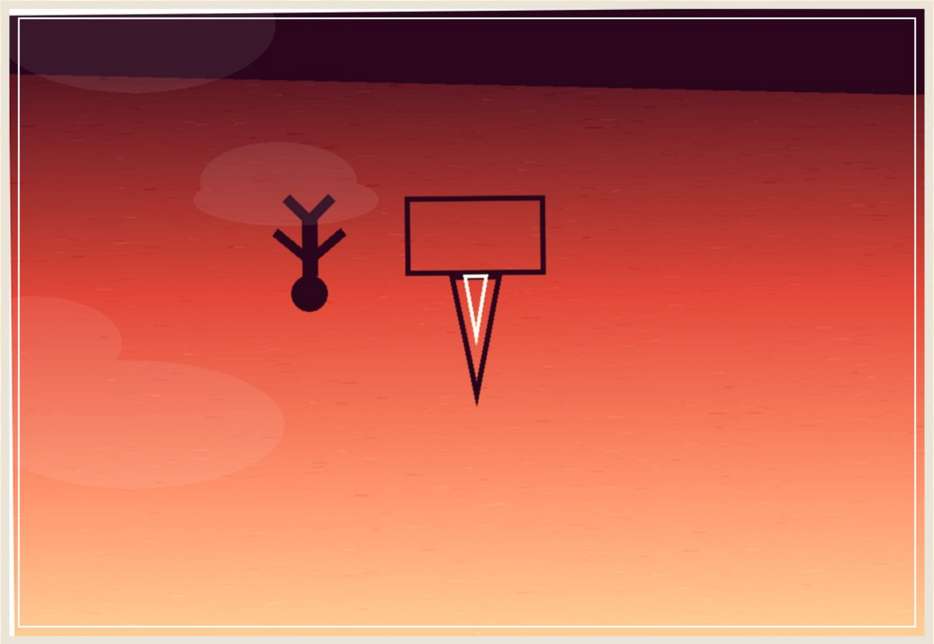

चित्र 8

बुधनी आँखि उठौलक, आ ओकर मुँहसँ जे बहराएल से सुनि देवतो सिहरि गेलाह —

'दीना-भदरीक प्राण।'

'आह!' — सलहेसक मुँहसँ खाली एतबे निकलल, आ ओ मूर्छित भऽ गेलाह। जे देवता वीरक रक्षा करैत छथि, तिनकेसँ वीरक प्राण माँगल गेल! मुदा वचन त' वचन — देवता वचनक हारल छलाह। की करताह? होश एला पर सलहेसक आँखिक आगाँ दूटा बाट छल: वचन तोड़थि त' देवत्व टूटए, वचन राखथि त' न्याय टूटए। आ नियतिक सभसँ करुण खेल यएह — जे ओ कखनो काल देवतोकेँ विवश कऽ दैत अछि।

अध्याय ५ : सलहेसक सपना

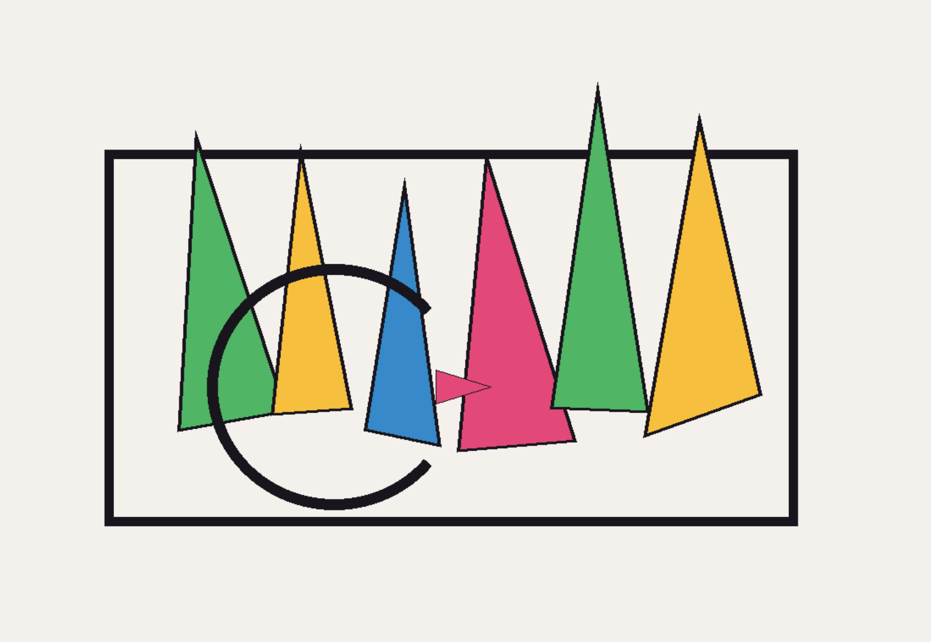

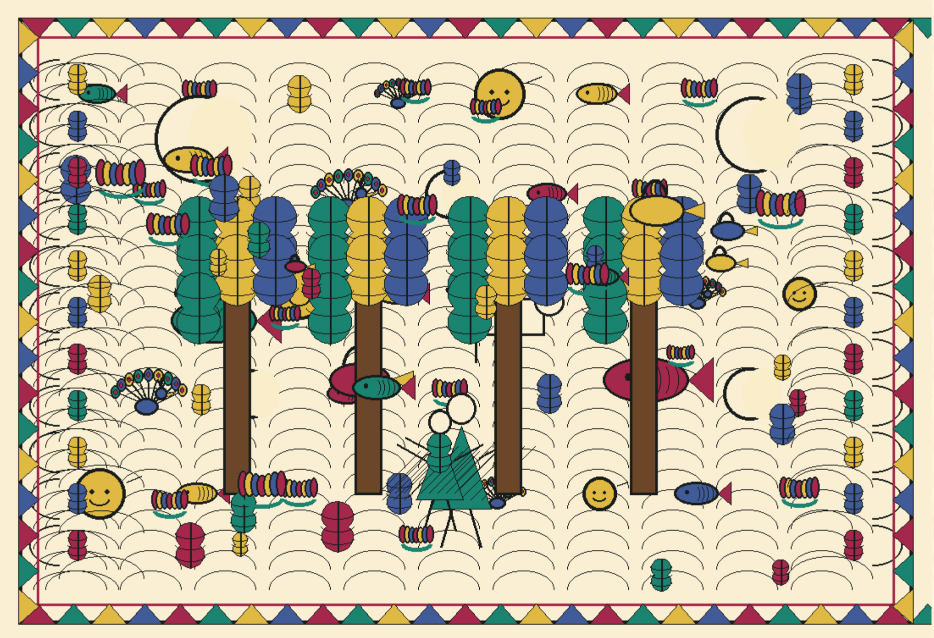

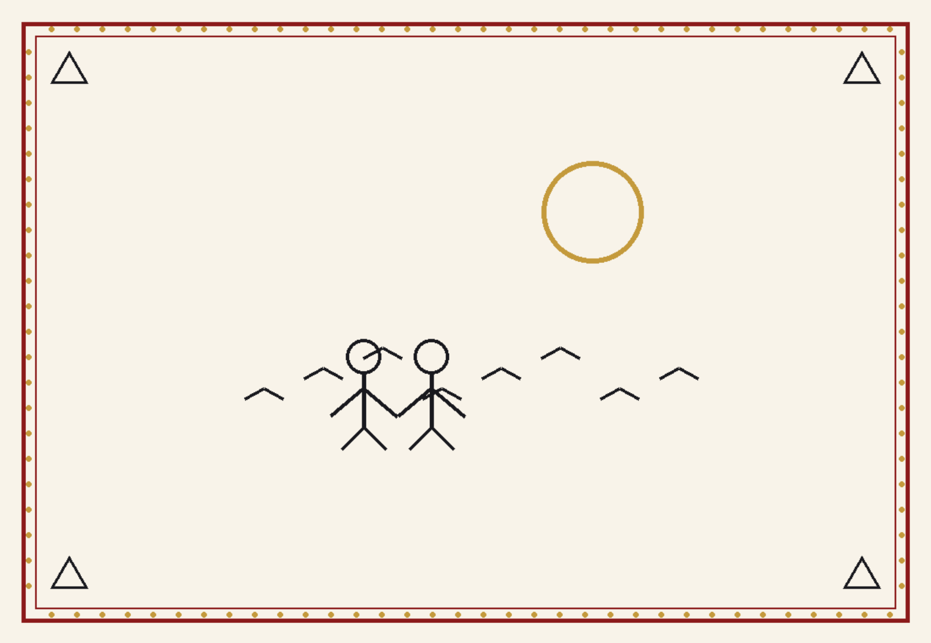

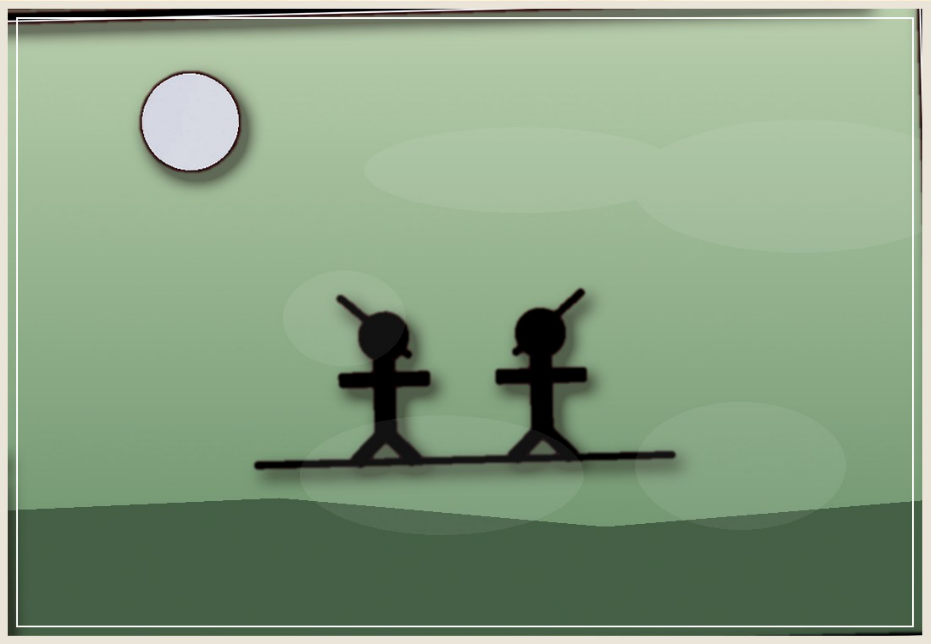

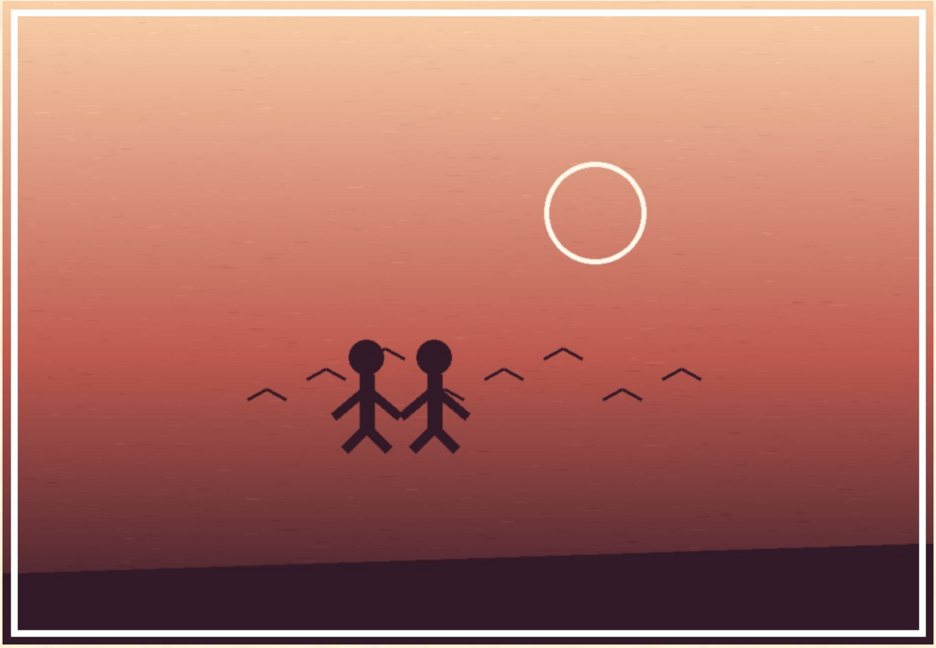

चित्र 9

ओही राति जोगियानगरमे दीना-भदरी सुतल छलाह — दिन भरिक तामल माटिक गन्ध देहमे नेने। आ हुनक निन्नमे सलहेस उतरलाह।

सपनामे देवताक स्वर आएल — 'कटैया बोनमे आउ। बड्ड शिकार भेटत।'

शिकार! दुनू भाइक आँखिमे निन्नोमे चमक आबि गेल। मुसहरक बेटा लेल शिकार खाली मनोरंजन नहि — मासु छल, पावनि छल, पुरुषार्थक परीक्षा छल। आ बजओनिहार स्वयं सलहेस छलाह — बोनक जानवरक देवता! हुनक बजाहटिपर सन्देह के करए?

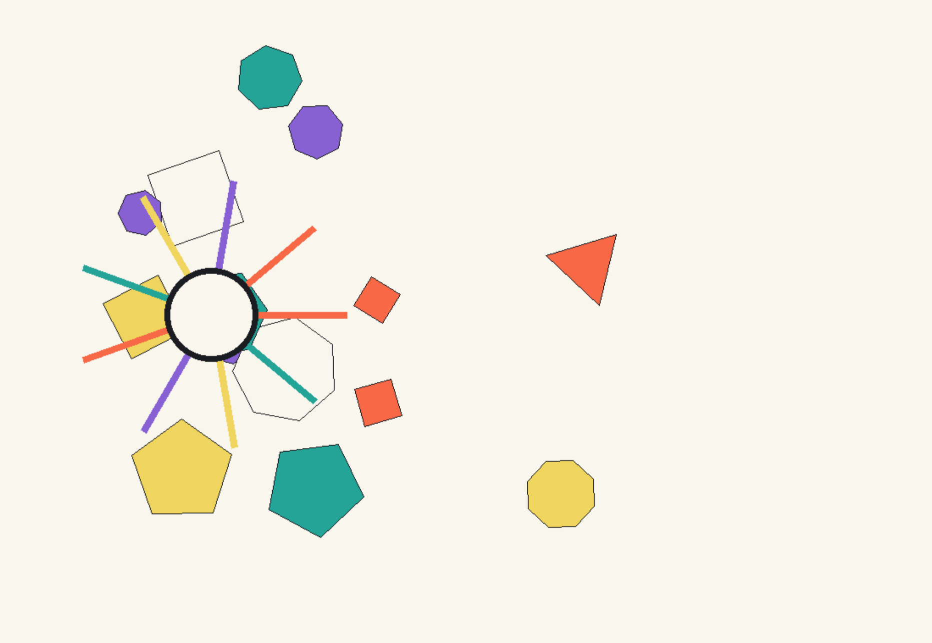

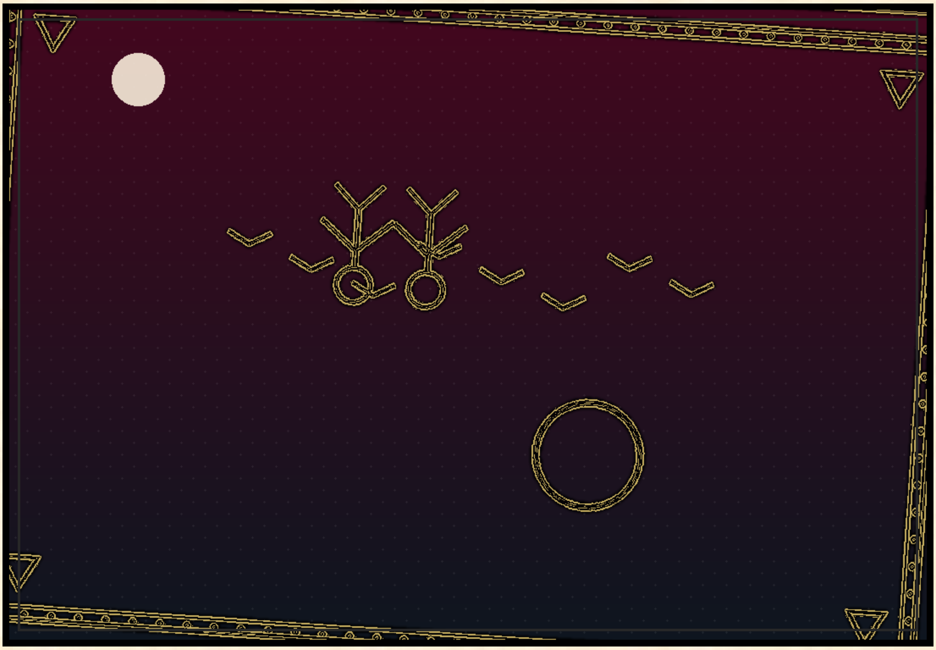

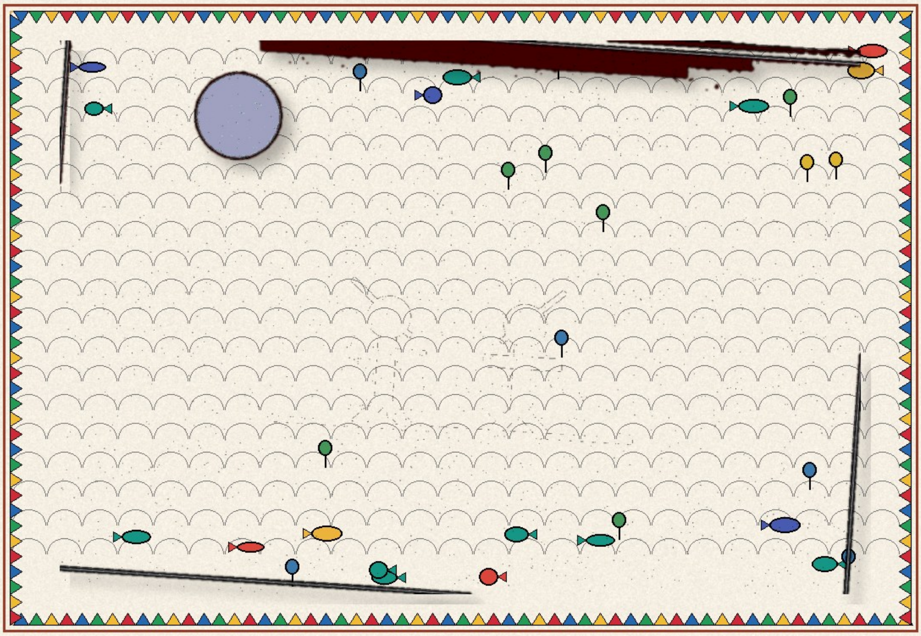

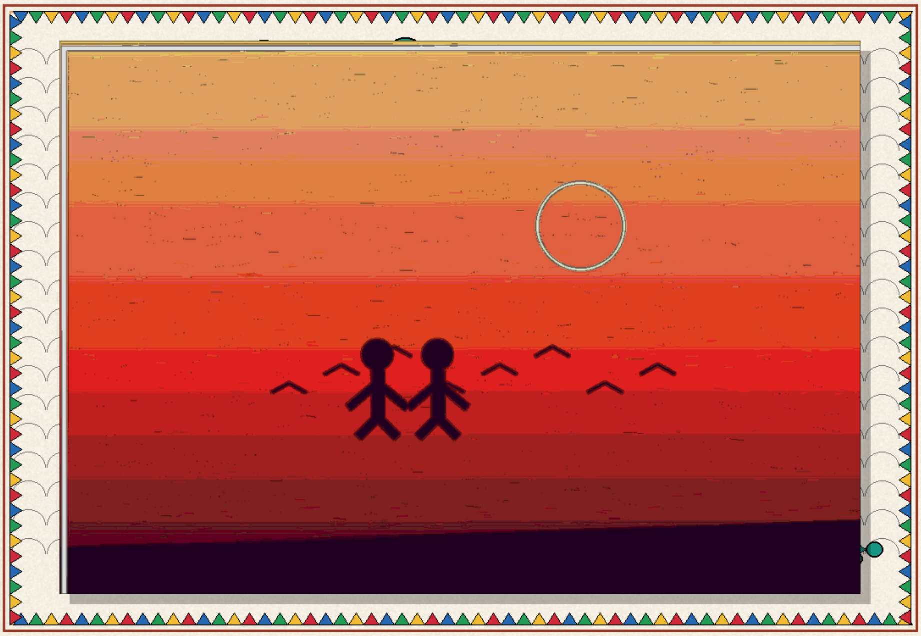

चित्र 10

मुदा सपना दैत काल सलहेसक अपन करेज कतेक कानल हएत — से सपनामे नहि देखाइ पड़ल। देवता अपन प्रियकेँ अपने मृत्युक बाट देखा रहल छलाह, कारण वचनक सिक्कड़ हुनक गरामे बान्हल छल। जाल ओछाओल गेल छल, आ जालक डोरी थमओनिहार अपने बन्हायल छलाह।

भोर होइते दीना भदरीकेँ सपना कहलनि, भदरी दीनाकेँ — दुनूकेँ एक्कहि सपना! फेर त' सन्देहक कोनो स्थान नहि रहल। 'सलहेस बजओने छथि,' दीना कहलनि, 'आ हुनक बजाहटि टारब पाप।' — जालमे फँसय लेल आब अपने पएरे चलि कऽ ओ सभ जाल दिस बिदा भेला।

अध्याय ६ : अमावस्याक बिदाई

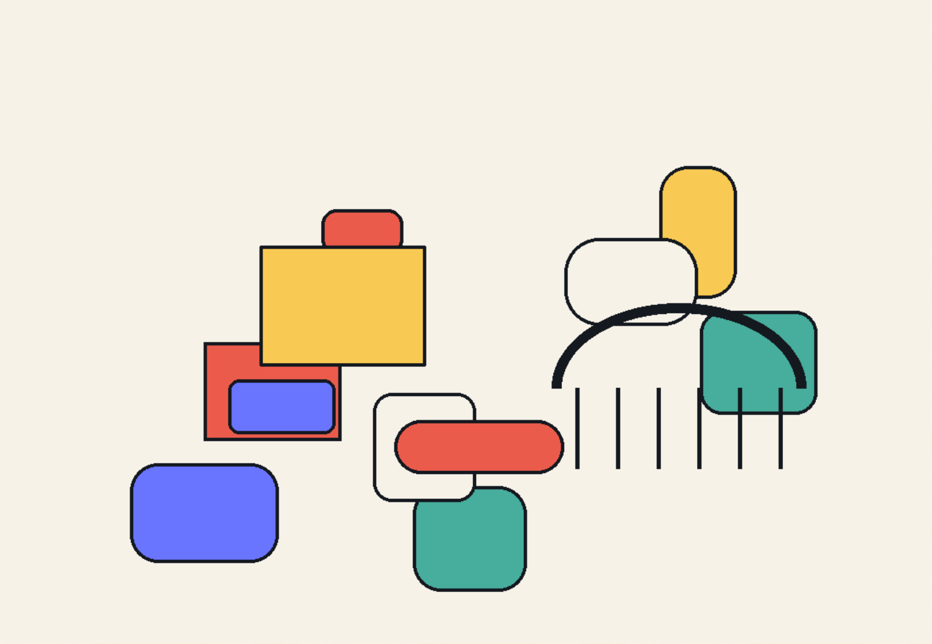

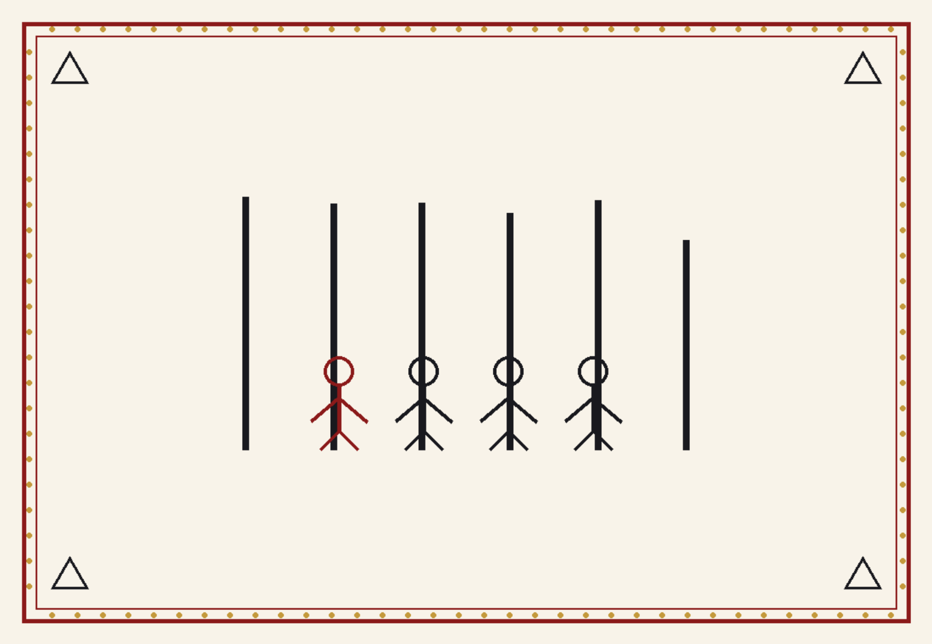

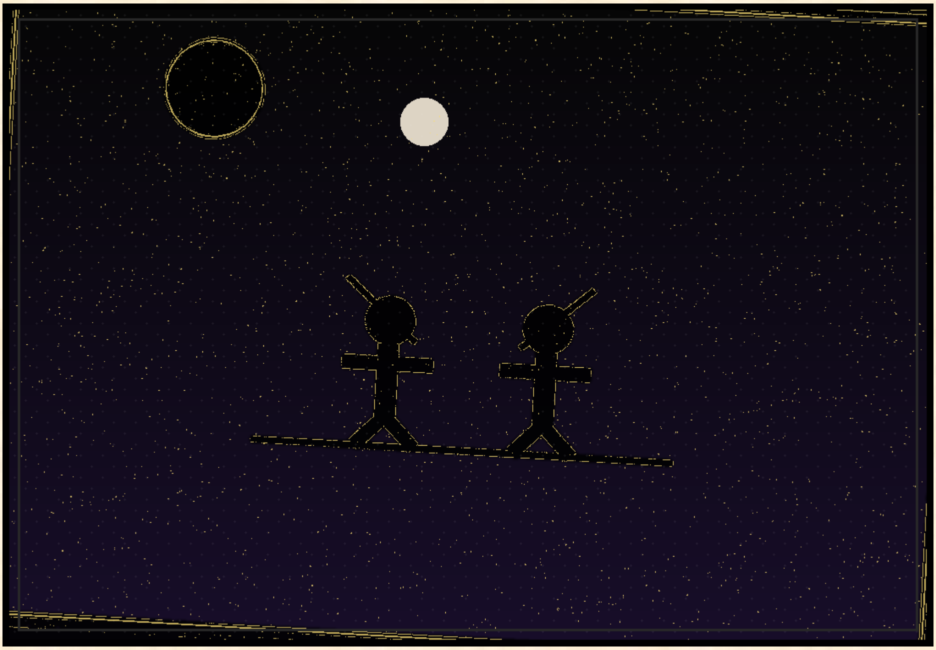

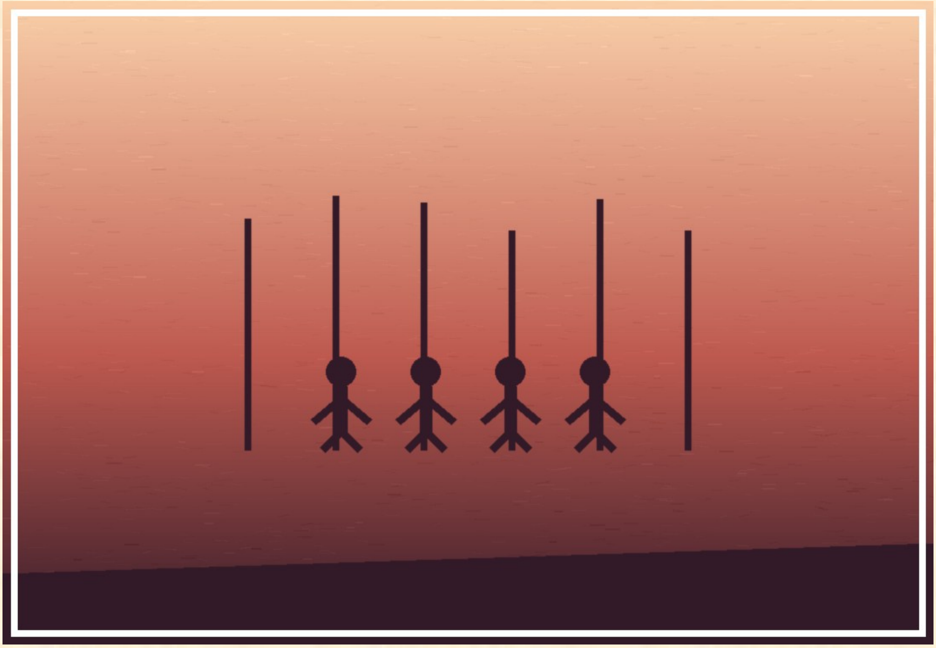

चित्र 11

रातिएमे बिदा भेलाह दीना-भदरी — तीर-धनुष लेने, कान्हपर तरकस बान्हने। संगमे मामा बहुरन — बूढ़, मुदा बोनक भेद जननिहार।

माए निरसो दरबज्जा धरि एलीह। 'राति-बिरातिक बोन... सम्हरि कऽ रहिहह बाबू।' दीना माएक पएर छुबि कऽ कहलनि, 'सलहेसक बजाहटि छिअनि माए, हुनके रखबारि।' — माएक करेज मानि गेल, मुदा माएक करेजक कोनो कोन नहि मानलक; ओ कोन राति भरि जगले रहल।

रस्तामे नंगड़ागोड़िया गाम पड़ल, जतय रहैत छलाह हुनक दोस जीतन यादव। दोसकेँ छोड़ि कऽ शिकार? दीना-भदरी हुनको संग चलबाक लेल कहलनि। जीतन तुरत तीर-धनुष उठा लेलनि — 'जतय अहाँ दुनू भाइ, ओतय हम।' आब चारि गोटे छलाह: दू वीर, एक मामा, एक मीत।

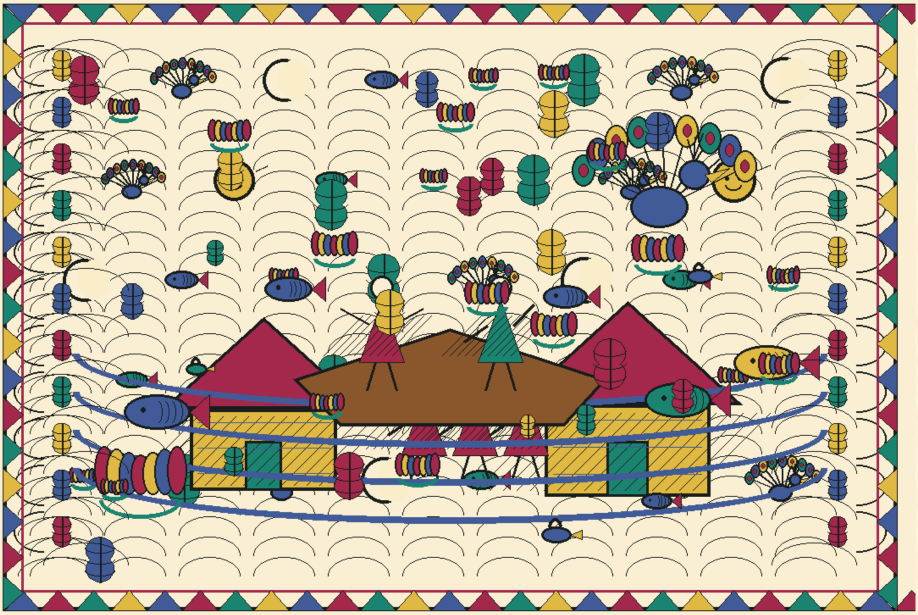

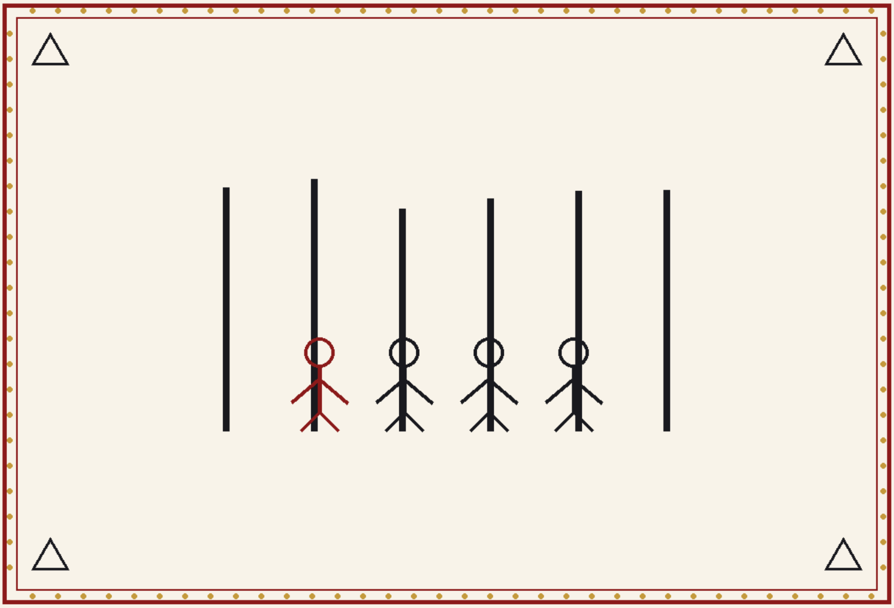

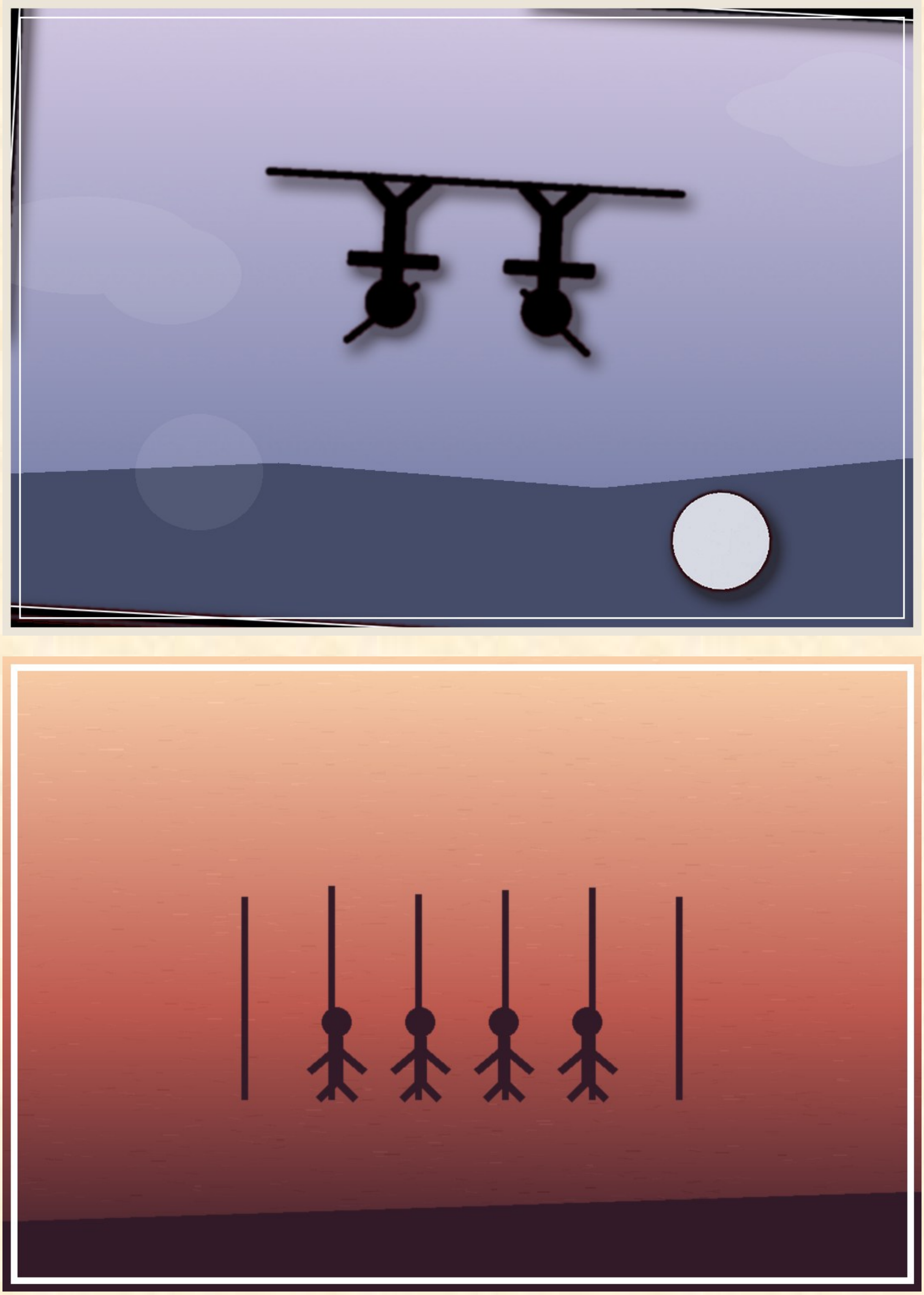

चित्र 12

अमावस्याक राति! अन्हार गुज्ज — एहन अन्हार जे हाथकेँ हाथ नहि सुझए। बोनक गाछ सभ कारी देवाल जकाँ ठाढ़, आ ओहि देवालक पाछाँ की छल से खाली दूटा प्राणी जनैत छल — बुधनी, आ विवश सलहेस।

चारू गोटे कटैया बोनमे प्रवेश केलनि। पाछाँ गामक अन्तिम दीप मिझा गेल। आगाँ — खाली राति।

अध्याय ७ : सुन्न बोन

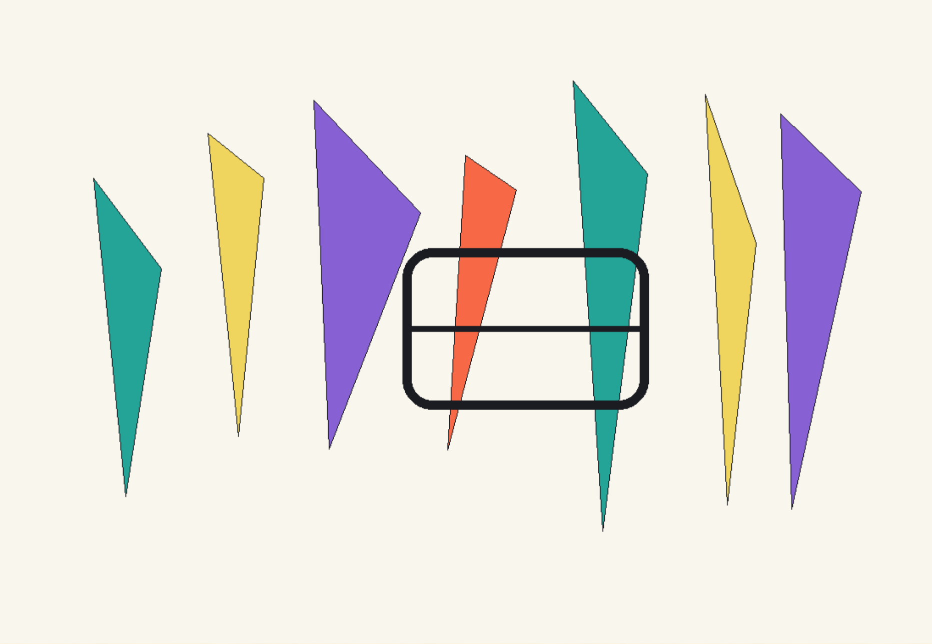

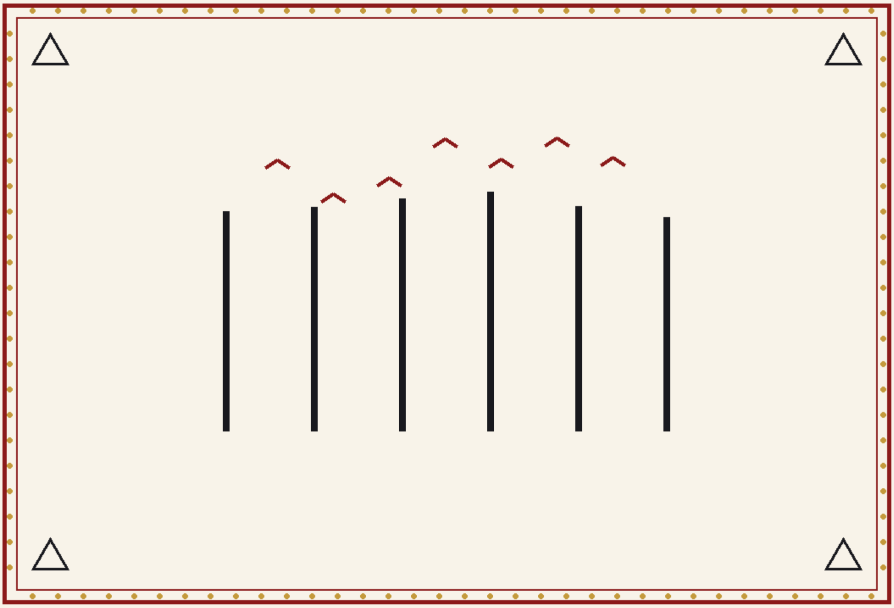

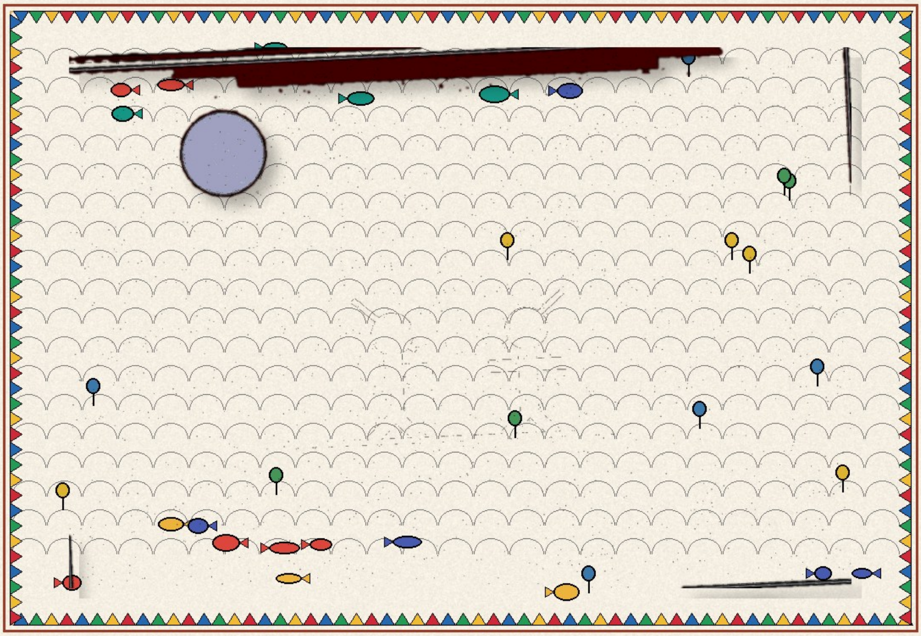

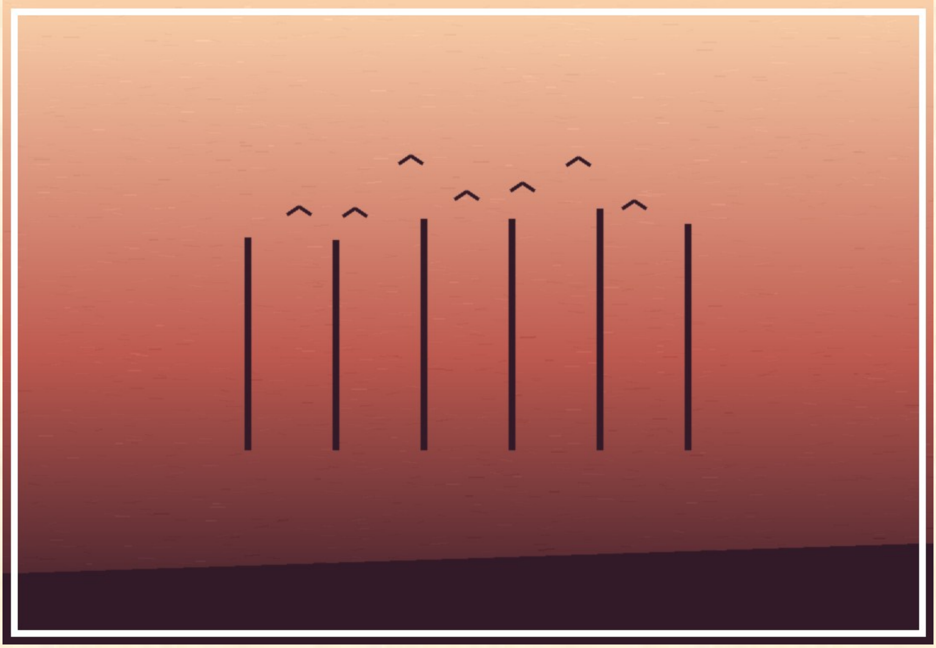

चित्र 13

बोन घन छल, राति गहींर — मुदा शिकार? एक्को टा नहि। ने हरिणक खुरक आवाज, ने बनसुग्गरक फुफकार, ने खरहाक सरसराहटि। जेना पूरा बोनकेँ पहिनहिसँ खाली करा देल गेल हो।

खाली बादुर घुमैत छल — माथपर सँ फड़फड़ाइत, कारी-कारी, जेना रातिक फाटल टुकड़ी सभ उड़ैत हो। बहुरन मामाक अनुभवी मोन खटकल — 'बोन एतेक चुप किए छै रौ? चुप बोन नीक सगुन नहि।'

मुदा जालमे फँसल पएर पाछाँ नहि घुरैत। 'शिकार आगाँ हएत,' — ई सोचि चारू गोटे आरो भीतर बढ़ैत गेलाह। बोन हुनका सभकेँ गीड़ैत गेल — पहिने बाट, फेर दिशा, फेर एक-दोसराक आहटि।

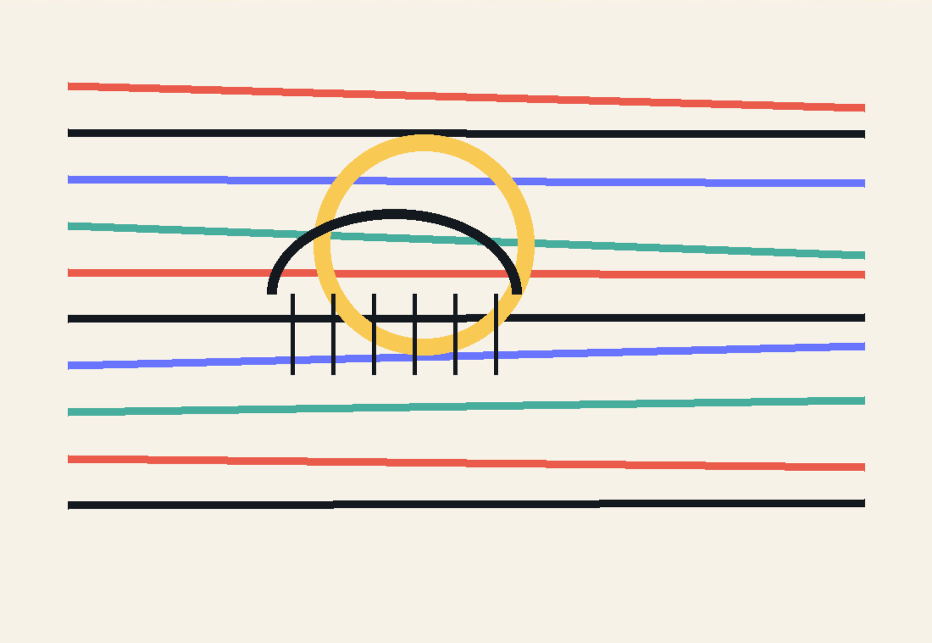

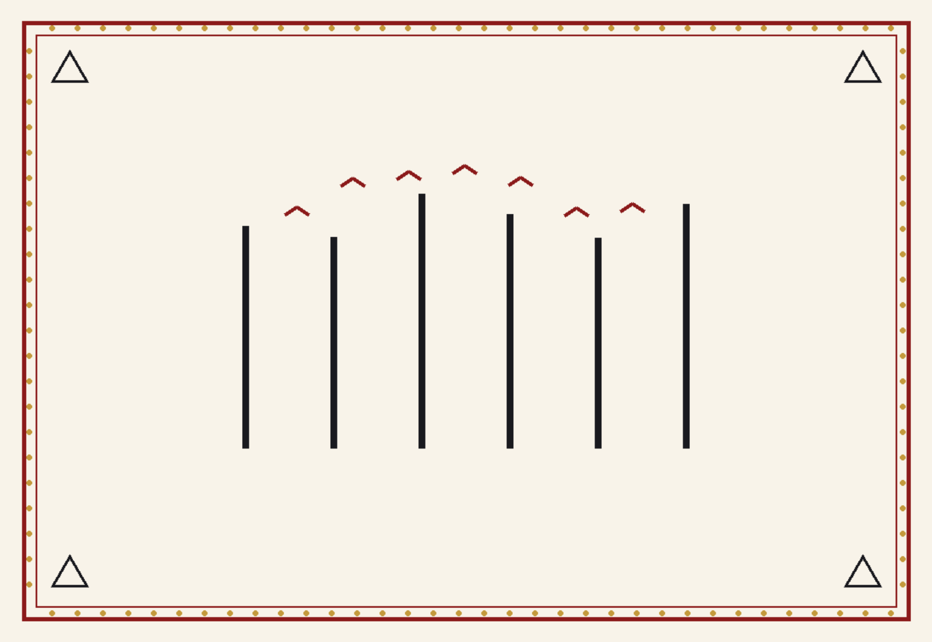

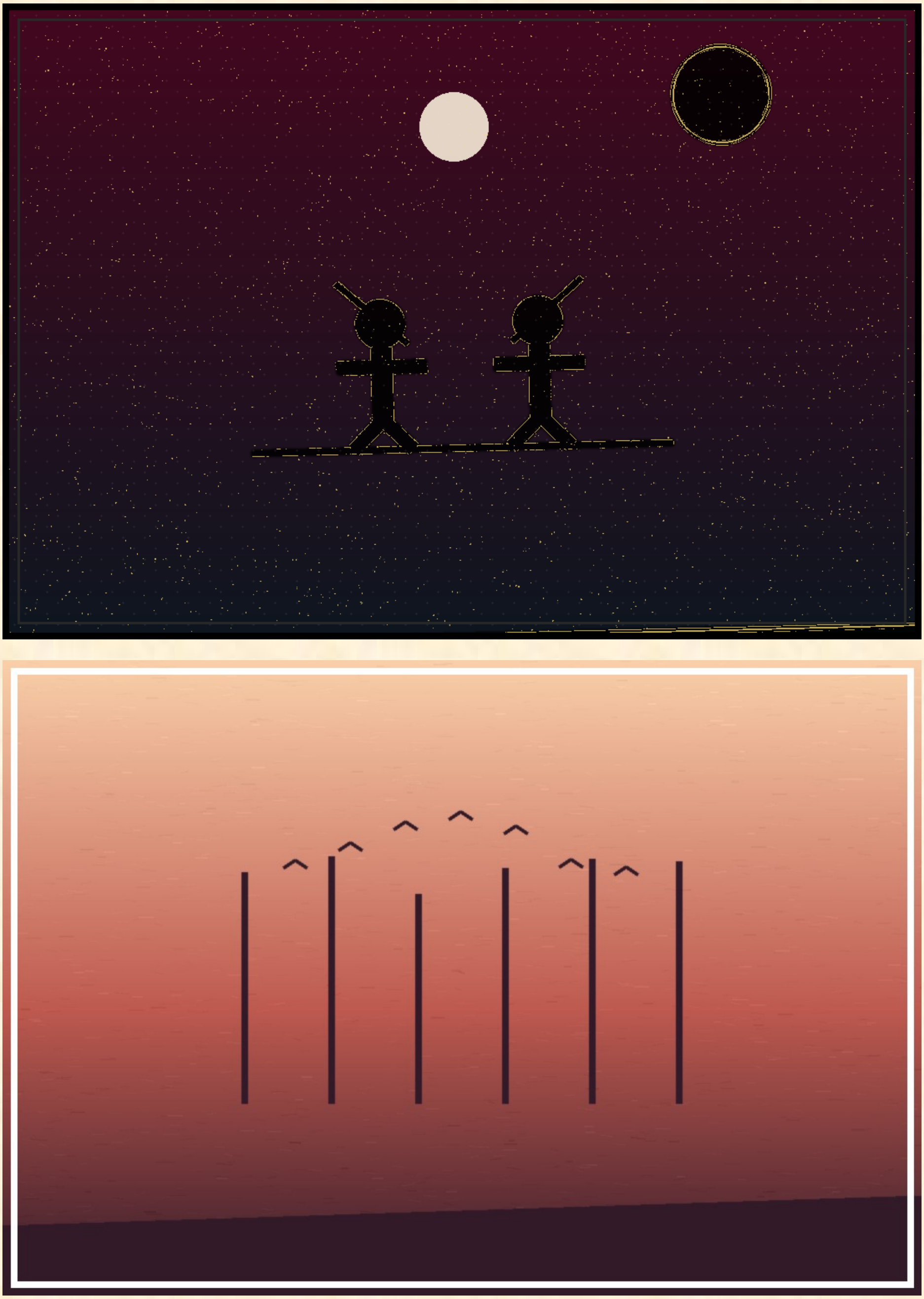

चित्र 14

आ कोना ने कोना, बोनक ओही चालिमे, दीना असगरे बोनक बीचमे चलि गेलाह — भदरीसँ अलग, मामासँ अलग, जीतनसँ अलग। वीरक संग जखन छूटि जाइत छै, तखन बुझू जे नियति अपन घेरा कसि रहल अछि।

आ ओतय, बोनक ओही करेजमे, ठाढ़ि छलि बुधनी। असगर नहि — संगमे सलहेस सेहो छलाह। एक दिस तपक बलसँ बान्हल देवता, दोसर दिस बदलाक आगिमे जरैत नारि — आ सोझाँमे, अन्हारसँ बहराइत, नि:शस्त्र सन एकसर दीना।

अध्याय ८ : खुनीमा बाघ

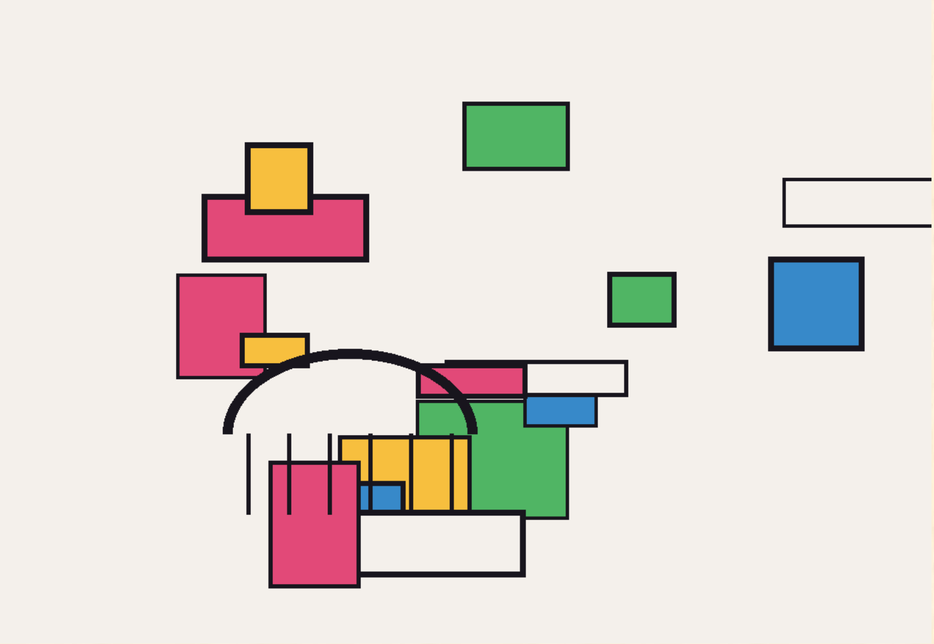

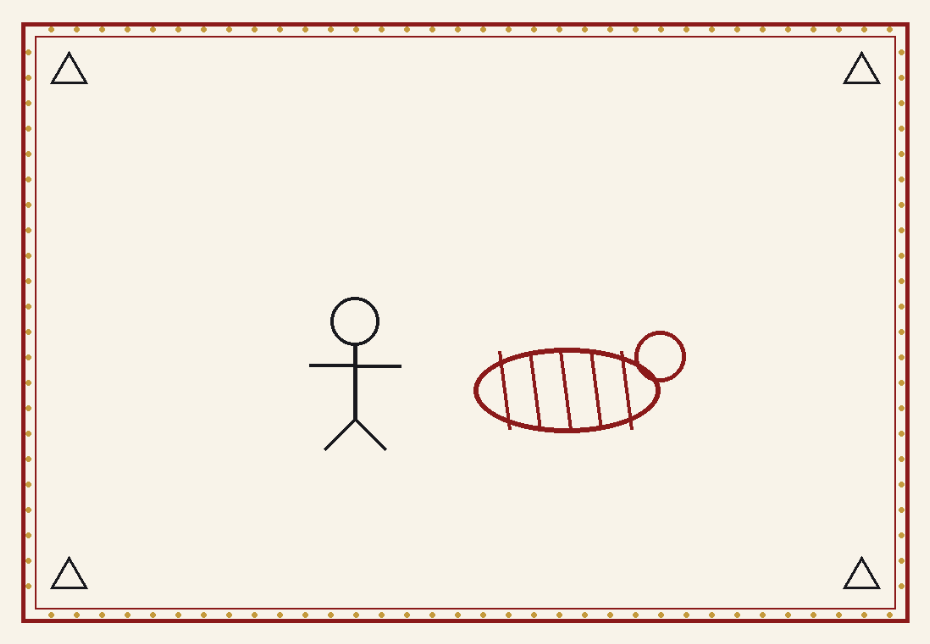

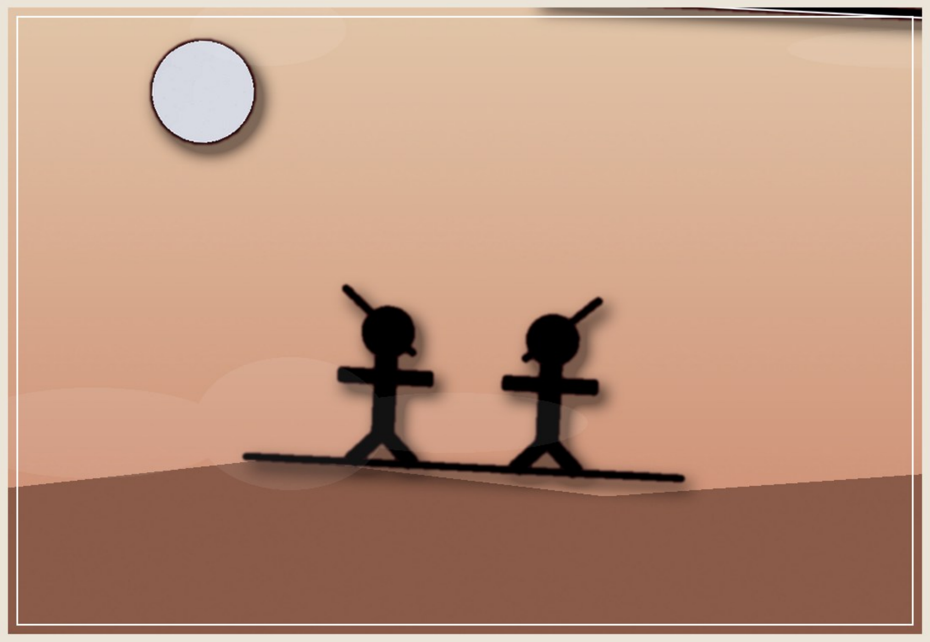

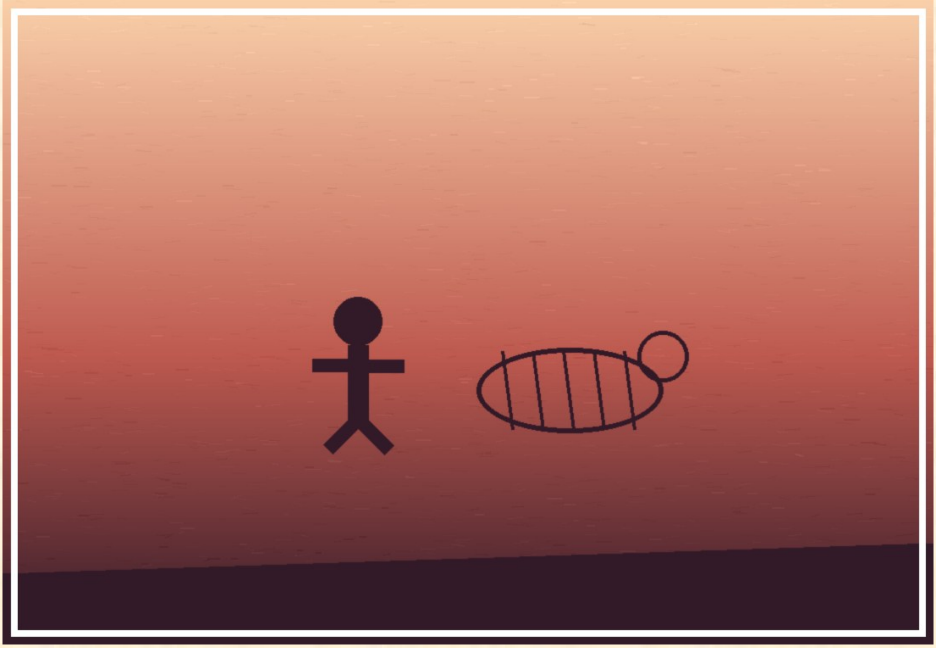

चित्र 15

बुधनी गरजि कऽ बाजलि — 'बोनक जानवरक देवता सलहेस! अपन खुनीमा बाघ बजाउ!'

आ बोन फाटल। अन्हारसँ बहराएल खुनीमा बाघ — सलहेसक अपन बाघ, जकर गर्जनसँ बोनक गाछ सभ पात झाड़ि दैत छल। दीना धनुष तानलनि, बाण चलओलनि — मुदा ई की! बाण रस्ता बिसरि जाइत छल! जे बाण कहियो चूकल नहि, से हवेमे भोथिया जाइत छल — कारण बाणकेँ अन्हराओल जा रहल छल, ओही शक्तिसँ जे बाघकेँ पठओने छल।

तखन दीना धनुष फेकि देलनि। 'हथियार जँ धोखा दिअए, त' बाँहि त' अपन छै!' — आ मुसहरक बेटा बाघसँ मल्ल-युद्धमे भिड़ि गेलाह। नख आ दाँतक विरुद्ध खाली मांस आ हड्डी; गर्जनक विरुद्ध खाली साँस। बोनक अन्हारमे दू टा देह एक-दोसरामे गुँथा गेल — के मनुक्ख, के पशु, चिन्हब कठिन।

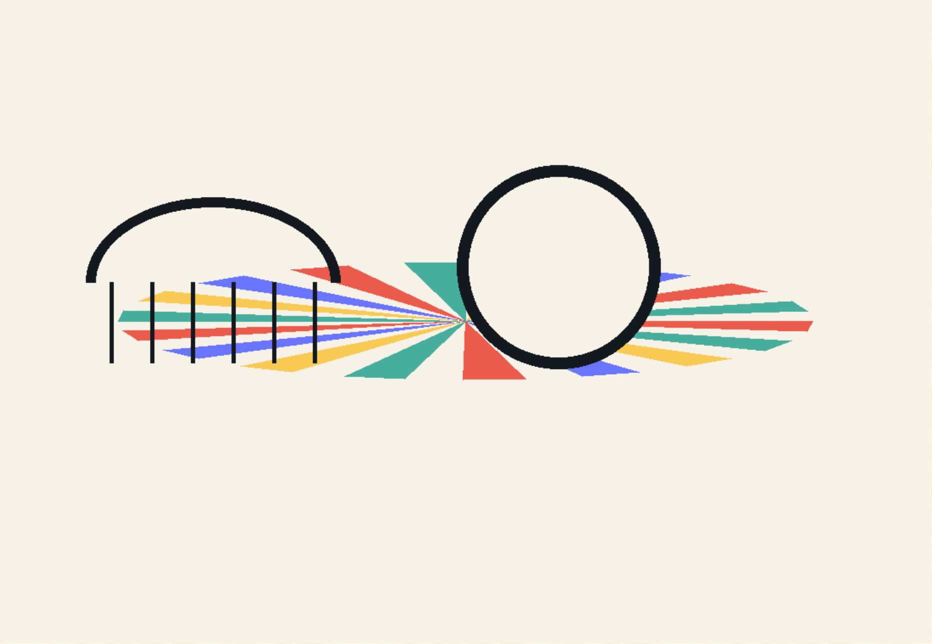

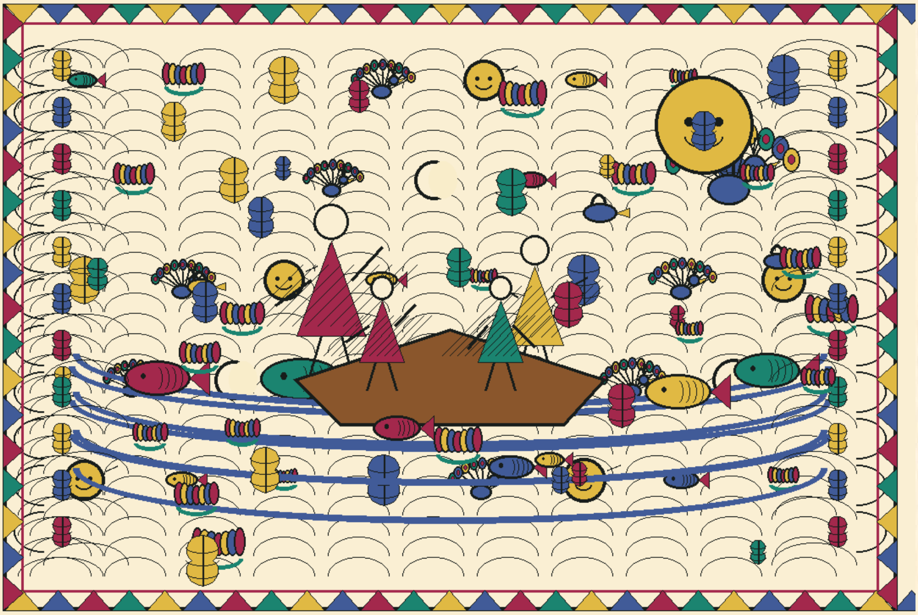

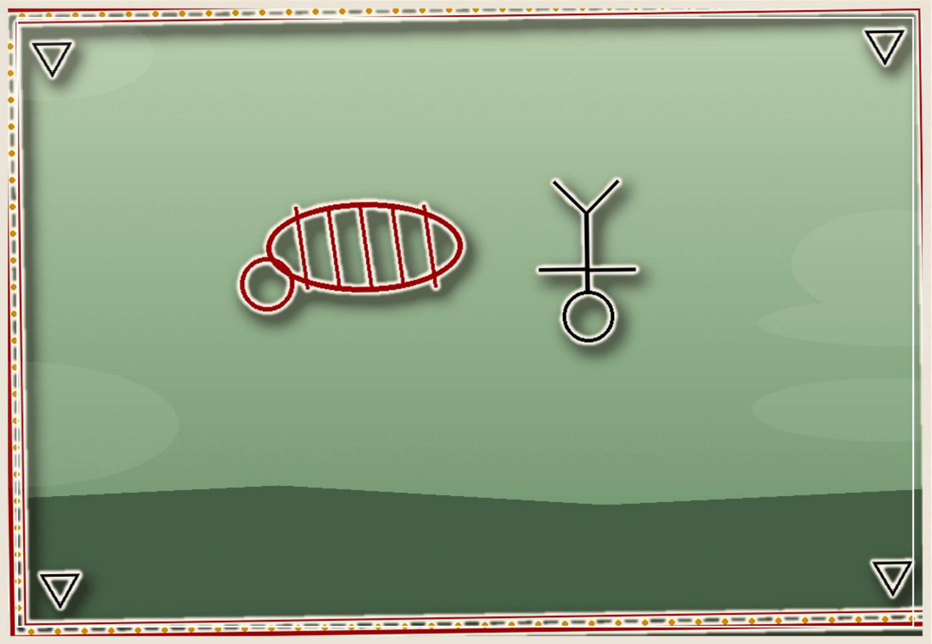

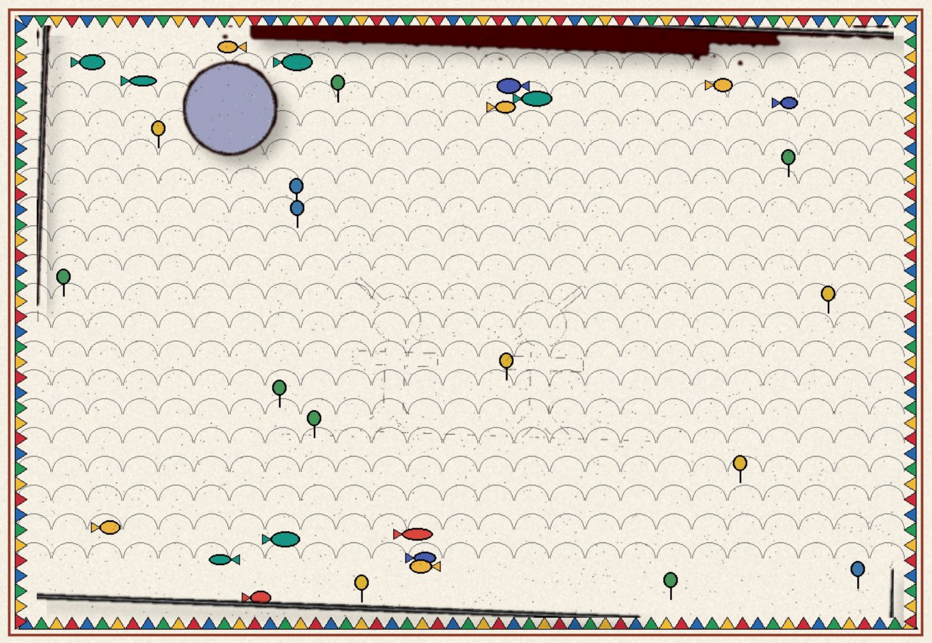

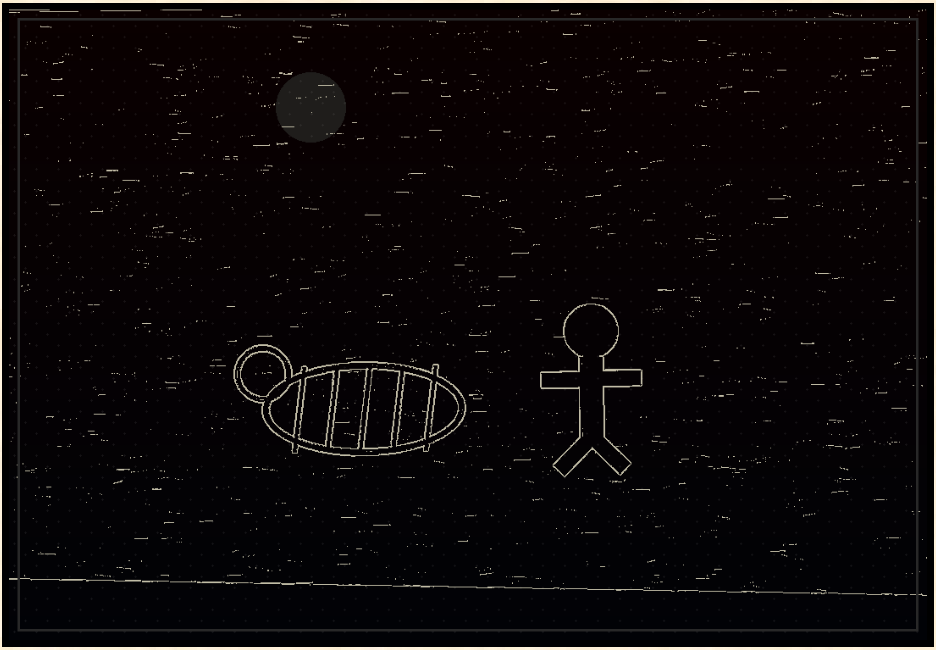

चित्र 16

आ तखन दीना ओ केलनि जे वीरता आ भक्तिक संगमपर भेल — मृत्युसँ जूझैत ओ अपने मारनिहार देवताक नाम लेलनि: 'जय राजा सलहेस!' — आ सलहेसक नाम लइते हुनक बाँहिमे सए बाघक बल उतरि आएल। एक झटका, दोसर, तेसर — आ खुनीमा बाघ माटि धऽ लेलक।

बाघ मरल पड़ल छल, दीना हाँफैत ठाढ़ छलाह — छाती खूने-खुनामे, मुदा माथ ऊँच। सलहेसक आँखिमे नोर आ गर्व एक्कहि संग — 'एहन वीरकेँ...' मुदा बुधनीक स्वर हुनक सोचकेँ काटि देलक। खेल एखन बाँकी छल।

अध्याय ९ : बगराक भेष

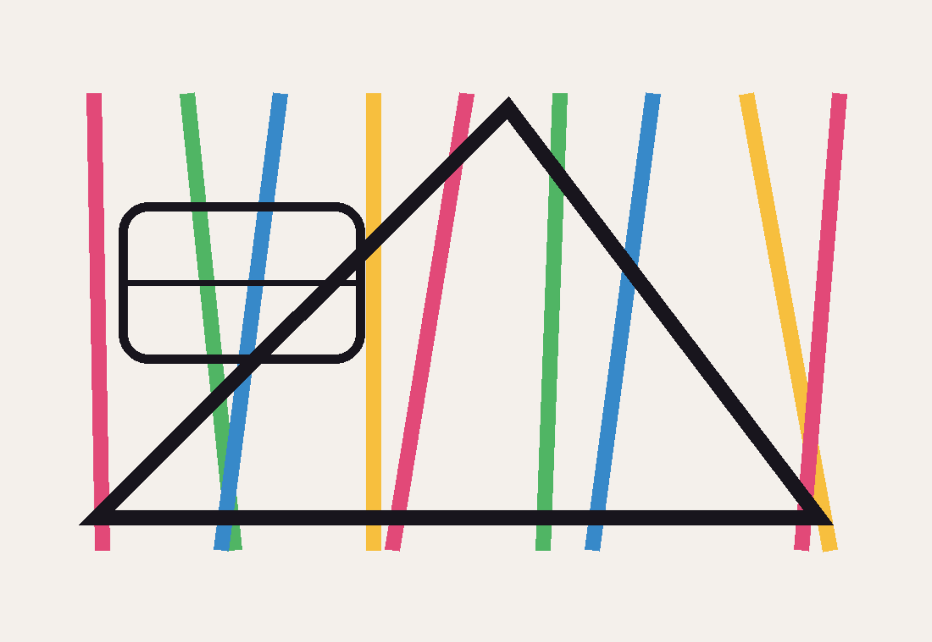

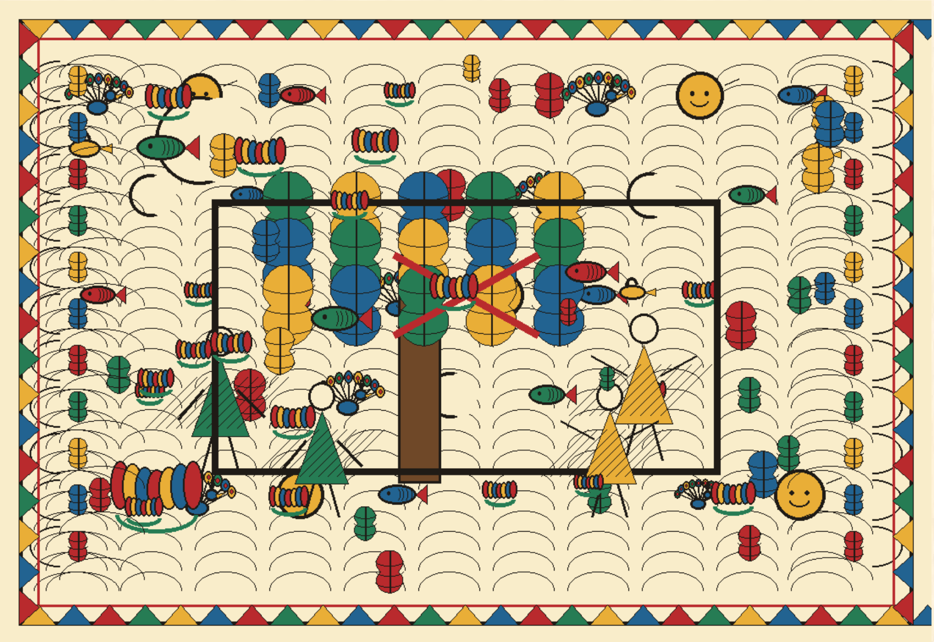

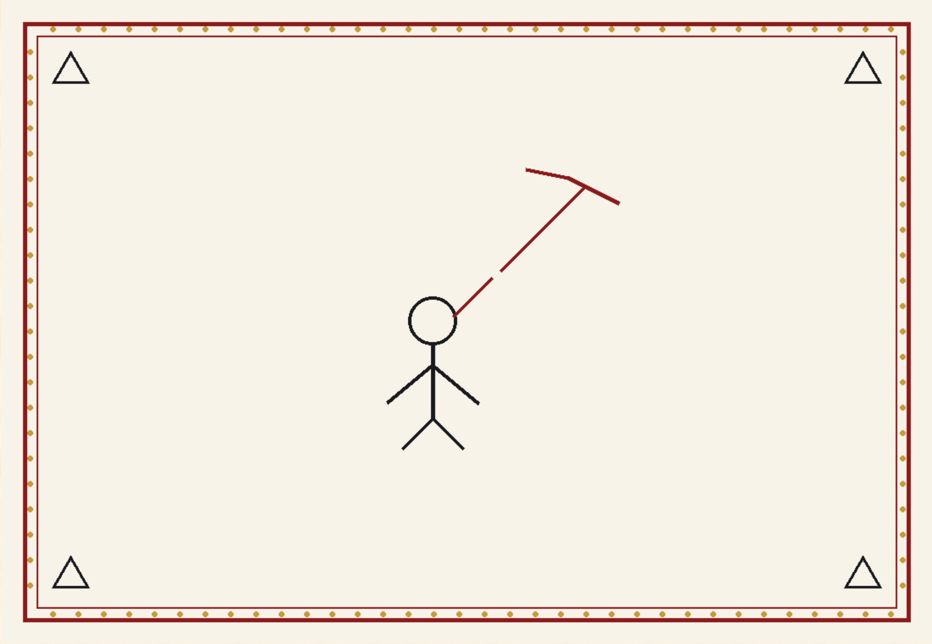

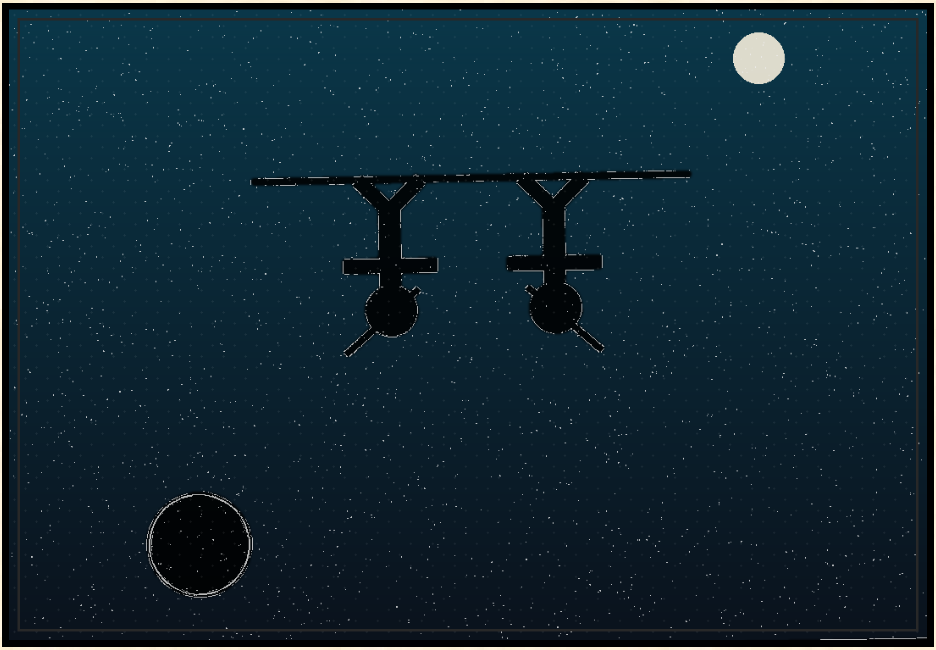

चित्र 17

बुधनी फेर बाजलि — आ एहि बेर ओकर स्वरमे जहर घोरल छल: 'भेष बदलैबाली, अपघात भेलि बाघिनकेँ बजाउ!'

सलहेस दीनाक वीरतासँ प्रसन्न छलाह — मुदा करथि त' करथि की? वचन गरा दबओने छल। हुनक मौन स्वीकृति बनि गेल, आ बोनक अन्हारसँ ओ आएलि — अपघात भेलि बाघिन, जे भेष बदलब जनैत छलि।

ओ बाघिन बनि कऽ नहि आएलि। ओ आएलि बगराक भेष बना कऽ — एकटा निर्दोष चिड़ैक रूपमे। कारण बुधनी बुझि गेल छलि: दीनाकेँ बल सँ नहि हराओल जा सकैत अछि, वरन् खाली छल सँ। वीरक आँखि शत्रु ताकैत अछि — चिड़ैपर के सन्देह करए?

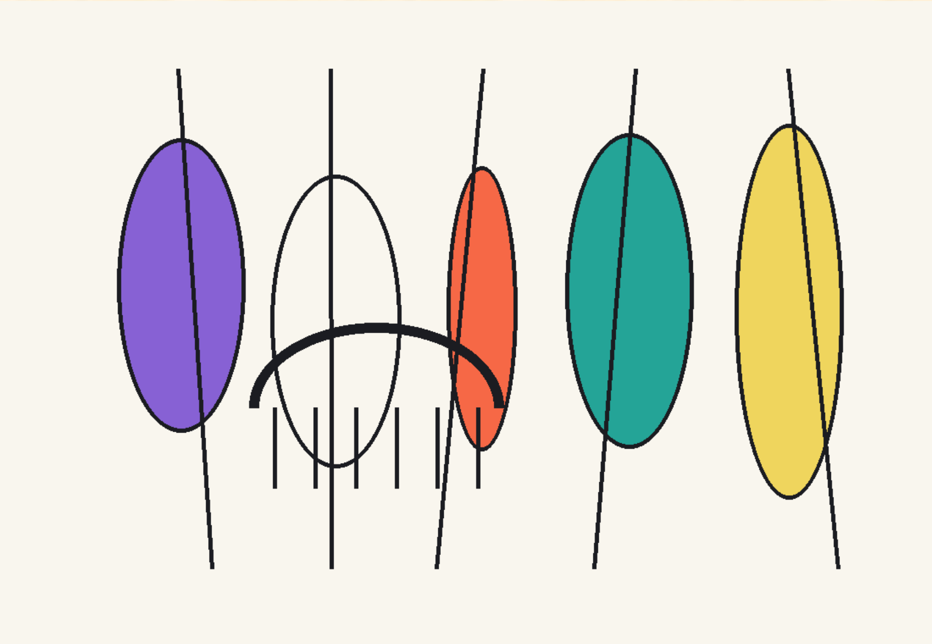

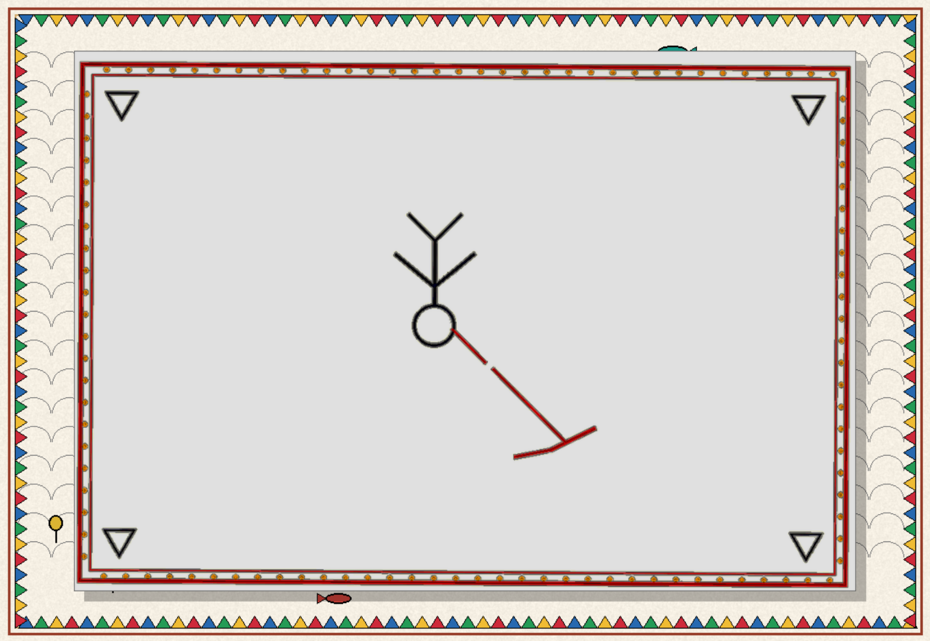

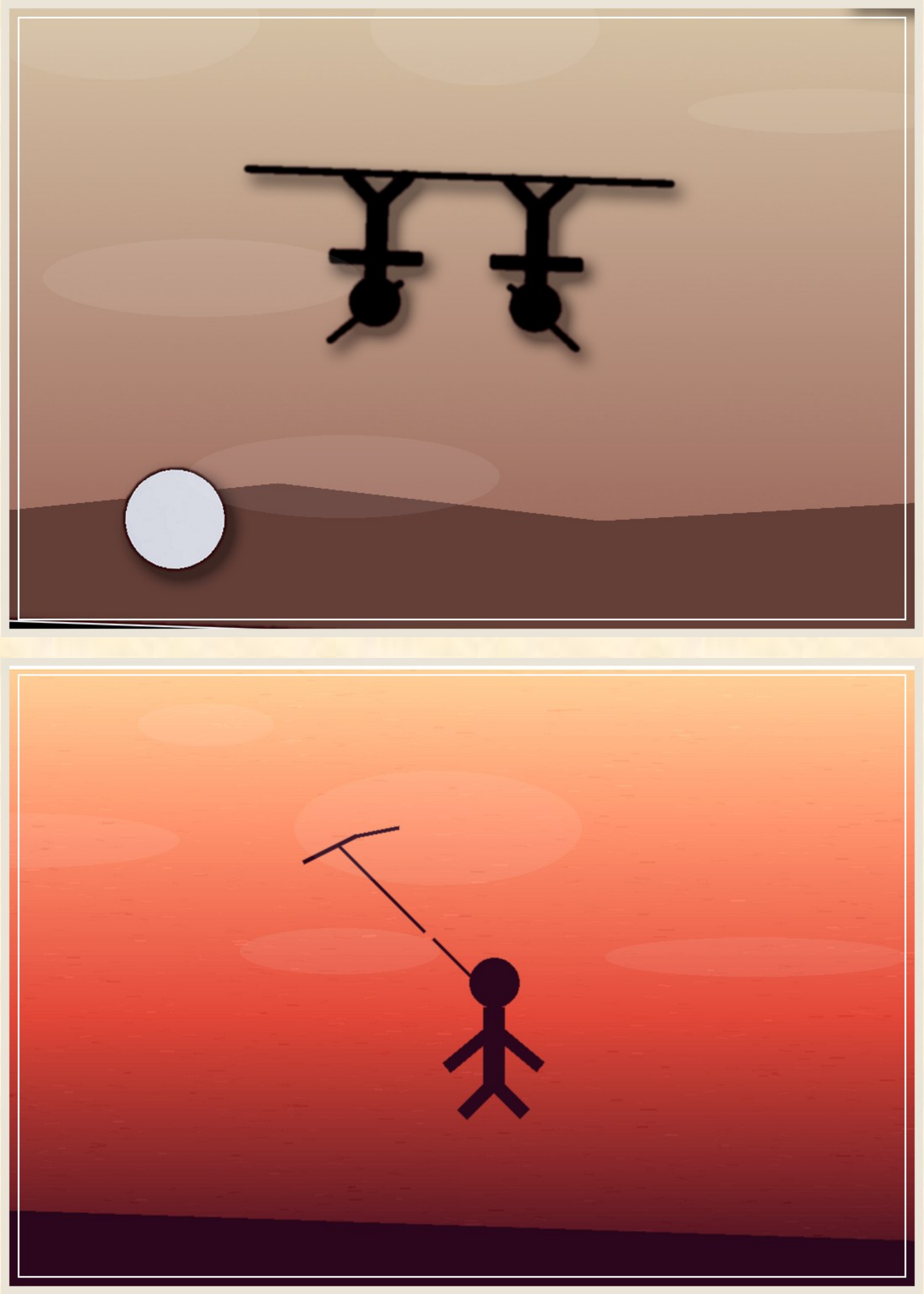

चित्र 18

दीना बाघ-वधक थकानमे ठाढ़ छलाह। माथपरसँ एकटा बगरा उड़ल — साधारण, उज्जर, निरीह। आ तखने, पिपनी झपकैत-झपकैत, ओ बगरा झपटल — आ अपन बिखाह चांगुरसँ दीनाकेँ मारि देलक।

पाँच मोनक कोदारि उठौनिहार, खुनीमा बाघकेँ बाँहिसँ पछाड़निहार दीना — एकटा चिड़ैक भेषक आगाँ खसि पड़लाह। बल छलसँ हारल। कटैया बोनक माटिपर मिथिलाक एकटा वीर सुतल — आ बोन, जे राति भरि चुप छल, आरो चुप भऽ गेल। एतेक चुप, जे ओ चुप्पी कोस भरि दूर भदरीक करेज धरि पहुँचि गेल।

अध्याय १० : भदरीक बिखिन्न मोन

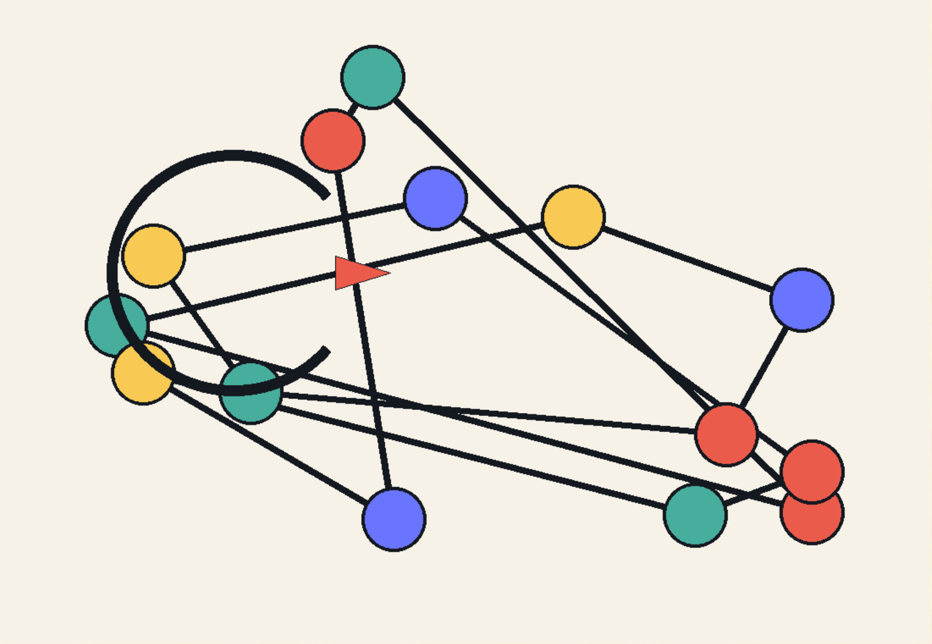

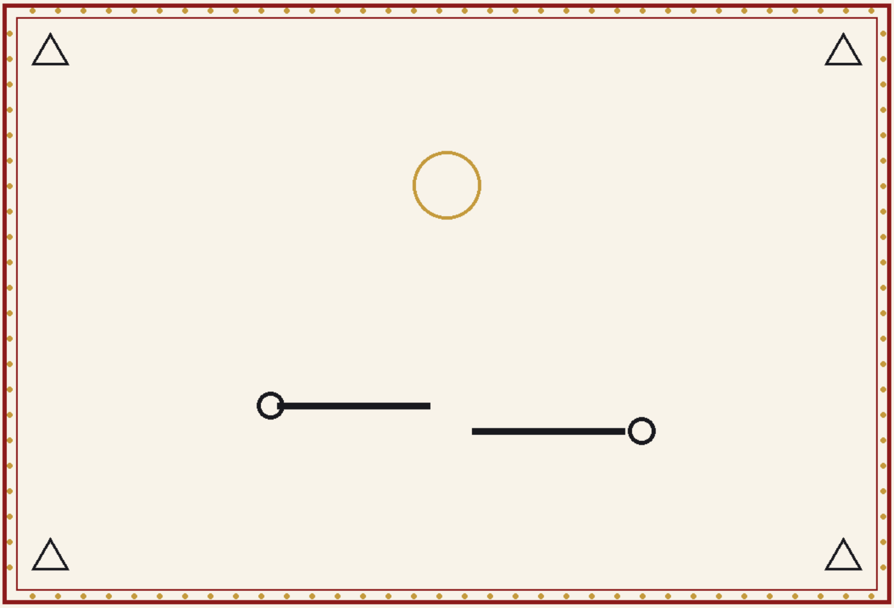

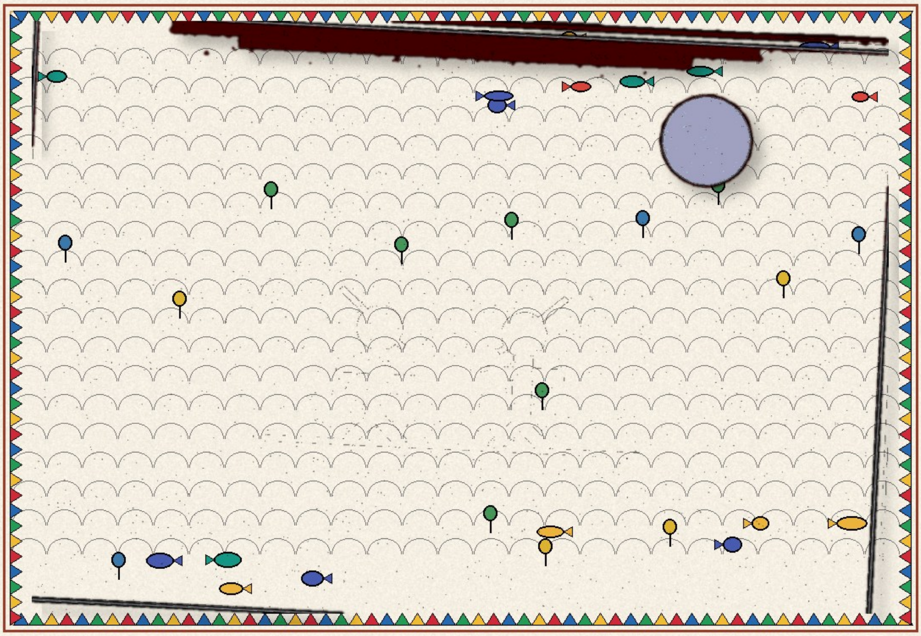

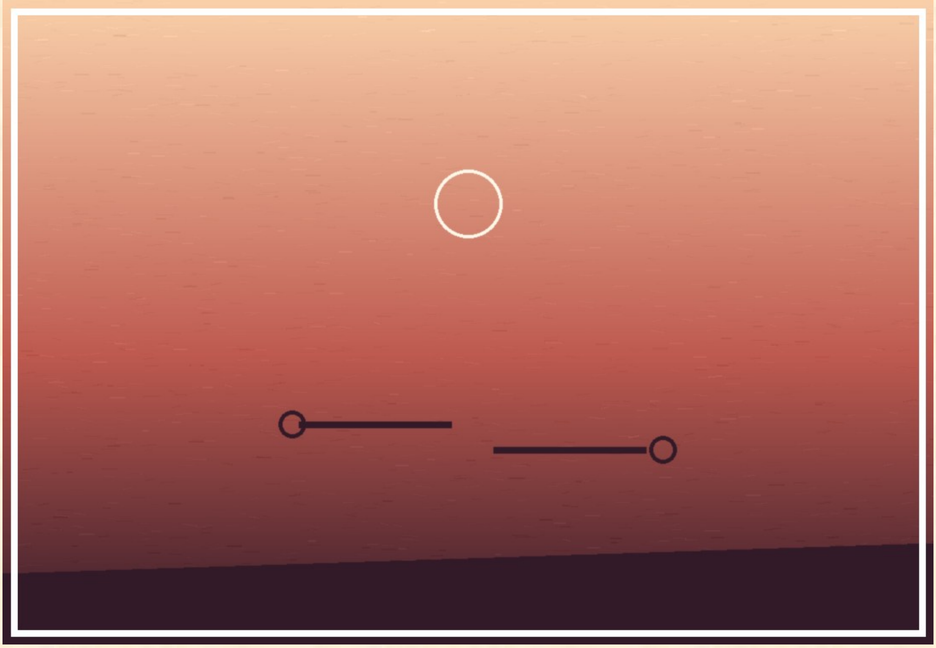

चित्र 19

ठीक ओही क्षण, बोनक दोसर छोरपर, भदरीक मोन बिखिन्न सन भेलैक। बिनु कारण करेज धक्-धक् करए लागल, हाथसँ धनुष ससरए लागल। भाइ-भाइक बीच एकटा एहन तार बान्हल रहैत छै जे आँखिसँ नहि देखाइत — मुदा जखन एक छोरपर आघात होइत छै, दोसर छोर थरथरा उठैत अछि।

'बहुरन मामा,' भदरी बजलाह, आ हुनक स्वर हुनके अनचिन्हार लगलनि, 'हम जा रहल छी भैया लग। अहाँ गाछपर बैसि कऽ प्रतीक्षा करू।'

मामा किछु कहितथि, ताहिसँ पहिने भदरी अन्हारमे समा गेलाह। बूढ़ बहुरन गाछपर चढ़ि गेलाह — आ ओतयसँ, ओहि रातिक सभसँ असहाय गवाह बनि, बोनक चुप्पी सुनैत रहलाह।

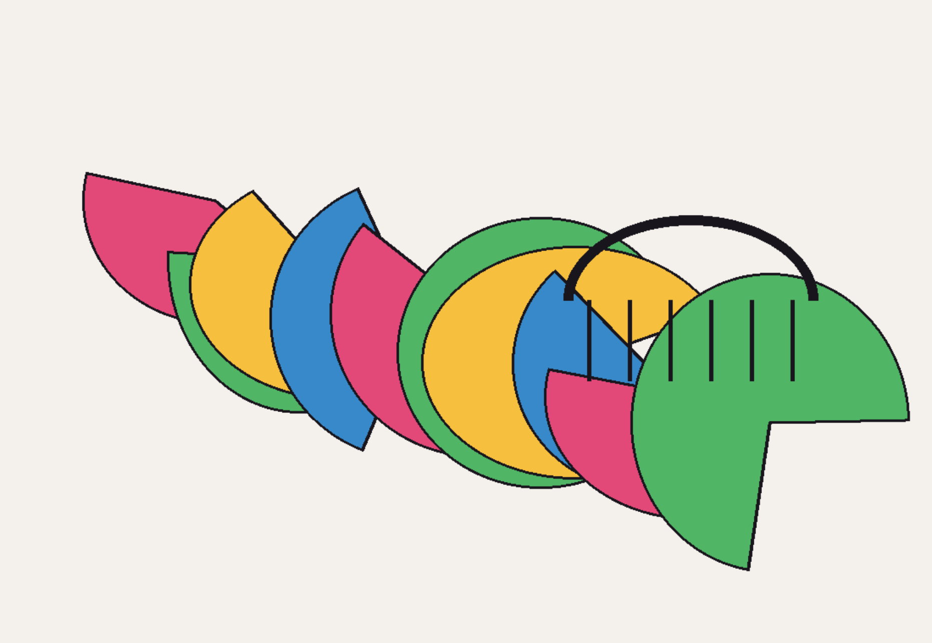

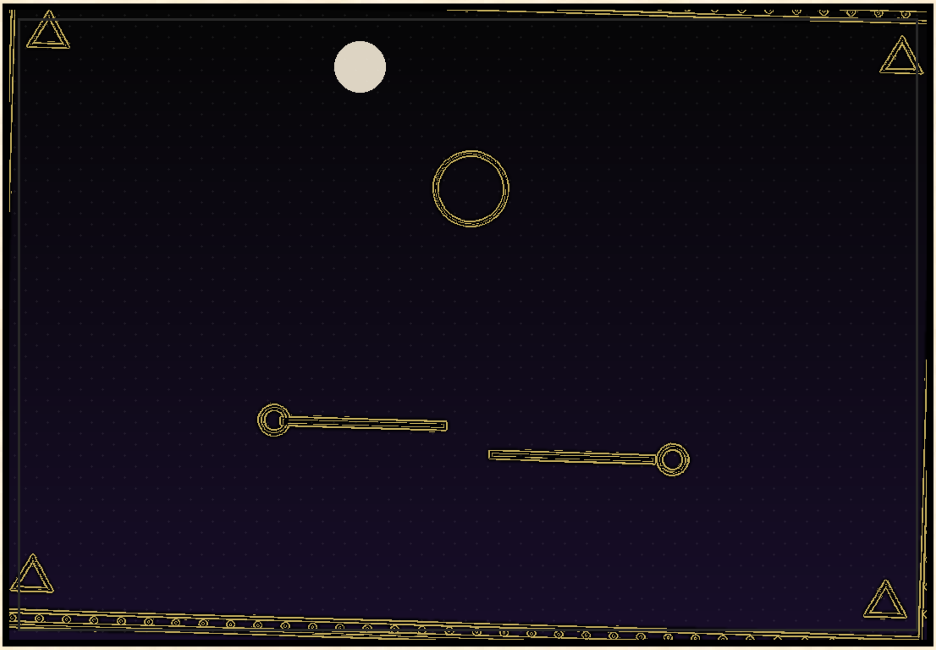

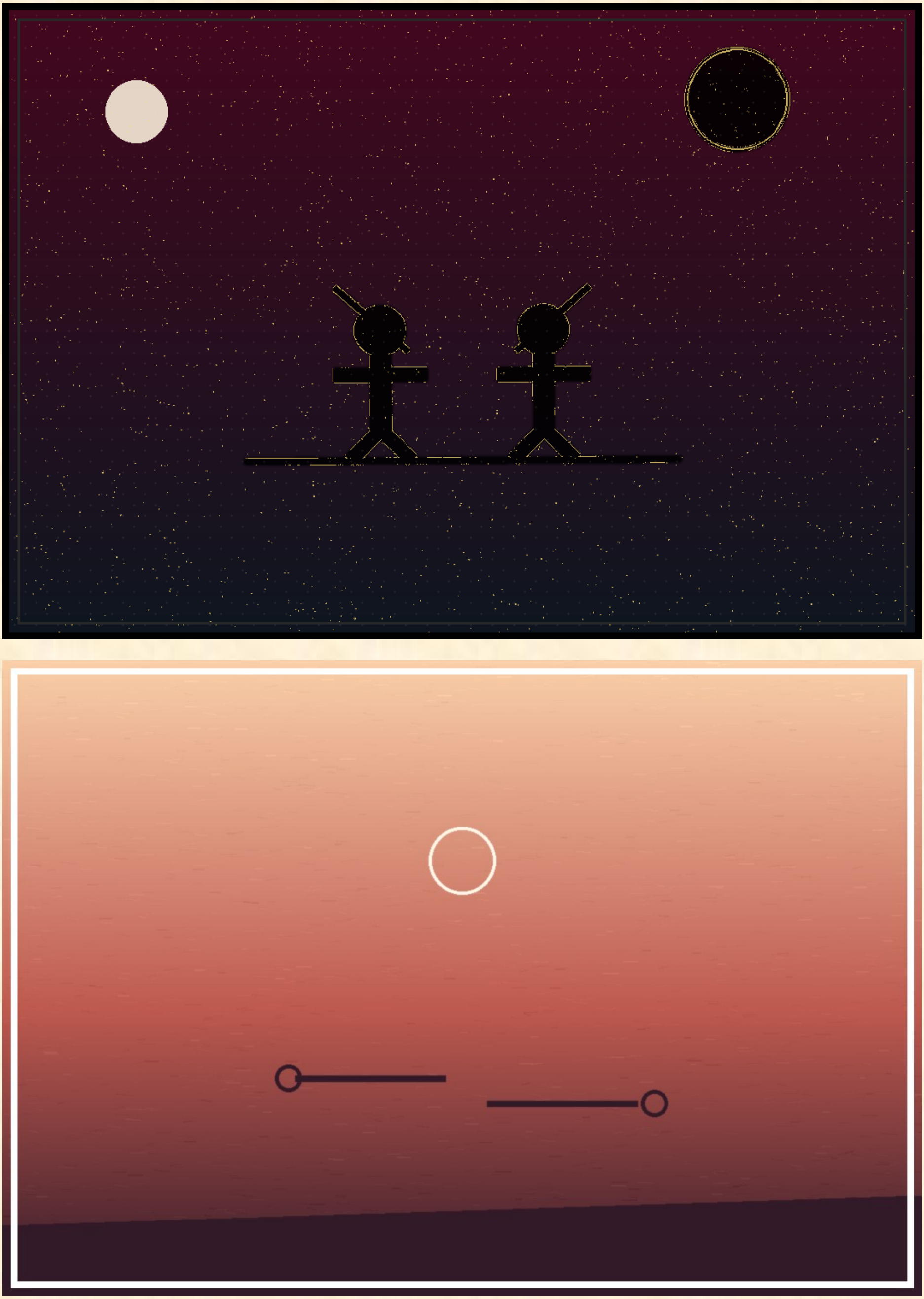

चित्र 20

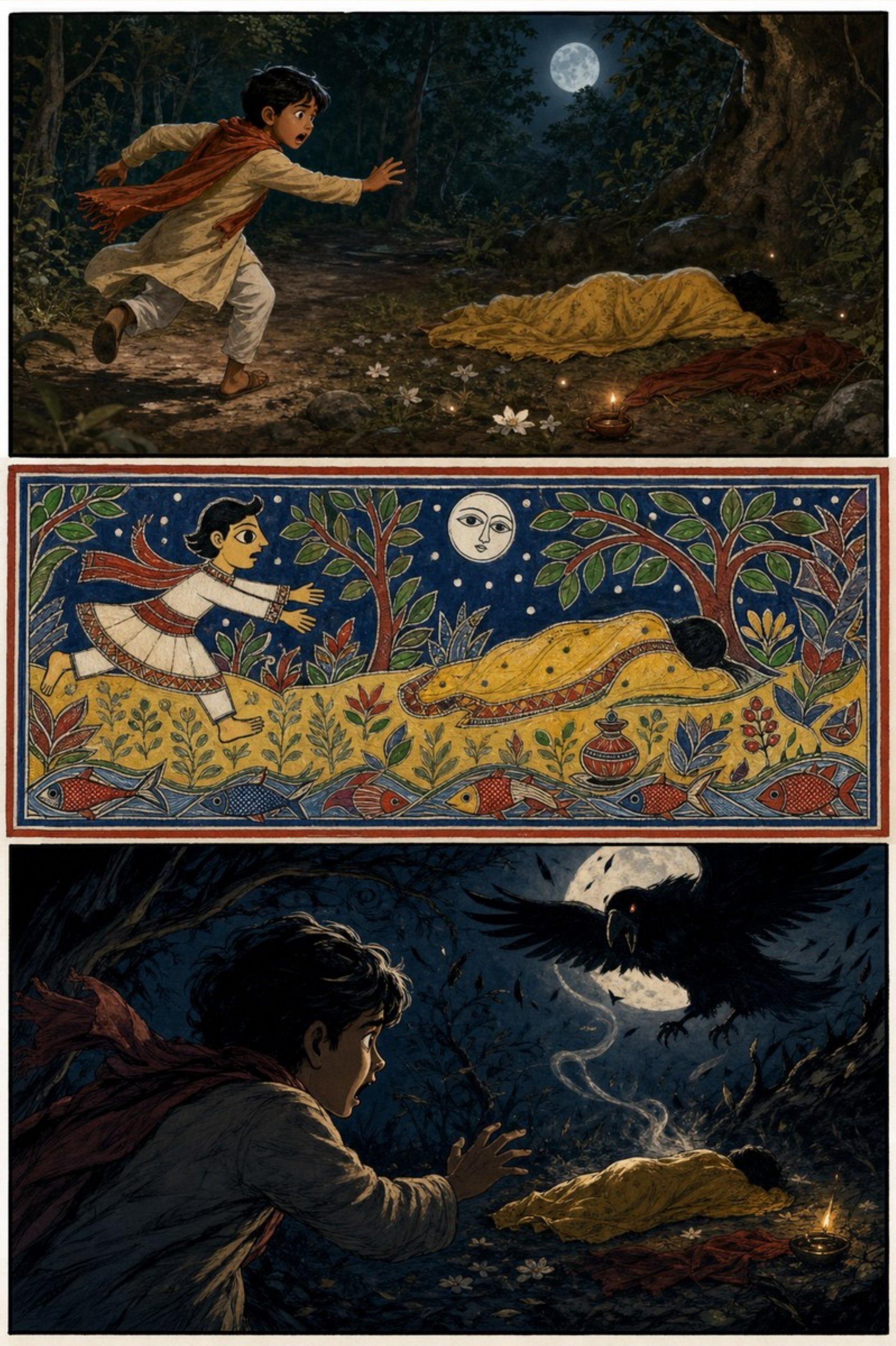

भदरी भाइक लहास लग पहुँचलाह। दीना माटिपर पड़ल छलाह — शान्त, जेना खेतक काज सम्पन्न कऽ सुतल होथि। भदरीक भीतरसँ जे चीत्कार उठल, से बाहर नहि आबि सकल — कारण ठीक तखने वैह बहुरुपिया बगरा फेर झपटल।

आ हुनको मारि देलक। दुनू भाइ — जे संगे जनमलाह, संगे कोदारि उठओलनि, संगे जमीन्दारसँ लड़लाह — संगहि कटैया बोनक माटिपर सुति रहलाह। बुधनी घर घुरि गेलि — बदला पूरा भेल। मुदा बदला आ न्यायमे एकटा अन्तर होइत छै: बदला घुरि कऽ घर जाइत अछि, न्याय घुरि कऽ आबैत अछि। आ ई खिस्सा एखन आधे भेल छल।

अध्याय ११ : आत्माक संदेश

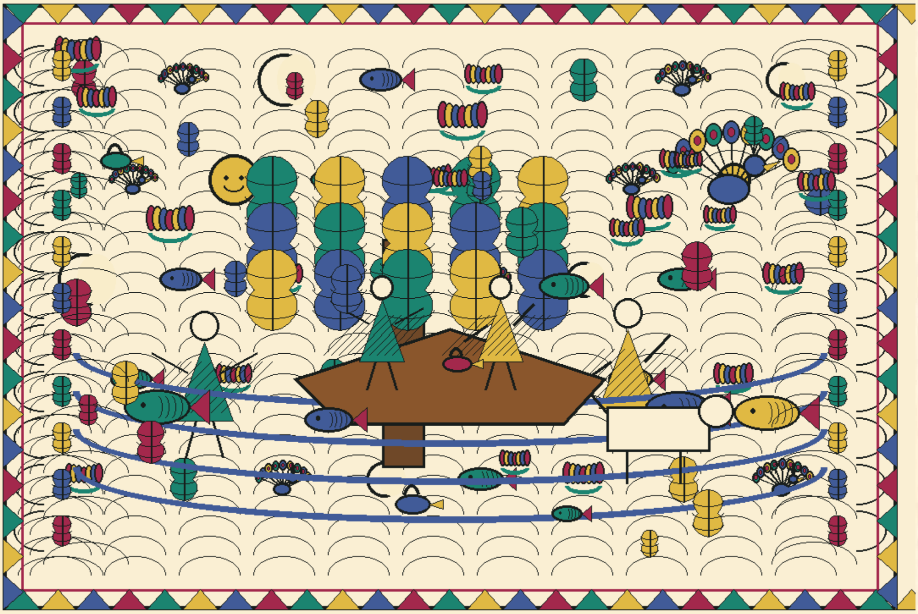

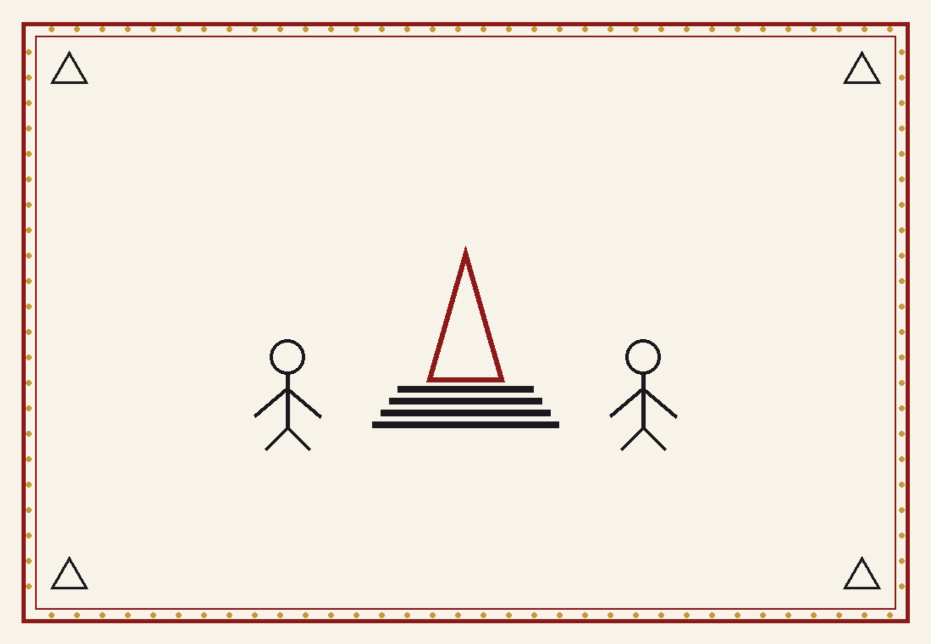

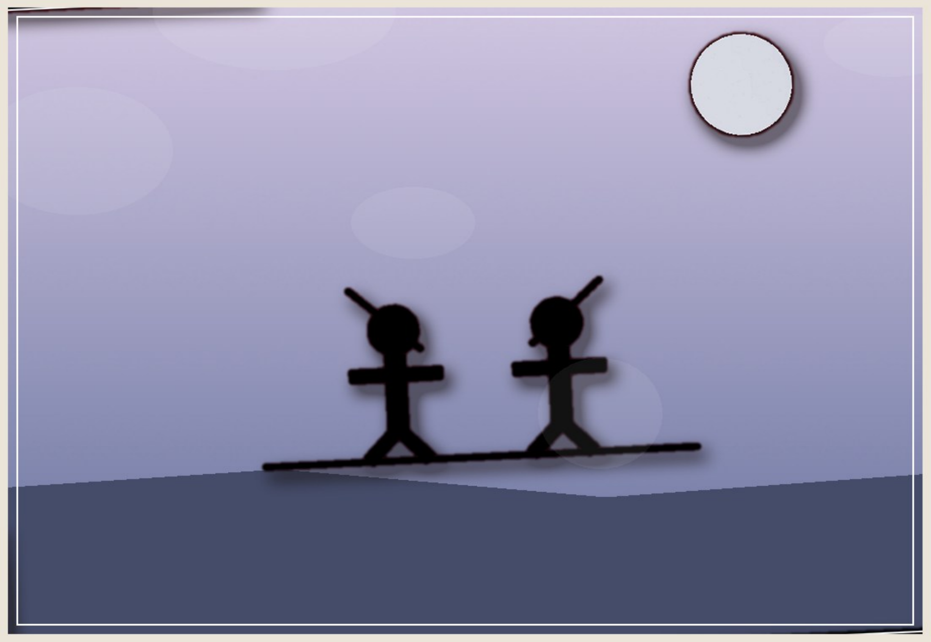

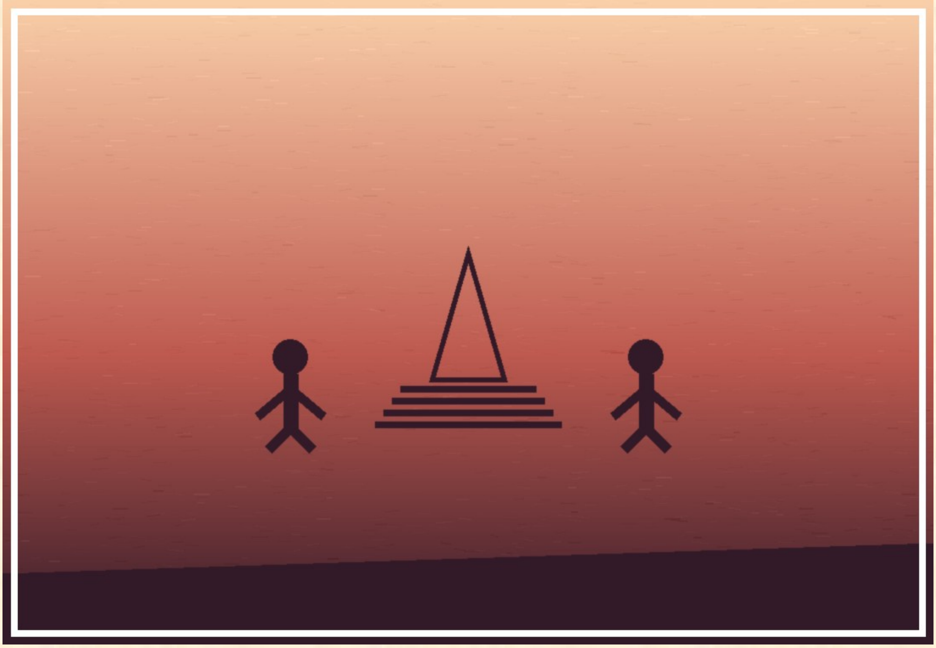

चित्र 21

मुदा दीना-भदरी सन वीरक कथा देहक संग खतम नहि होइत अछि। दुनू भाइक आत्मा दू गोटेक शरीरमे पैसि गेल — आ ओही रूपे दुनू बहुरन मामा लग पहुँचलाह।

'अहाँक दुनू भागिन मारल गेलाह,' आत्मा-रूप बजलाह, 'गाम खबरि करू। लहास लऽ जाउ। श्राद्ध करबाउ।' — बूढ़ मामाक हाथसँ धनुष खसि पड़ल। जाहि गाछपर ओ प्रतीक्षा करैत छलाह, ओही गाछ तर हुनक दुनू भागिनक अन्तिम खबरि आबि गेल।

ताबत जीतन यादव सेहो पहुँचि गेलाह। दोसक लहास देखि जीतनक जे दशा भेल, से लिखबाक शब्द मैथिलीओ लग नहि अछि। मुदा जीतन कानि कऽ बैसि नहि रहलाह — दोस्तीक अन्तिम धर्म निमाहलनि: दुनू गोटेक लहास गाम लऽ गेलाह, आ स्वयं अग्नि देलनि।

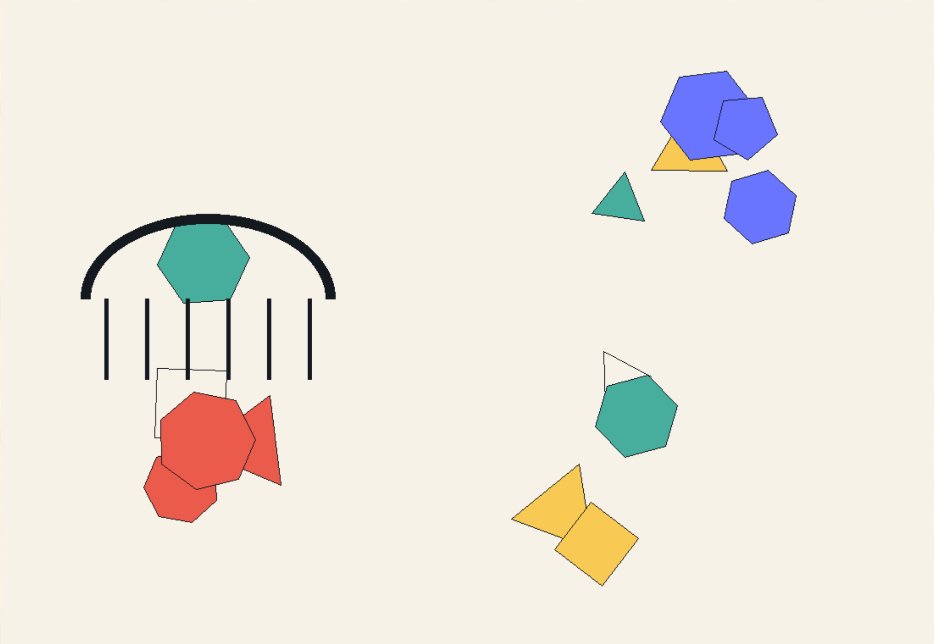

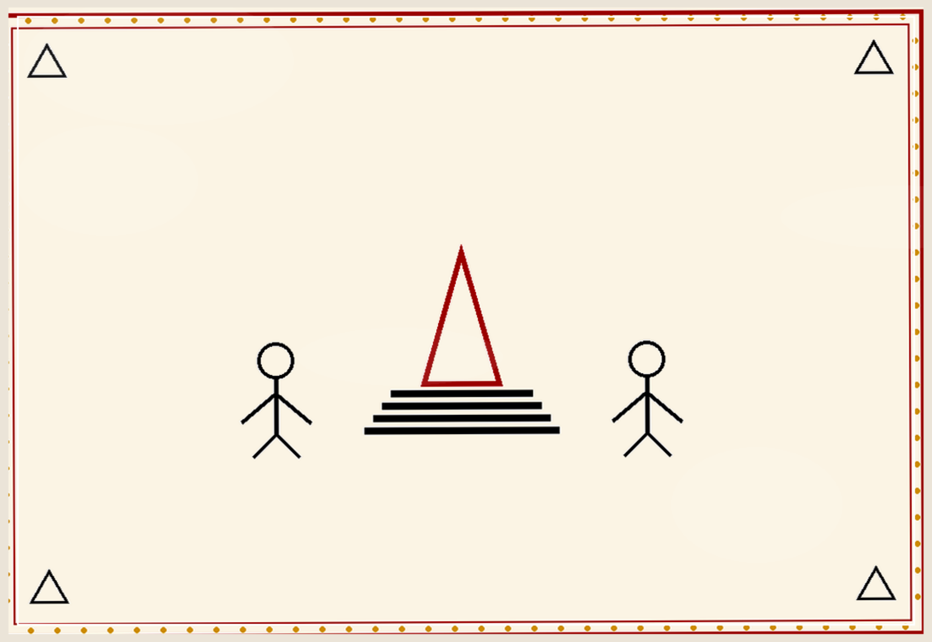

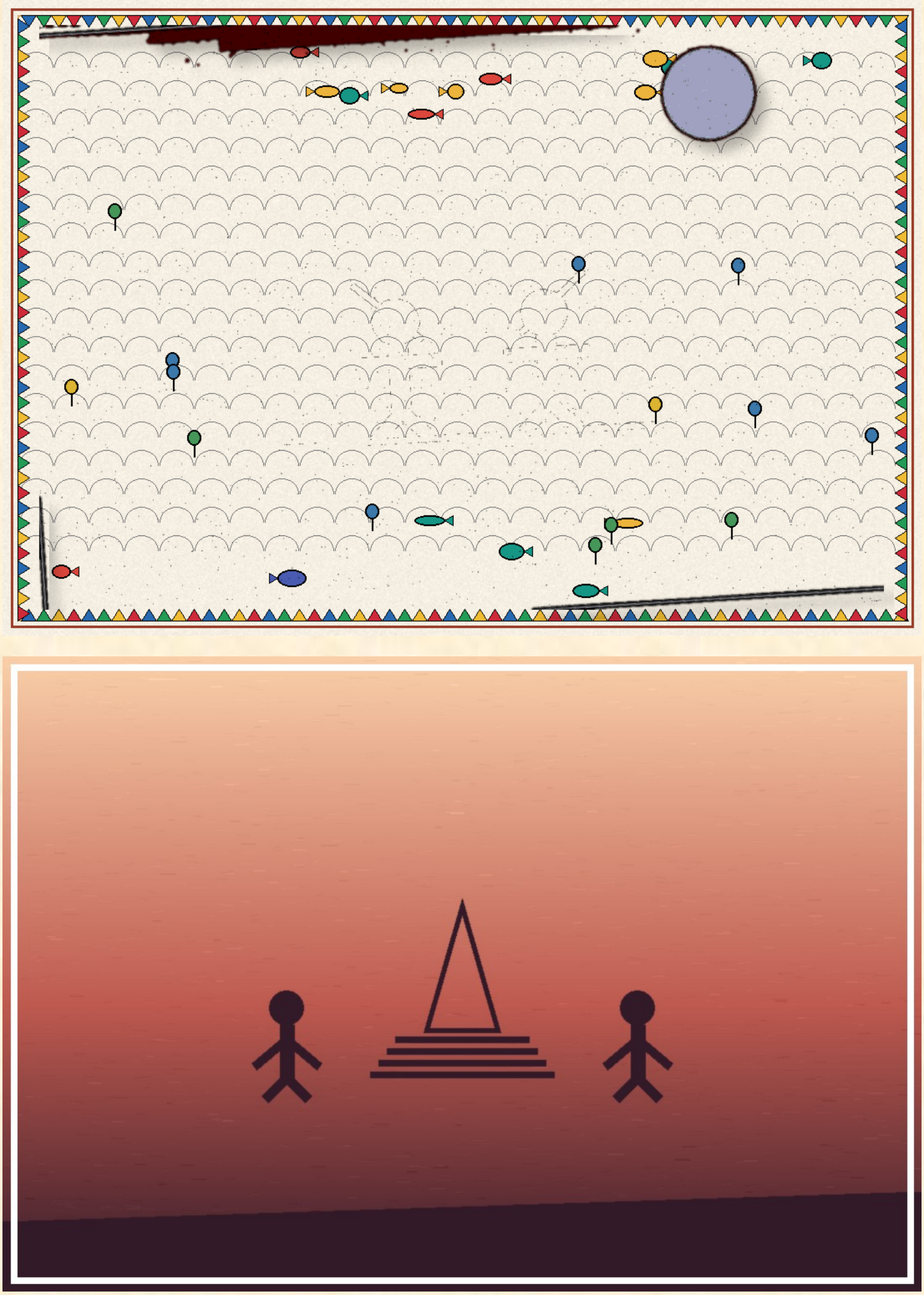

चित्र 22

जोगियानगरमे ओहि दिन कोनो चूल्हि नहि जरल। जरल खाली दूटा चिता — आ हुनका लगमे ठाढ़ि एकटा माए, जकर दुनू आँखिक इजोत एक्कहि रातिमे मिझा गेल छल।

निरसो — दीना-भदरीक माए। बेटा गेलाह, आब श्राद्धक बेर — मुदा श्राद्ध लेल पाइये नहि! घरमे की छल? किछु तूर, किछु केथरी, आ बरखो पुरान अभाव। माए की करतीह? — आ एतयसँ शुरू होइत अछि एहि गाथाक ओ अध्याय, जतय दुख चमत्कार बनि जाइत अछि।

अध्याय १२ : तूर आ बताशा

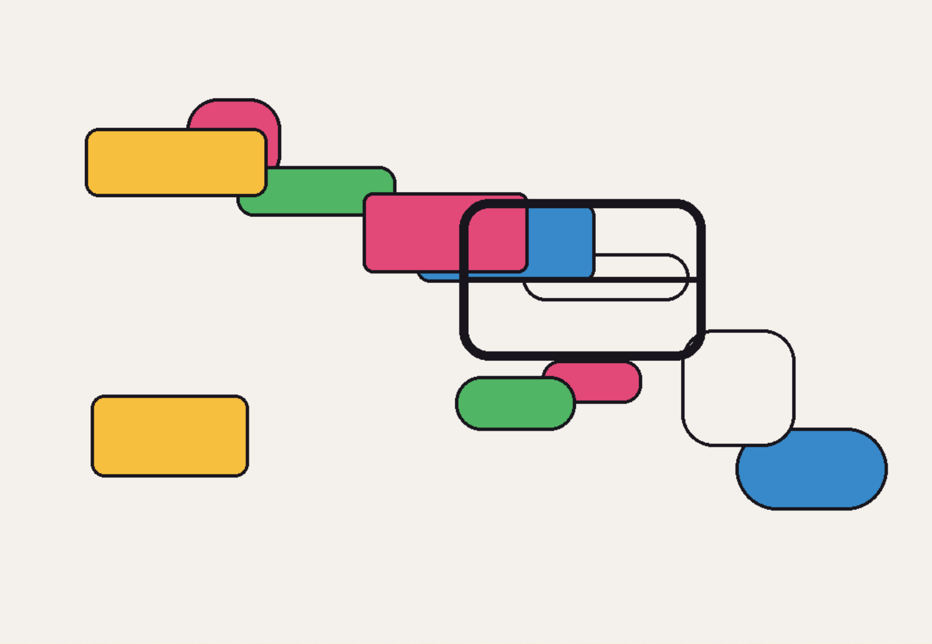

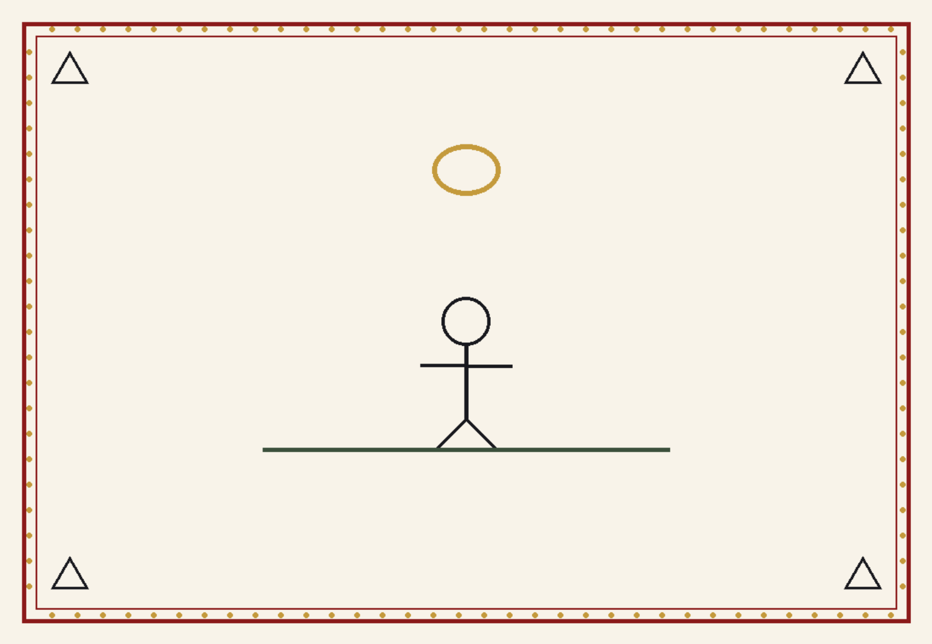

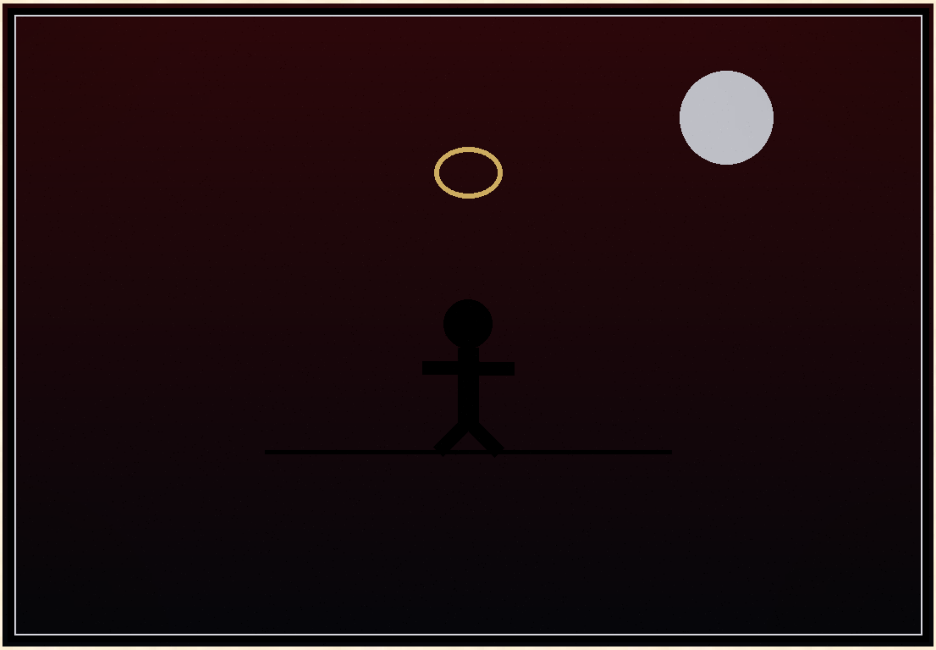

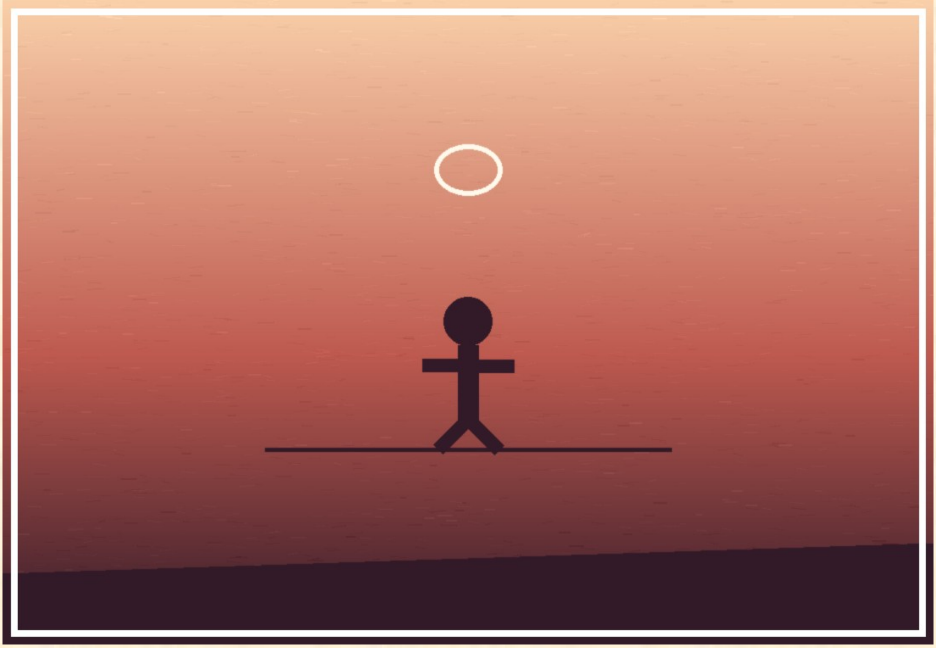

चित्र 23

राति मे निरसोकेँ सपना भेलनि। सपनामे दुनू बेटा एलाह — 'माए, कानू नहि। घरमे तूर अछि। ओकरा बनीमा लग लऽ जाउ। ओकर बदलामे ओ जे देत, ताहिसँ हमर श्राद्ध भऽ जाएत।'

तूर — रूइया, जकर भाव कौड़ीक। ओहिसँ श्राद्ध? मुदा बेटाक बोल माए लेल वेदवाक्य। भोर होइते निरसो तूरक गट्ठर माथपर उठा बनीमाक दोकान गेलीह।

बनीमा तूर देखि हँसल — हँसी ओ, जे गरीबक चीजपर धनिक हँसैत अछि। 'एहि तूरक बदला की लेब, बुढ़िया?' ओ तराजू उठौलक — एक दिस तूर राखलक, दोसर दिस बताशा। सोचने छल, मुट्ठी भरि बताशामे टरि जाएत।

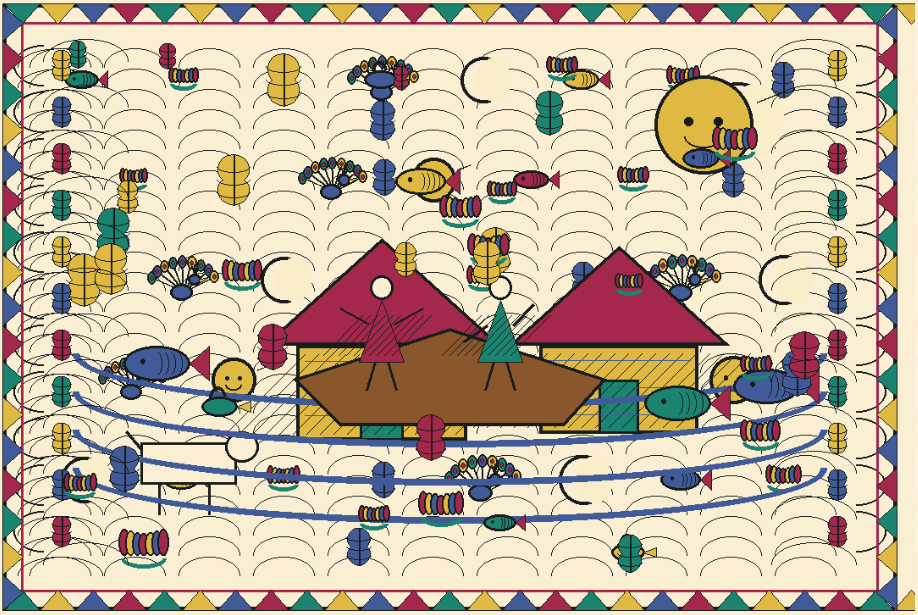

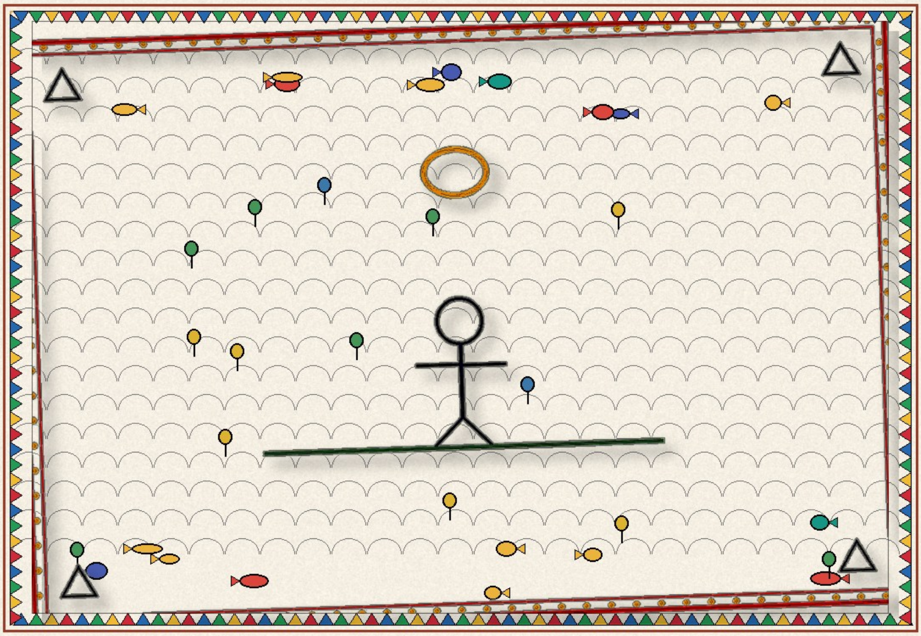

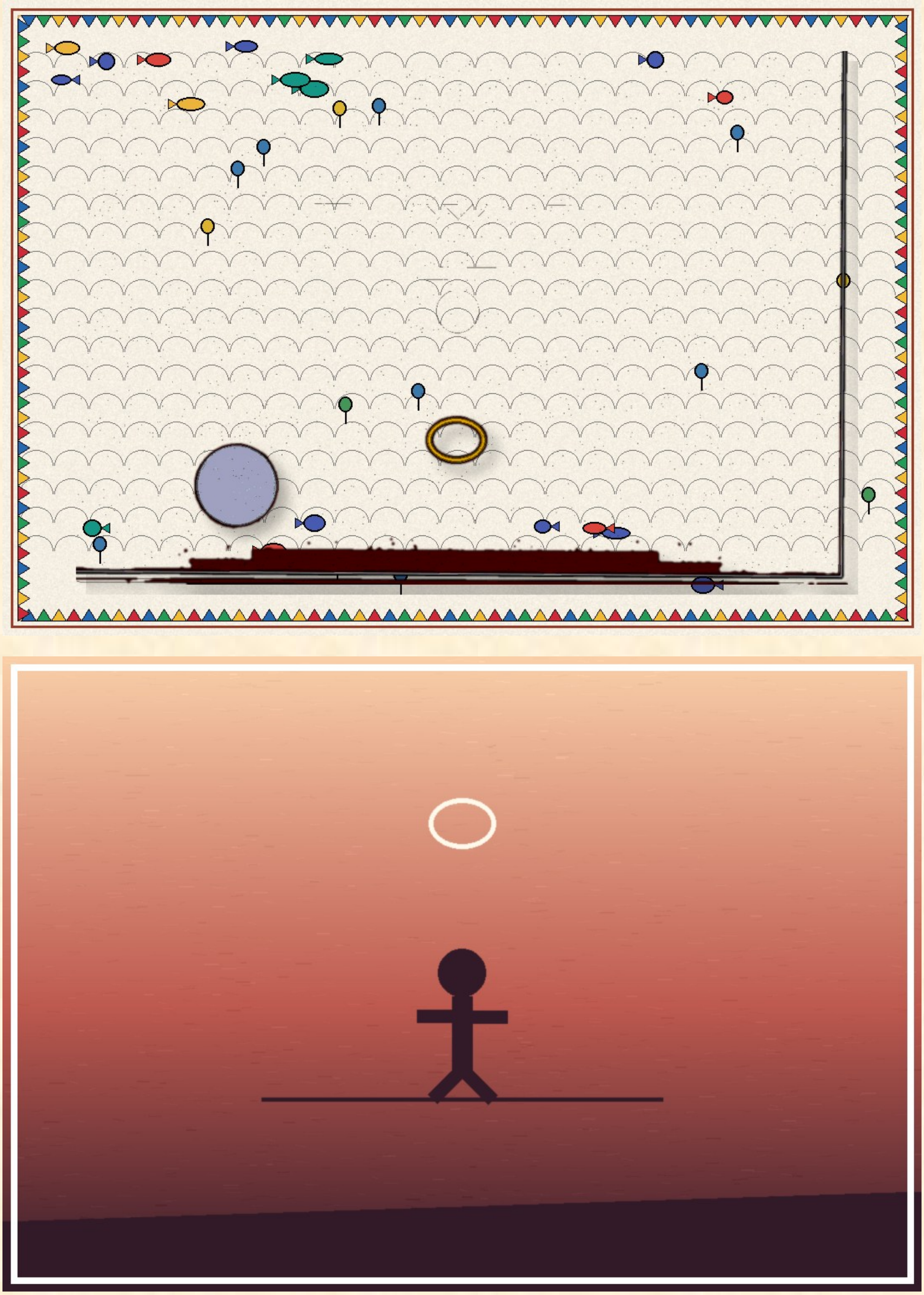

चित्र 24

मुदा ई की?! बताशा चढ़ल, पलड़ा नहि उठल। आर बताशा — नहि उठल। मिसरी, चाउर, दालि, गुड़ — भरि दोकानक समान तौला गेल, मुदा तूरबला पलड़ा टस-सँ-मस नहि! बनीमाक हँसी सुखा गेल, हाथ काँपए लागल। ओकरा की बुझल — ओहि पलड़ापर तूर नहि, दीना-भदरी अपने बैसल छलाह।

भरि दोकान खाली भऽ गेल, आ पलड़ा झुकले रहल। बनीमा हाथ जोड़ि कऽ ठाढ़ भऽ गेल — 'माता! ई तूर साधारण नहि!' ओ निरसोक संग बोनिहार आ समान पठा देलक — गाड़ी भरि। जे माए भोरमे खाली हाथ निकलल छलीह, से साँझखन बेटा सभक श्राद्धक पूरा सरञ्जाम नेने घुरलीह। मरलोपर बेटा माएक लाज राखि लेलनि।

अध्याय १३ : जेवार आ हंसाक आँखि

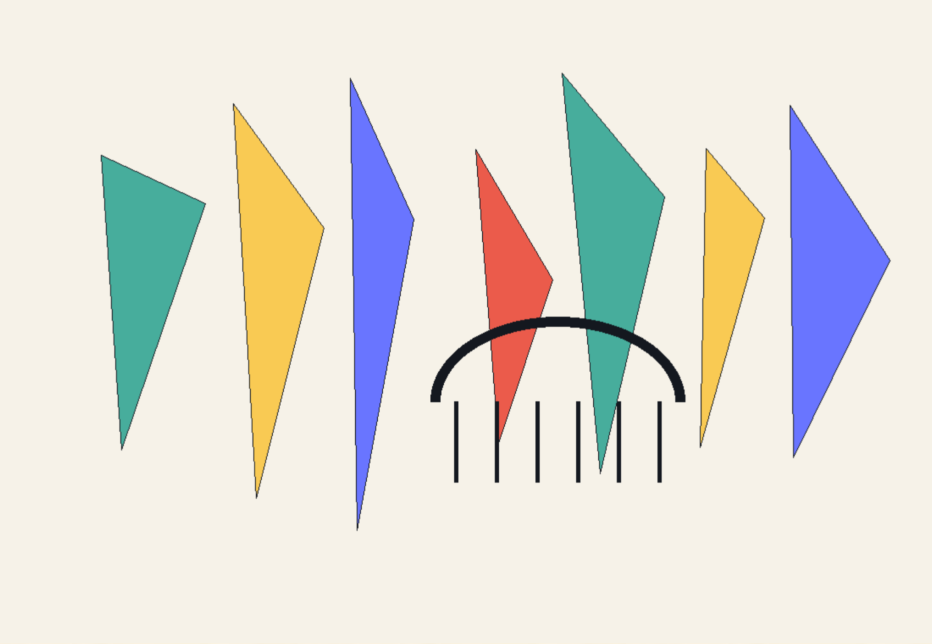

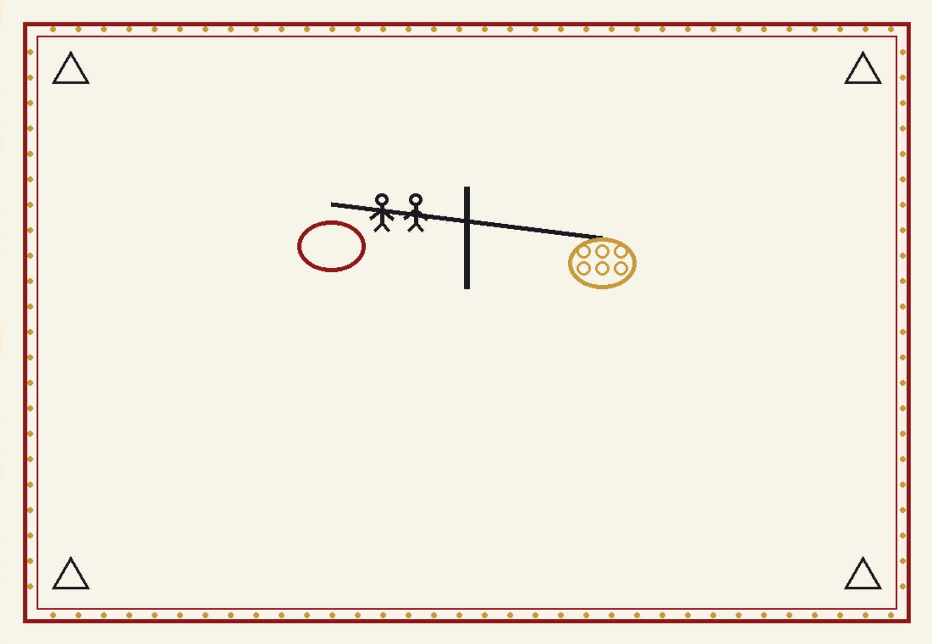

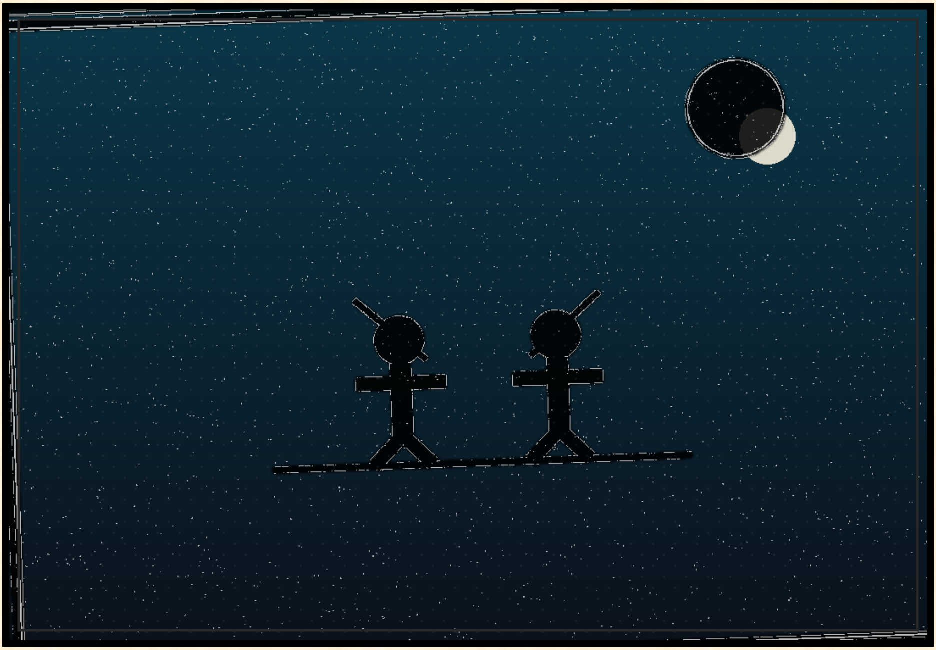

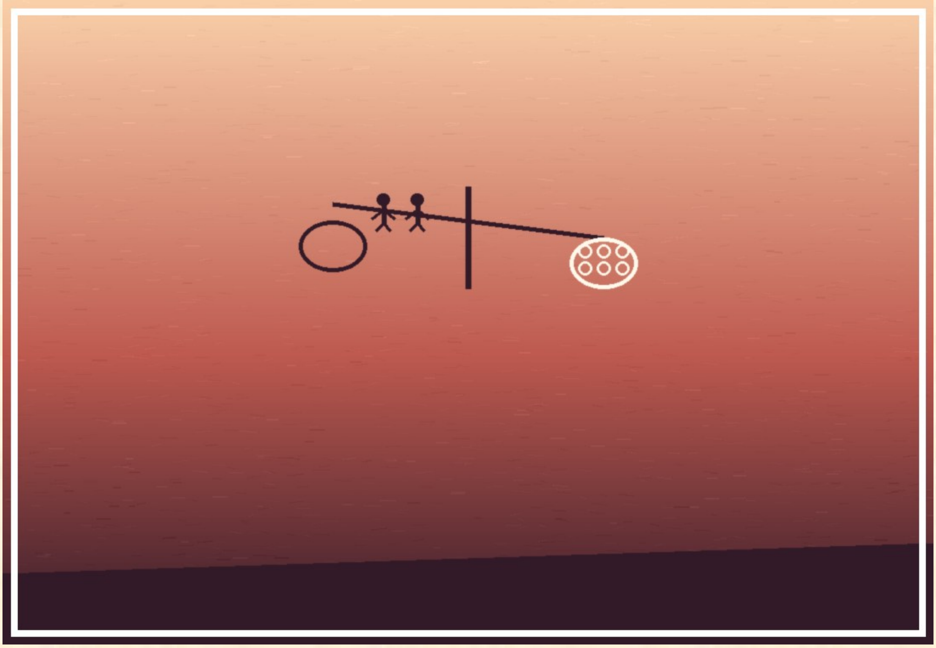

चित्र 25

निरसो जेवार देलनि — गाम-समाज भोज पर बैसल। आ ओहि भोजमे दूटा अनचिन्हार बारिक सभकेँ पड़सि-पड़सि कऽ खुआबए लागल। हाथ एहन चलैत छल जेना बरखोक अभ्यास हो; आ परसैत काल आँखि एहन झुकल, जेना केओ चिन्हि ने लिअए।

चिन्हबे केलक — मुदा से केओ आर नहि। भोजक बीच दीना एक क्षण लेल असल रूपमे आबि गेलाह — आ ठीक ओही क्षण हुनकर कनियाँ हंसाक आँखि हुनकापर पड़ि गेल। पत्नीक आँखि — जे भेषक सात परदा फाड़ि कऽ देखि लैत अछि।

हंसा दौड़लि निरसो लग — 'माए! बारिक... ओ त' अपने...!' मुदा निरसो गप नहि मानलनि। मानितथि कोना? जइ बेटाकेँ चितापर चढ़बओने होथि, से 'बेटा परसि रहल छथि' कोना पतिआथि? दुखक एकटा निर्ममता ईहो — जे ओ आसक दरबज्जा पहिने बन्द करैत अछि।

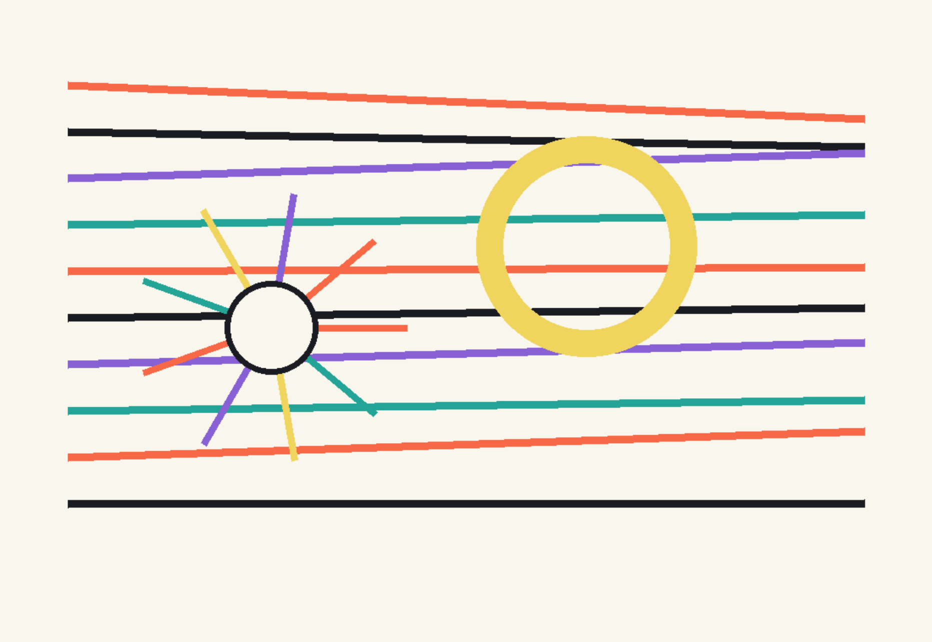

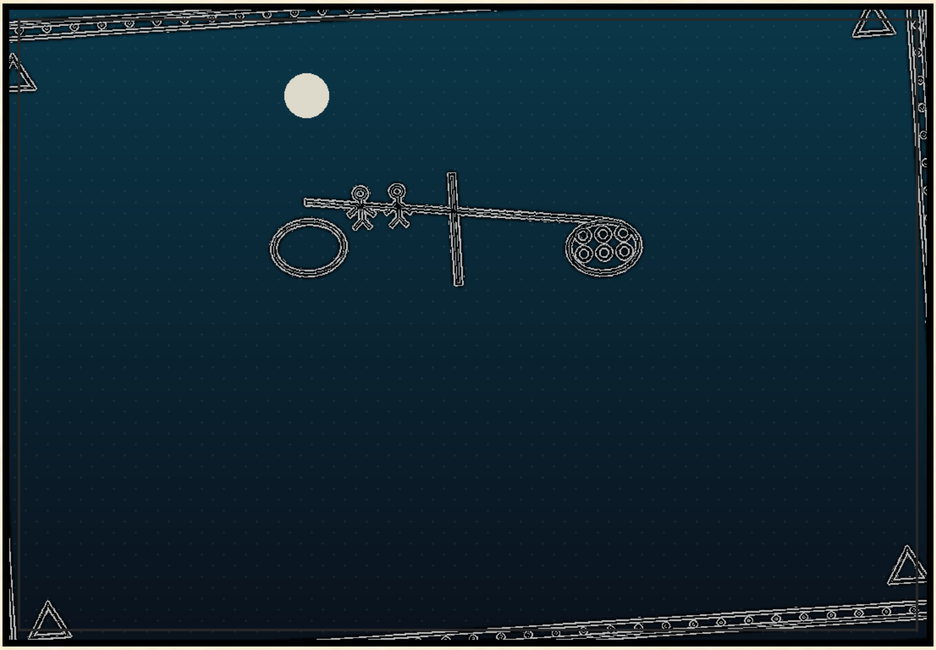

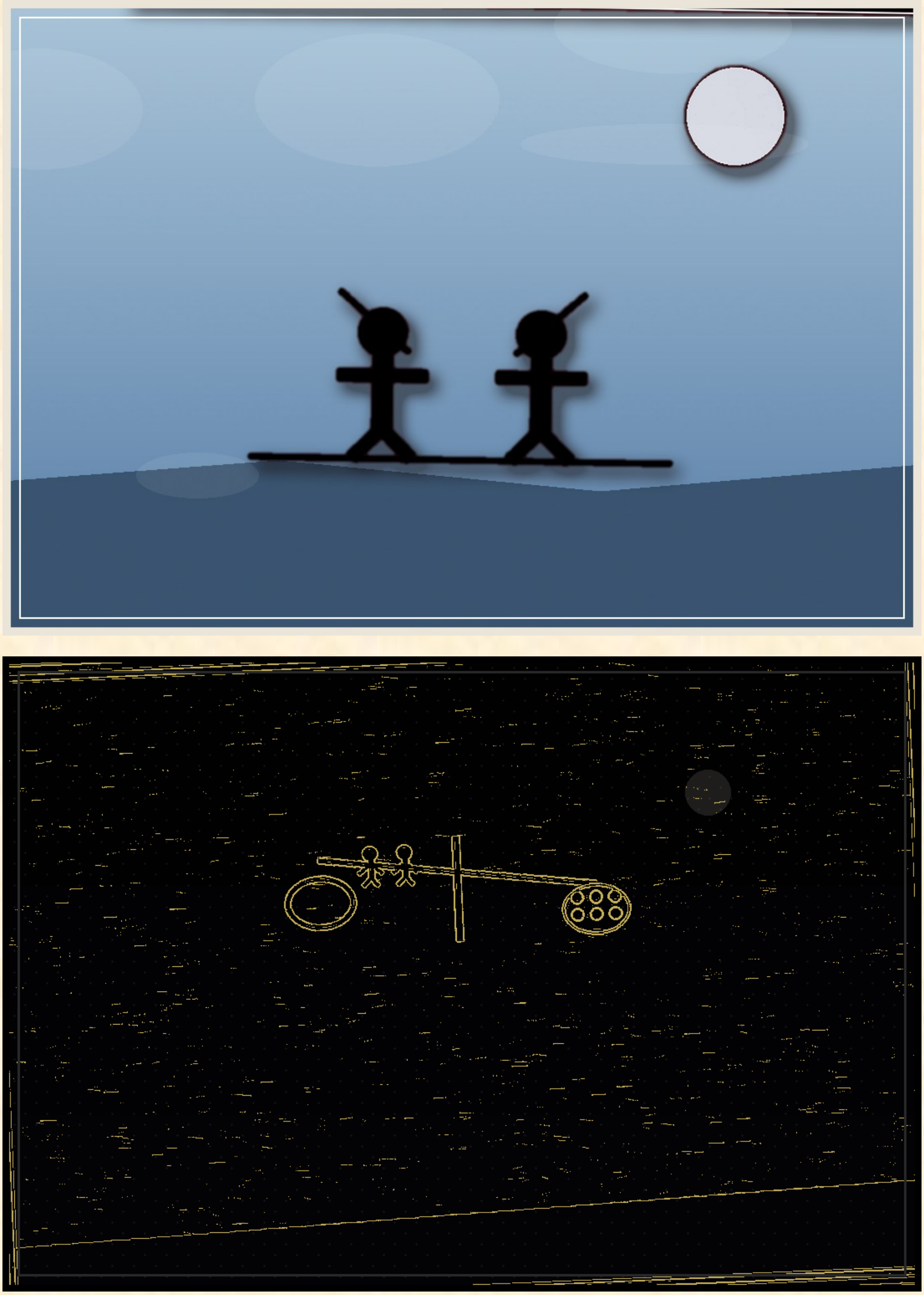

चित्र 26

हंसा हारलि नहि। कहलनि — 'अपन छाती सात तह कपड़ासँ बान्हि लिअ, आ ओकरा लग चलू जे दीना बनि गेल छल।' निरसो सात तह कपड़ा बान्हि ओतय गेलीह — आ माएक करेज बेटाकेँ चिन्हि गेल: सात तह कपड़ा फाड़ि दूध निकलल आ सोझे दीना-भदरीक मुँहमे चलि गेल।

माएक दूध — संसारक सभसँ पैघ प्रमाण। आ ओही क्षण, माएक दूधक अन्तिम अरघ पीबि, दुनू भाइ बिला गेलाह। एहि बेर कोनो बगरा नहि, कोनो छल नहि — खाली एकटा माए छलि, जकर आँचर भीजल छल, आ दूटा बेटा, जे आब देहसँ आगाँक यात्रापर छलाह।

अध्याय १४ : मोरंगक धर्मयुद्ध

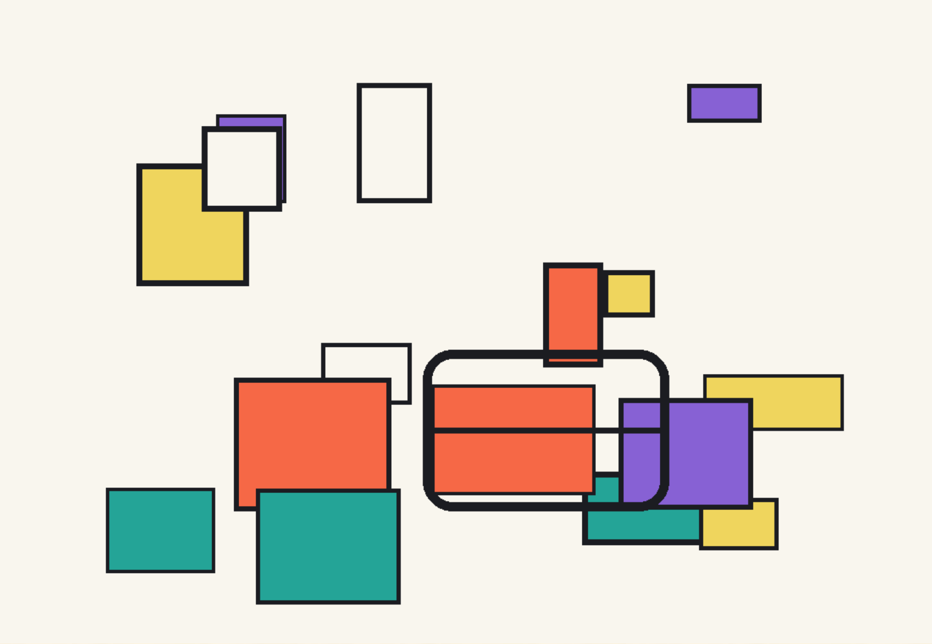

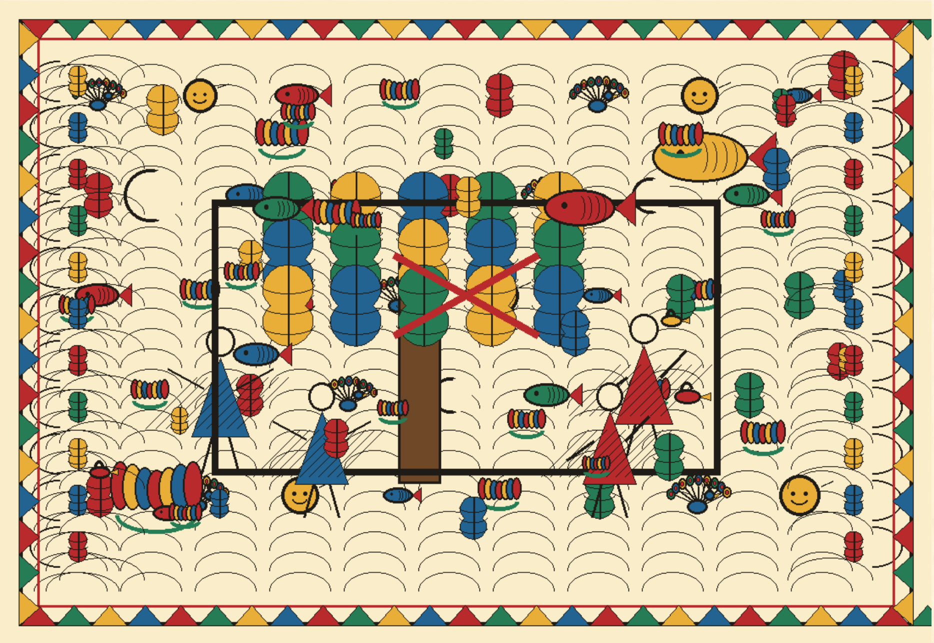

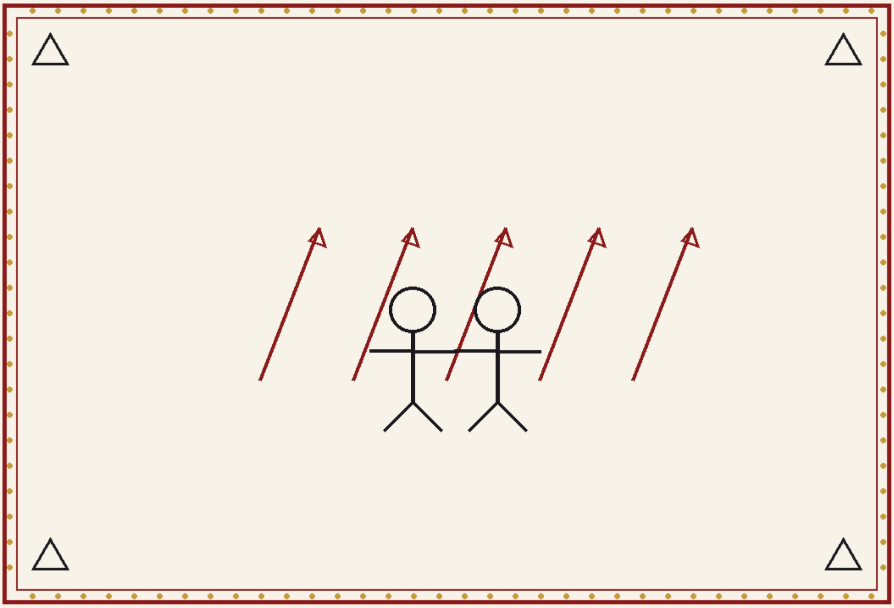

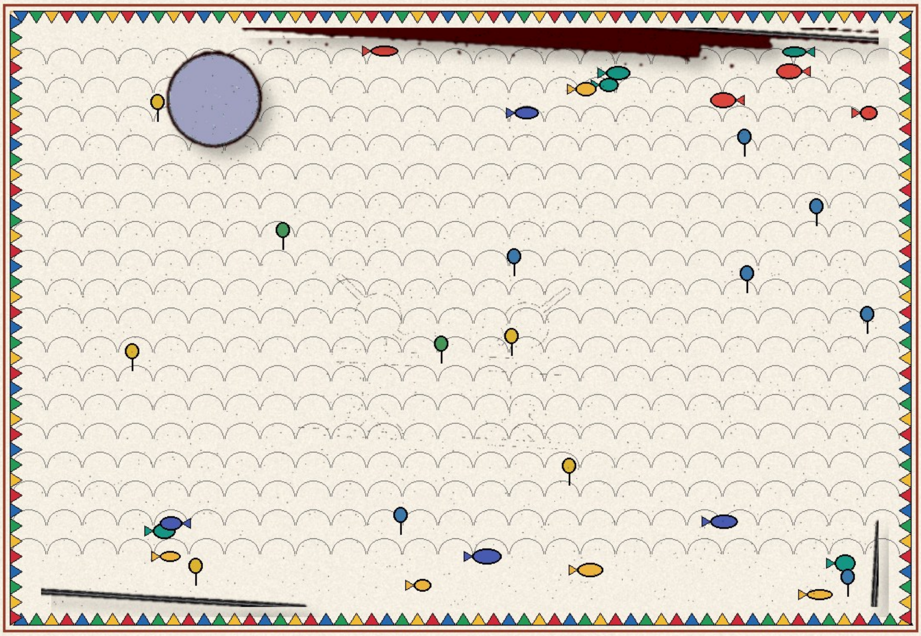

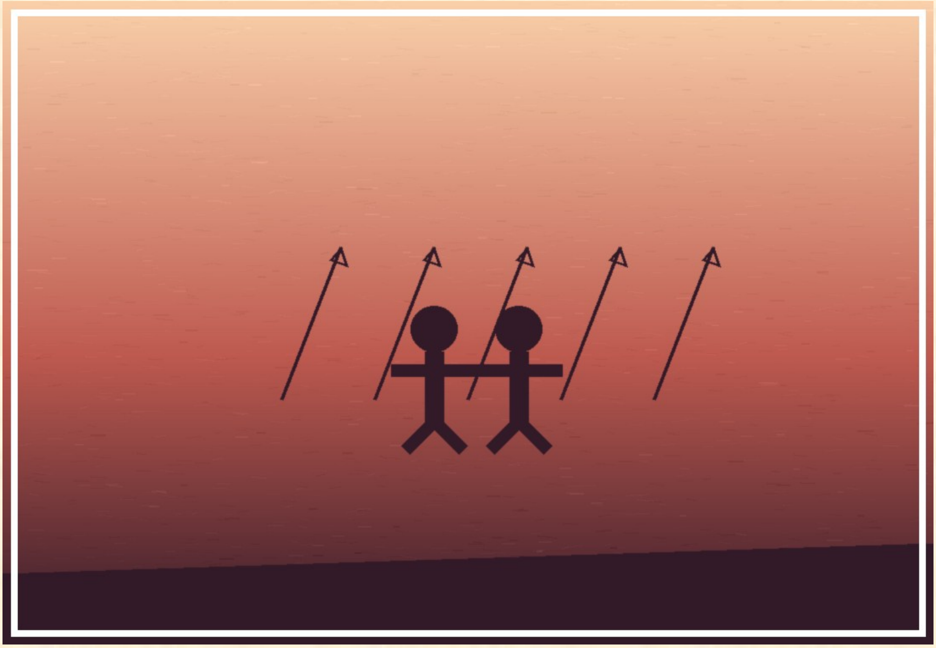

चित्र 27

मुदा देह छूटल, धर्म नहि। दीना-भदरीक आत्मा आब ओ काज करए बिदा भेल जे जीबैत काल अपूर्ण रहि गेल छल — दुष्टक नाश, आ अपन समाज मुसहरक उत्थान।

बिदा भेलाह मोरंग। ओतय जोरावर सिंहक आतंक छल — मारलनि जोरावर सिंहकेँ, आ मुसहरक माथ ऊँच केलनि। जे जाति बरखोसँ खाली झुकब जनैत छल, से पहिल बेर सोझ ठाढ़ भेल।

फेर ताहिरकेँ मारलनि। फेर सुनरियाकेँ मारलनि। जतय-जतय बोनिहारपर अत्याचार, ओतय-ओतय दुनू भाइक अदृश्य कोदारि। आ अन्तमे — धारक कातमे — ओकरा मारलनि जे एहि सभटा दुखक जड़ि छलि: डैनियाही बुधनीकेँ।

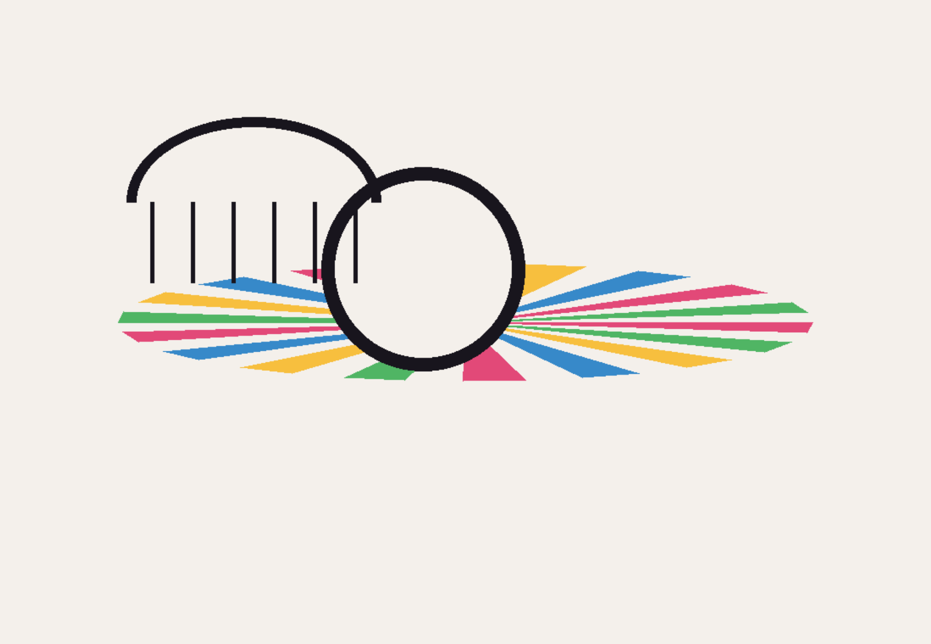

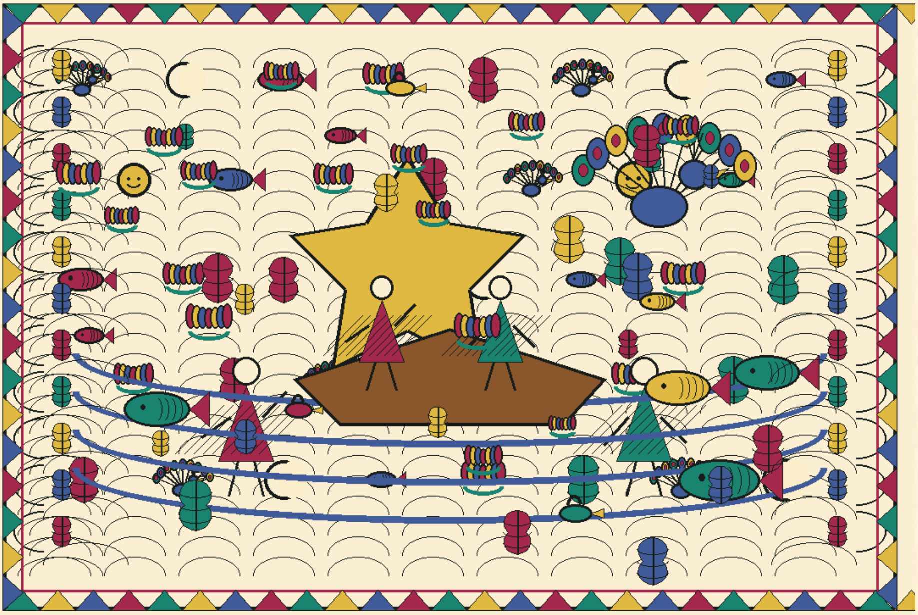

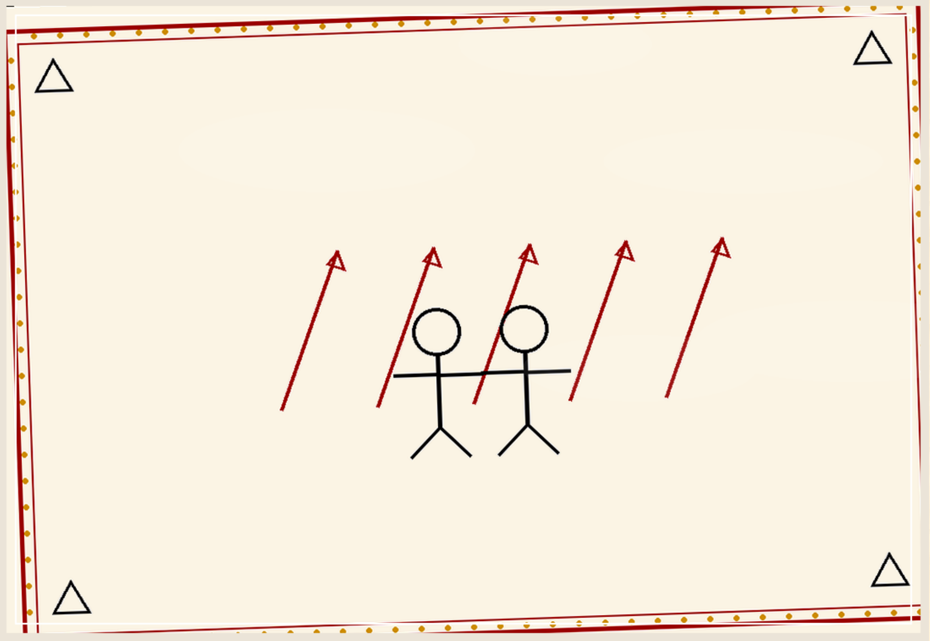

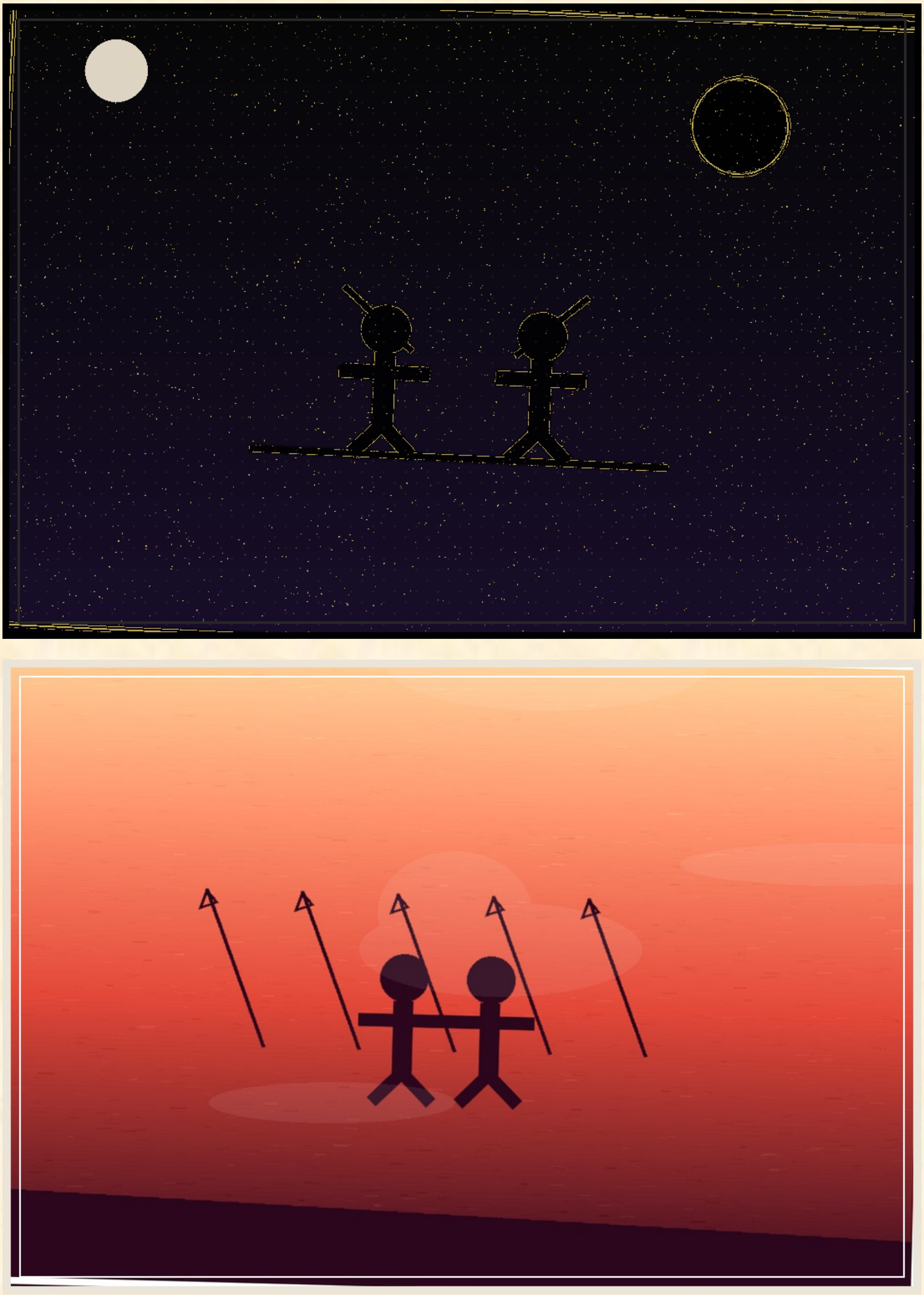

चित्र 28

जाहि बुधनीक वरसँ ई गाथा दुखान्त बनल छल, से अपने अन्त धारक कातमे पओलक। बदला जे घर घुरि गेल छल, से न्याय बनि कऽ घुरि आएल छल। गनती कएनिहार कहैत अछि — डेढ़ सए दुष्टक नाश केलनि दीना-भदरी। डेढ़ सए — माने डेढ़ सए गामक बोनिहारक साँस खुजल।

आ ई सभ भेल बिनु राजगद्दीक, बिनु सेनाक, बिनु मुकुटक। दू मुसहर भाइ — जिनका जीबैत जमीन्दार बड़द बुझलक — मरला उत्तर पूरा अंचलक रखबार बनि गेलाह।

अध्याय १५ : सलहेसक वचन

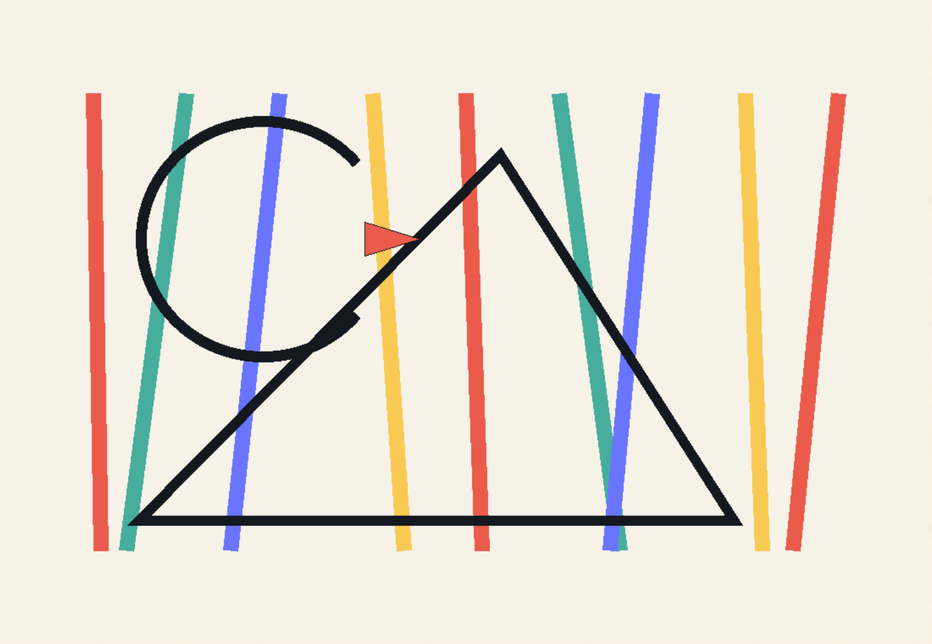

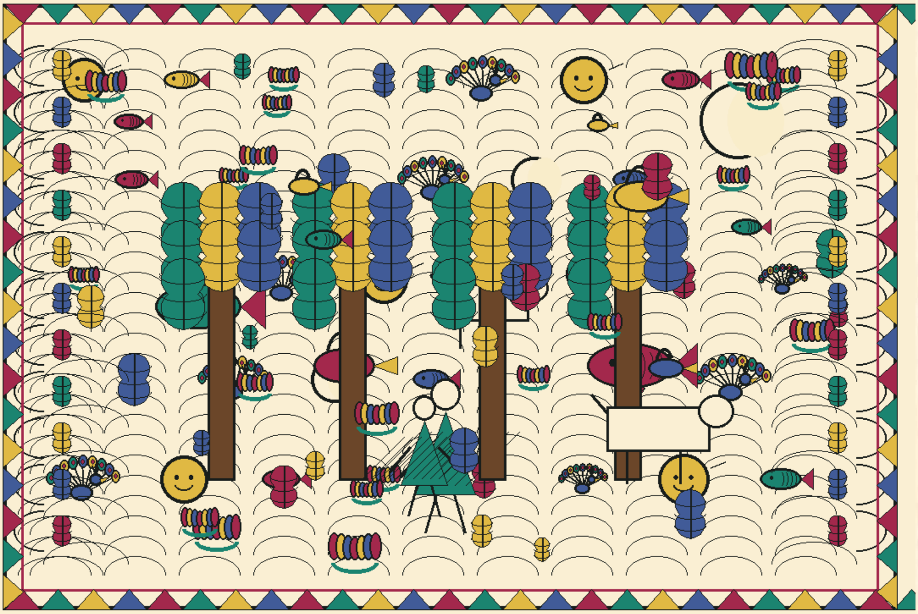

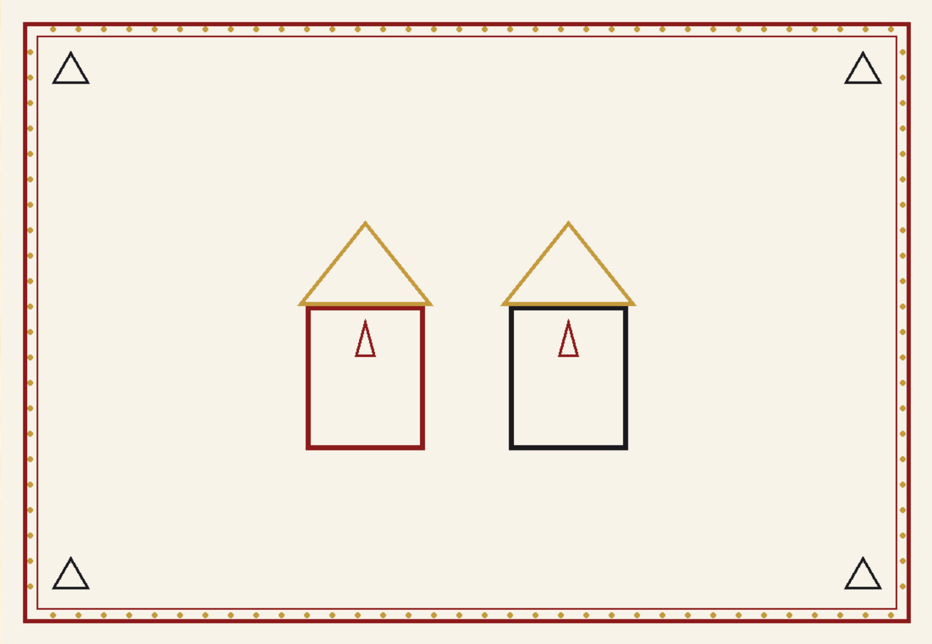

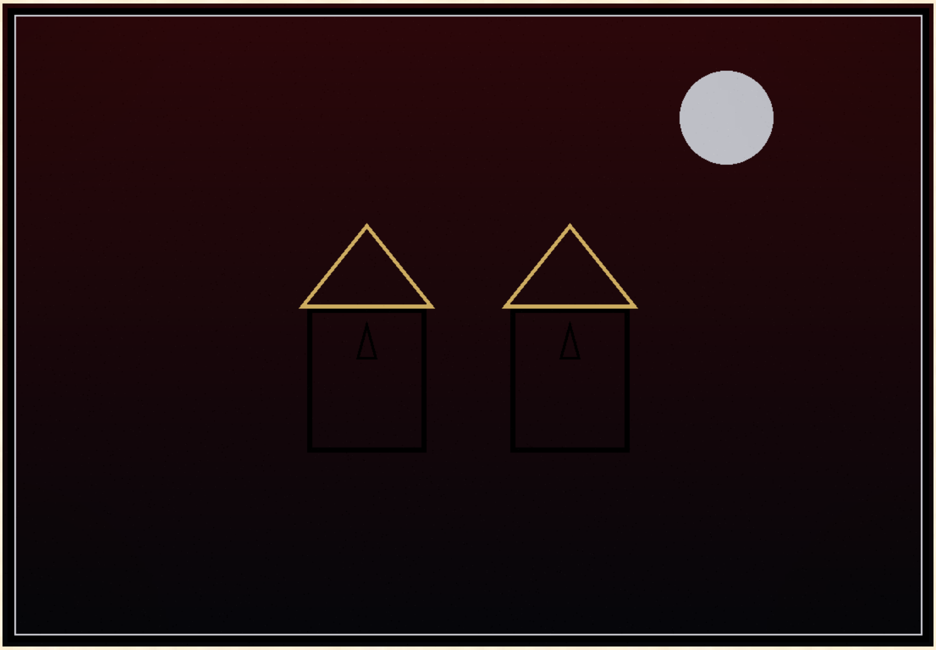

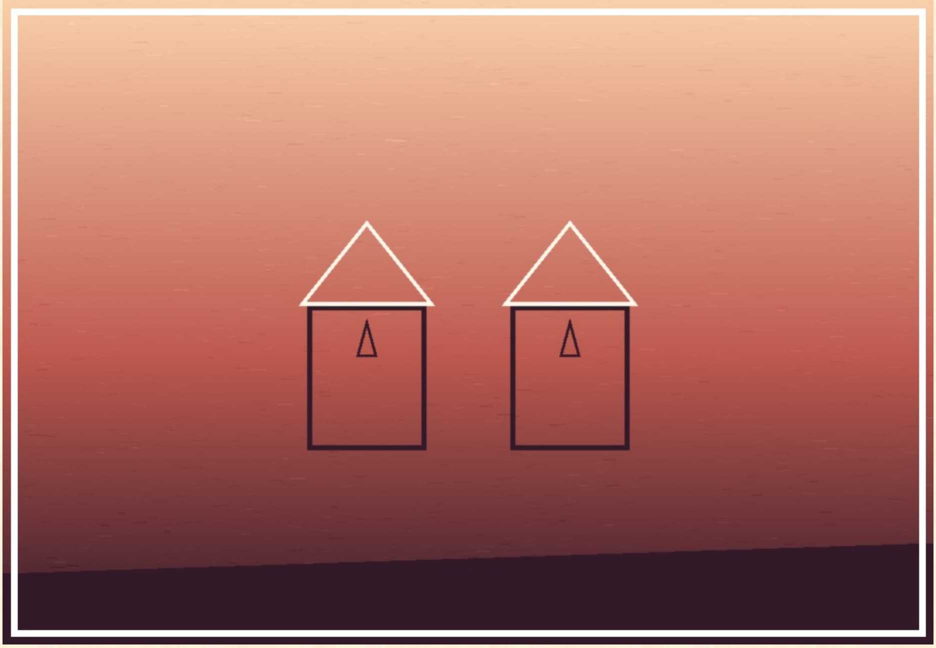

चित्र 29

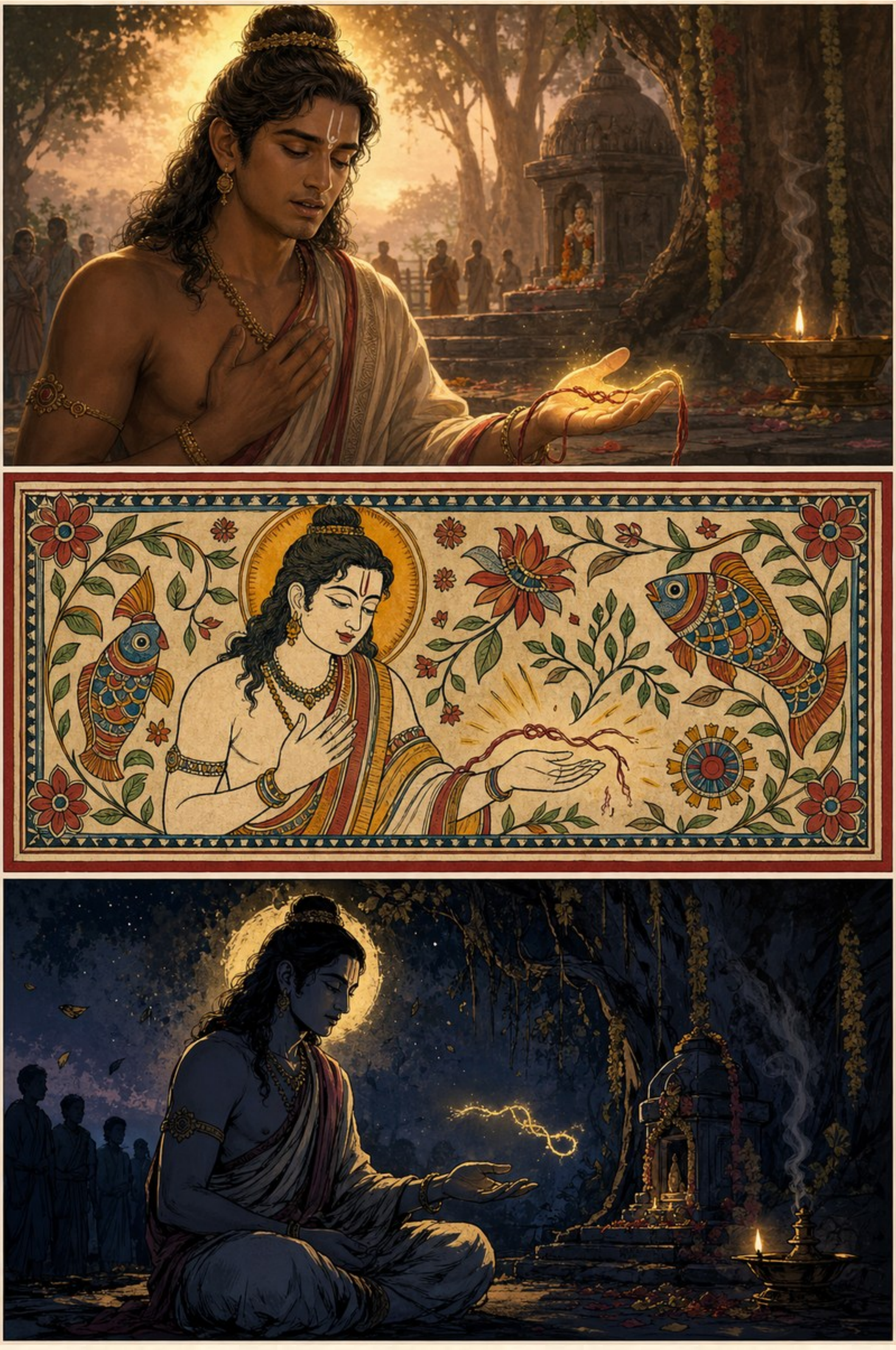

आ तखन बजलाह सलहेस — ओ देवता, जे अपने वचनक सिक्कड़मे बान्हल अपन प्रिय वीरकेँ नहि बचा सकल छलाह। हुनक करेजक ओ भार आब वचनेसँ उतरत — मुदा एहि बेर वचन वरदान बनत, अभिशाप नहि।

सलहेस बजलाह: 'जतए-जतए हमर पूजा हएत, ततए-ततए अहाँक पूजा सेहो हएत।'

ई खाली वचन नहि छल — ई क्षमा-याचना छल, देवताक कानब छल, आ अमरत्वक अभिषेक छल। जे प्राण हुनक विवशतासँ गेल, ओकरा ओ अपन पूजाक अर्द्धांश दऽ कऽ अमर कऽ देलनि।

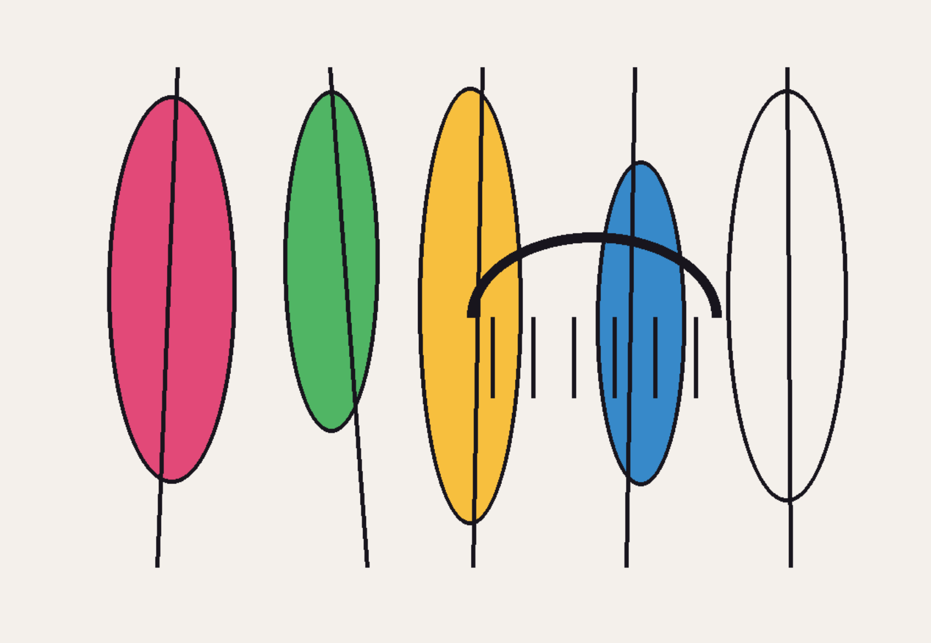

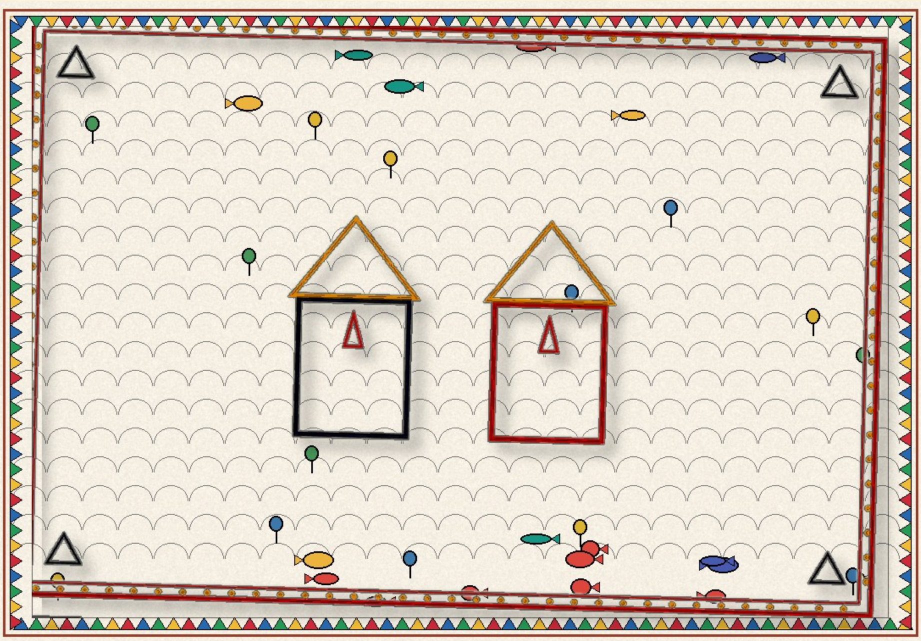

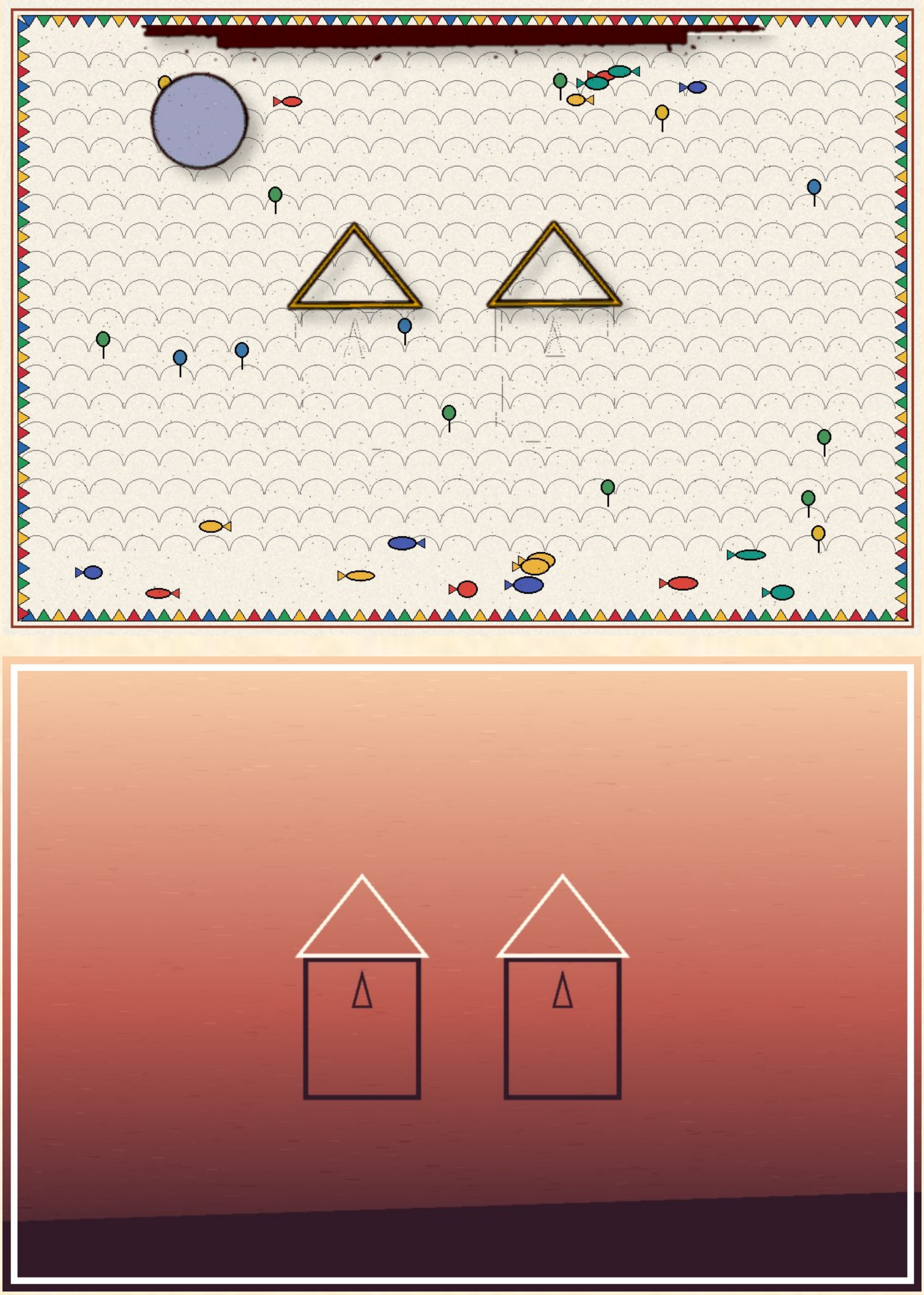

चित्र 30

आ से भेल। तहियासँ सलहेस आ दीना-भदरीक गहमर थान संगे रहए लागल। आइयो मिथिलांचलमे जतय सलहेसक फूल चढ़ैत अछि, ओतय दीना-भदरीक नाम सेहो बाजल जाइत अछि। देवता आ बोनिहार — एक्कहि आंगनमे, एक्कहि धूप-दीपमे।

पूजा केहन विचित्र न्याय थिक! जमीन्दार कनक सिंहक नाम आइ ककरो मोन नहि; बुधनीक नाम खाली गारि रूपेँ बाँचल; आ जे दू भाइ मारल गेलाह, से घर-घरक गोसाउनि-घर धरि पहुँचि गेलाह। समय सभसँ पैघ अदालत थिक — ओ फैसला देर सँ सुनबैत अछि, मुदा सुनबैत जरूर अछि।

अध्याय १६ : मुक्ति

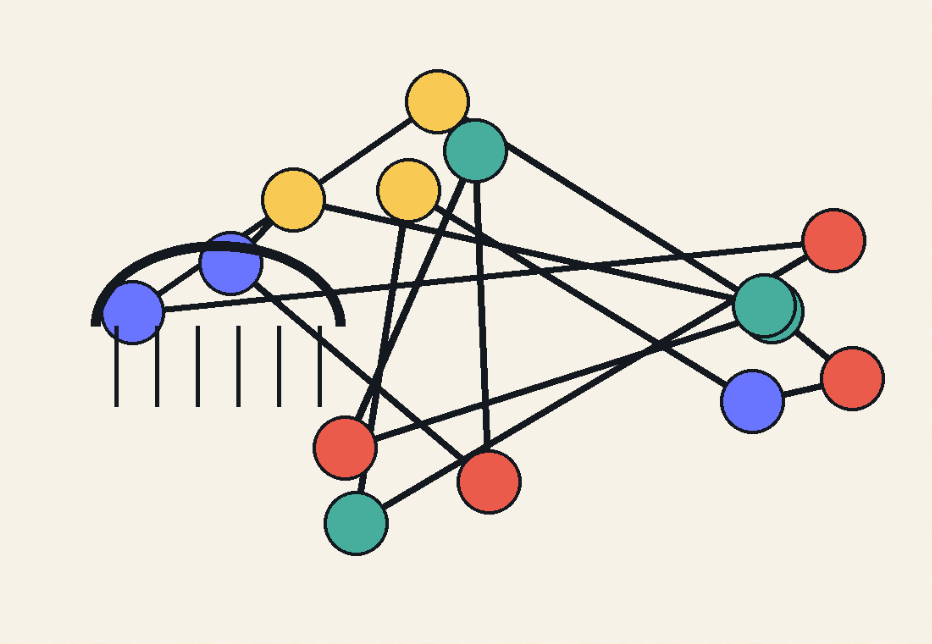

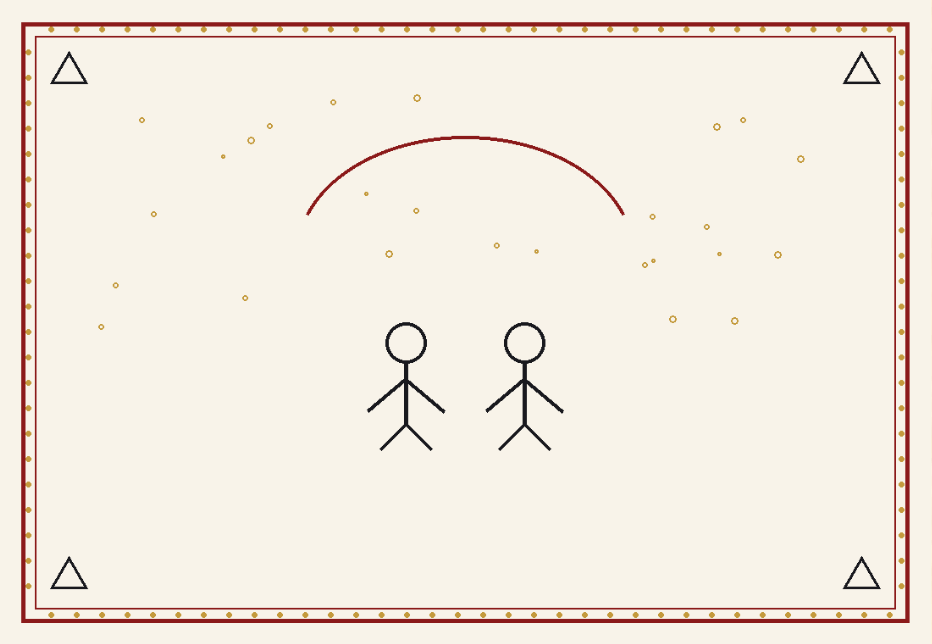

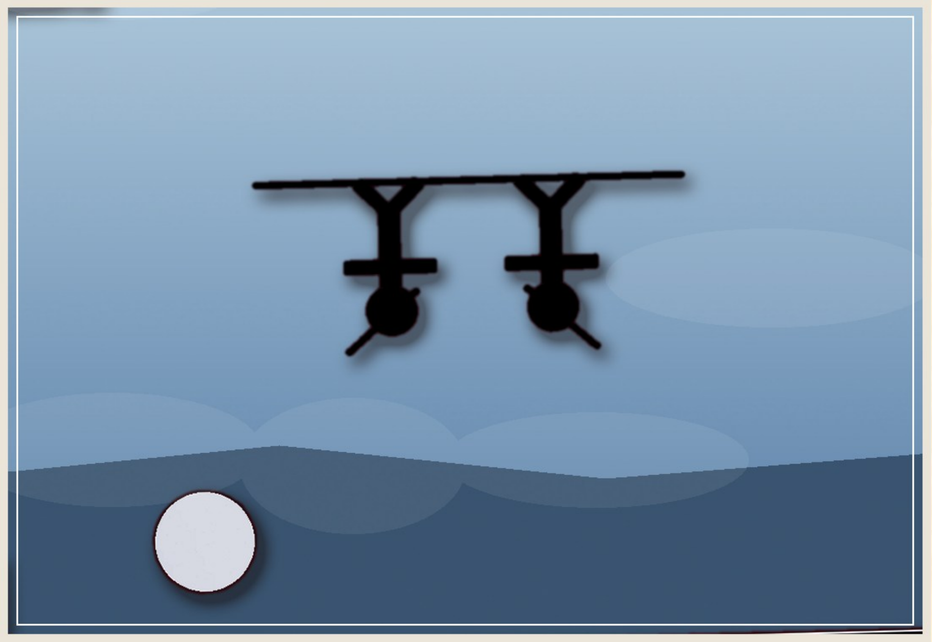

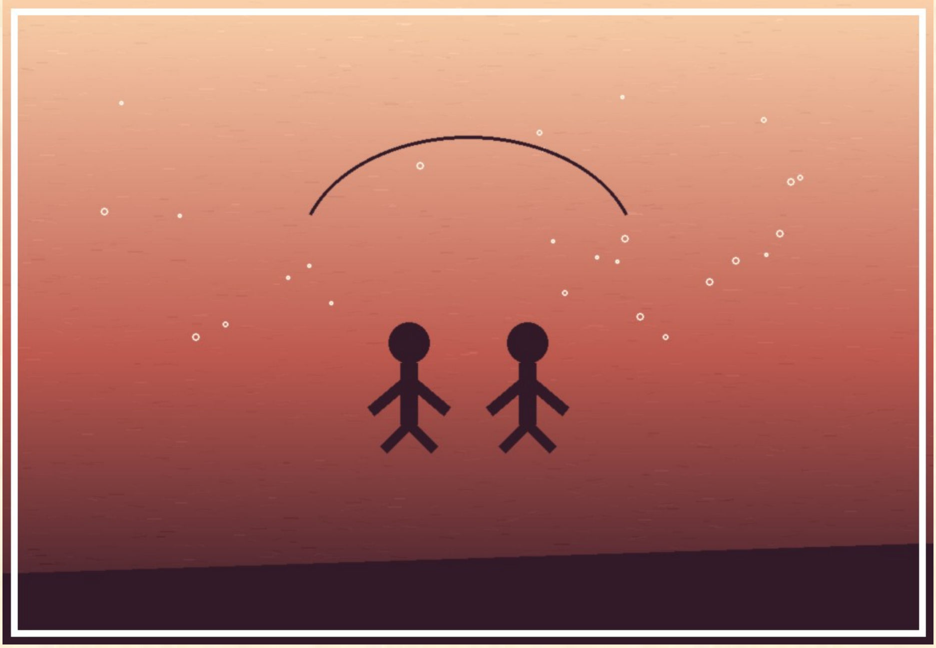

चित्र 31

आ अन्तमे — जखन धरतीपरक सभटा काज सम्पन्न भेल, सभ दुष्टक हिसाब चुकता भेल, आ सभ थानमे नाम अमर भेल — तखन दीना-भदरीकेँ मुक्ति भेटि गेलनि।

मुक्ति — माने आब ने कोनो बगराक डर, ने कोनो वरक सिक्कड़ि, ने कोनो पलड़ापर बैसबाक बेगरता। परलोकमे सलहेस आ दीना-भदरी संगे रहए लगलाह — देवता आ हुनक वीर, जिनका बीचमे आब कोनो वचनक देवाल नहि छल।

मुदा जोगियानगरक माटि आइयो दुनू भाइकेँ मोन रखने अछि। कहैत छथि आइयो जँ कोनो बोनिहार पाँच मोनक भार उठा लिअए, त' बूढ़-पुरान कहैत छथि — 'दीना-भदरीक अंश छै एहिमे।'

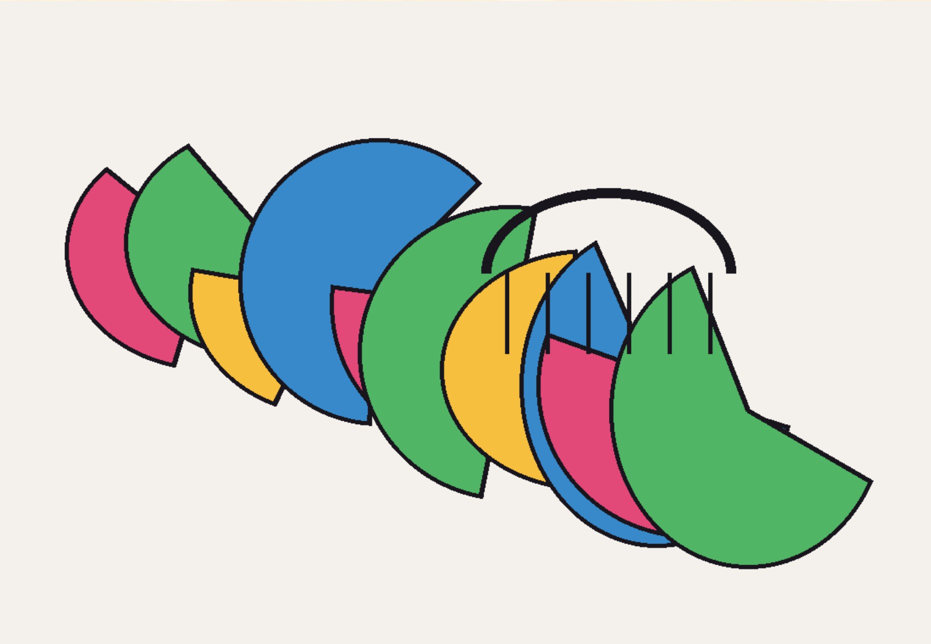

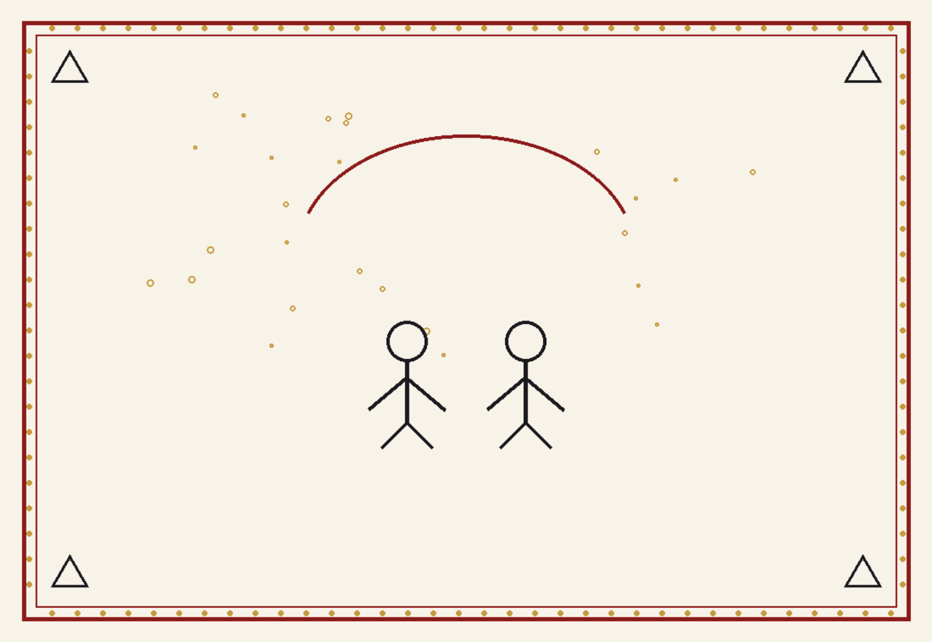

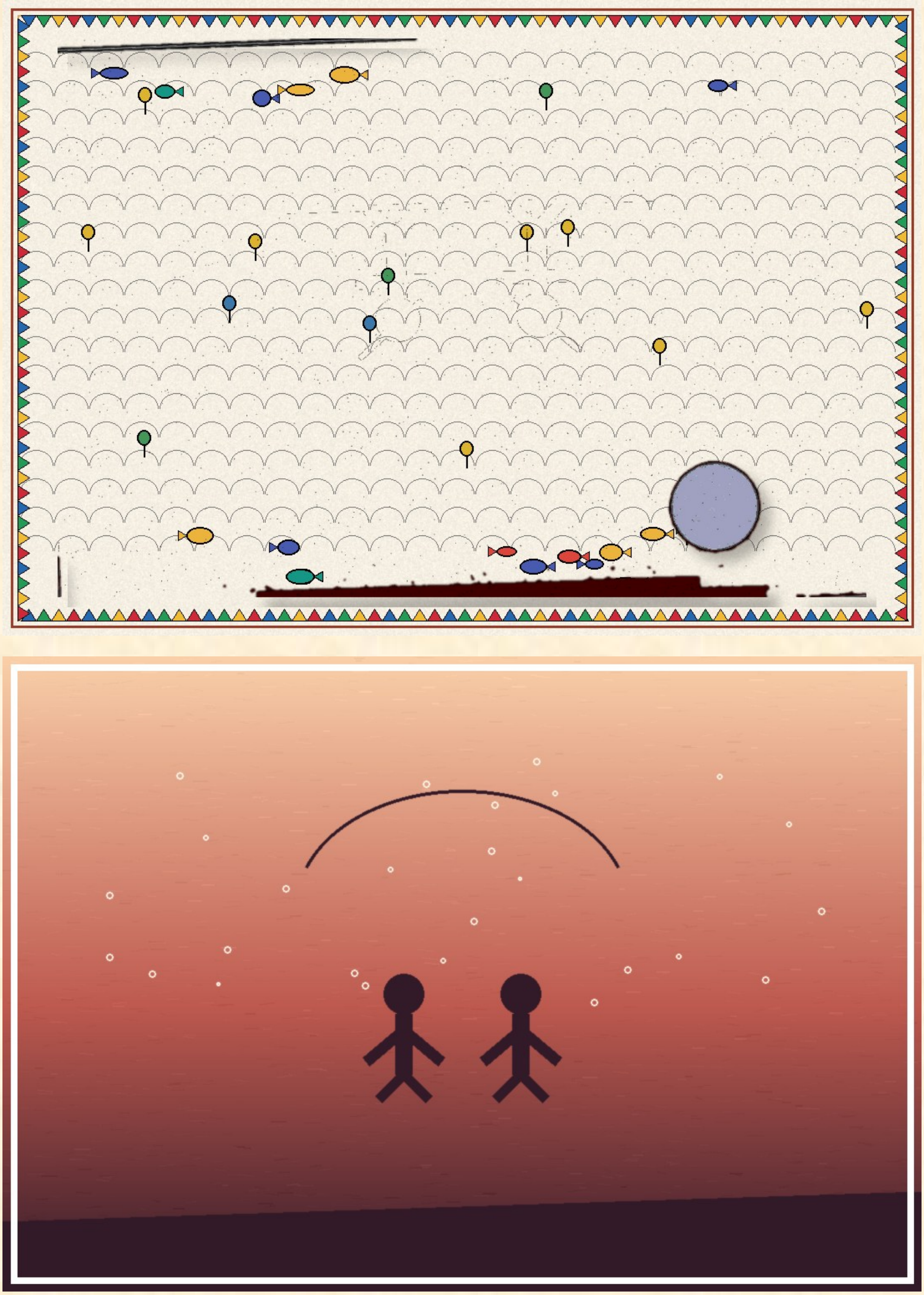

चित्र 32

आ कटैया बोन? ओ आइयो अमावस्याक राति चुप भऽ जाइत अछि। ओ चुप्पी डरक नहि — श्रद्धाक थिक। बोन जनैत अछि जे ओकर माटिपर के सुतल छल।

ई गाथा दुखान्त थिक — दू निर्दोष भाइ छलसँ मारल गेलाह, एकटा माएक कोरा उजड़ल, एकटा कनियाँक सेनुर पोछाएल। मुदा एहि दुखक भीतरसँ जे बहराएल, से मृत्युसँ पैघ छल: श्राद्धक पलड़ापर बैसल पुत्र-धर्म, सात तह कपड़ा फाड़ि बहराएल माए-दूध, डेढ़ सए अत्याचारीक अन्त, आ देवताक संग बँटाएल पूजा। दीना-भदरी मरलाह — आ तैँ, अमर भेलाह।

समाप्त

VIDEHA: विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका: **ISSN 2229-547X:** www.videha.co.in